

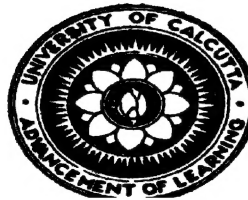
KĀVYĀDARŚA

SANSKRIT AND TIBETAN TEXTS

EDITED BY

ANUKUL CHANDRA BANERJEE, M.A

CALCUTTA UNIVERSITY



PUBLISHED BY THE
UNIVERSITY OF CALCUTTA

1939

Printed by
J. C. Sarkhel at the
CALCUTTA ORIENTAL PRESS Ltd.
9, Panchanan Ghosh Lane
CALCUTTA.

HUMBLY DEDICATED
TO
DR. SYAMAPRASAD MOOKERJEE,
M.A., B.L., D.LITT., M.L.A., BARRISTER-AT-LAW,
PRESIDENT,
COUNCIL OF POST-GRADUATE TEACHING IN ARTS,
IN TOKEN OF
ESTEEM AND GRATITUDE
OF THE EDITOR FOR THE KEEN PERSONAL
INTEREST ALWAYS EVINCED BY
HIM IN HIS TIBETAN STUDIES
AND RESEARCHES.

CONTENTS

Preface	...	xvii
---------	-----	------

CHAPTER I

	Sloka
मङ्गलाचरण (वग्ना-पैस-वह्ने-व)	1
वाक्प्रशंसा (क्वे-व-व-व-व)	3
काव्यप्रशंसा (क्व-व-व-व-व)	5
दुष्टकाव्यनिन्दा (क्वे-क्व-व-व-व)	6
काव्यलक्षण (क्व-व-व-व-व)	10
काव्यभेद (क्व-व-व-व-व)	11
महाकाव्यलक्षण (क्व-व-व-व-व)	14
गद्यकाव्यभेद (क्व-व-व-व-व)	23
मिश्रकाव्यभेद (क्व-व-व-व-व)	31
श्लेषगुण (क्व-व-व-व-व)	41
श्लेषगुणलक्षण (क्व-व-व-व-व)	43
प्रसादगुणलक्षण (क्व-व-व-व-व)	45
समतागुणलक्षण (क्व-व-व-व-व)	47

	Sloka
माधुर्यगुणलक्षण (स्त्रुव'व'श्रिद'यैव'न'व'श्रि' स'क'व'स)	51
अनुप्रास (ह्रैस'सु'मिद)	55
यमक (ह्रुद'न'द'व'व')	61
सौकुमार्यगुणलक्षण (श्रि'न'ग'व'श्रि'व'श्रि'यैव'न'व'श्रि' स'क'व'स)	69
अर्थव्यक्तिगुणलक्षण (नैव'ग'स'व'यैव'न'व'श्रि' स'क'व'स)	72
उदारत्वगुणलक्षण (श्रु'क'श्रि'यैव'न'व'श्रि' स'क'व'स)	76
ओजोगुणलक्षण (व'ह्रि'व'यैव'न'व'श्रि' स'क'व'स)	80
कान्तिगुणलक्षण (स'ह्रै'व'यैव'न'व'श्रि' स'क'व'स)	85
समाधिगुणलक्षण (नै'द'द'व'ह्रै'यैव'न'व'श्रि' स'क'व'स)	93
काव्यकारण (स्त्रु'द'व'श्रि' श्रु)	103

CHAPTER II

अलङ्कारलक्षण (श्रु'श्रि' स'क'व'स)	1
स्वभावोक्ति (न'द'व'व'श्रि'व'ह्रै'व')	8
उपमालक्षण (न'व'द' स'क'व'स)	14
धर्मोपमा (ह्रै'श्रि' न'व')	15
वस्तूपमा (न'ह्रै'व'द' न'व')	16
विपर्यासोपमा (व'ह्रै'व'द' न'व')	17

CONTENTS

vii

Sloka
10

अन्योन्योपमा (यङ्कुङ्गदये)	
नियमोपमा (देस'व'ङ्गि'दये)	19
अनियमोपमा (देस'खेद'दये)	20
समुच्चयोपमा (वसुन्धरा'वर्मा'दये)	21
अतिशयोपमा (भ्रु'व'दये)	22
उत्प्रेक्षितोपमा (र'व'वन्द्य'दये)	23
अद्भुतोपमा (ख'द'दये)	24
मोहोपमा (ख'द'व'दये)	25
संशयोपमा (घे'ख'दये)	26
निर्णयोपमा (देस'व'दये)	27
श्लेषोपमा (सु'व'दये)	28
समानोपमा (ख'द'दये)	29
निन्दोपमा (ख'द'व'दये)	30
प्रशंखोपमा (वसुन्धरा'वर्मा'दये)	31
आखिल्याखोपमा (व'द'दये)	32
खिरोधोपमा (द'व'व'दये)	33
प्रतिषेधोपमा (द'व'व'दये)	34

	Śloka
चटूपमा (षट्संघर्षे)	... 35
तत्त्वाख्यानोपमा (दैर्घ्यवर्द्धे)	... 36
असाधारणोपमा (घृष्टं क्लेशं)	... 37
अभूतोपमा (घृष्टं क्लेशं)	... 58
असम्भावितोपमा (श्लेषं क्लेशं)	... 39
बहूपमा (षट्संघर्षे)	... 40
विक्रियोपमा (क्लेशं)	... 41
मालोपमा (श्लेषं)	... 42
वाक्यार्थोपमा (षट्संघर्षे)	... 43
प्रतिबस्तूपमा (श्लेषं)	... 46
तुल्ययोगोपमा (षट्संघर्षं)	... 48
हेतूपमा (क्लेशं)	... 50
उपमादोषविचार (षट्संघर्षं)	... 51
उपमादोषकशब्द (षट्संघर्षं)	... 57
रूपकलक्षण (षट्संघर्षं)	... 65
समस्तरूपक (षट्संघर्षं)	... 65
व्यस्तरूपक (षट्संघर्षं)	... 66

ix

	Sloka
समस्तव्यस्यरूपक (गज्जगस'उर'वसुस'दर'स'वसुस'प) ...	67
सकलरूपक (सप्रर'दग'गज्जगस'उर) ...	69
अवयवरूपक (उ'गस'गज्जगस'उर) ...	71
अवयविरूपक (उ'गस'उर'ग्री' गज्जगस'उर) ...	72
एकाङ्गरूपक (यर'यग'गउग'गज्जगस'उर) ...	74
युक्तरूपक (रग्रीगस'पस रर'परी' गज्जगस'उर) ...	76
अयुक्तरूपक (रिस'खर'रिस'परी' गज्जगस'उर) ...	77
विषमरूपक (ख'खर'प'रिस'परी' गज्जगस'उर) ...	78
सविशेषणरूपक (रुर'पर'दर' वउस'गज्जगस'उर) ...	80
विरुद्धरूपक (रगय'प'रिस'रुर' गज्जगस'उर) ...	82
हेतुरूपक (ग्री' गज्जगस'उर) ...	84
स्मिष्टरूपक (रुर'परी' गज्जगस'उर) ...	86
उपमाव्यतिरेकरूपक (दर'दर'रुर'प'उर'रिस'परी' गज्जगस'उर) ...	87
आक्षेपरूपक (रुर'परी' गज्जगस'उर) ...	90
समाधानरूपक (खर'रुर'रुर'ग'गज्जगस'उर) ...	91
रूपकरूपक (गज्जगस'उर'ग्री' गज्जगस'उर) ...	92
तत्त्वापह्नवरूपक (र'रुर'प'रुर'रुर'गज्जगस'उर) ...	93

दीपक (गणन्यसुदे)	...	96
मालादीपक (श्वेतवर्णं गणन्यसुदे)	...	106
विरुद्धार्थदीपक (रत्नवर्णं रत्नं गणन्यसुदे)	...	108
एकार्थदीपक (रत्नवर्णं गणन्यसुदे)	...	110
विग्रहार्थदीपक (श्वेतवर्णं रत्नं गणन्यसुदे)	...	112
आवृत्तिभेद (वज्रवर्णं रत्नं)	...	115
आक्षेपभेद (रत्नवर्णं रत्नं)	...	119
धर्माक्षेप (रत्नवर्णं रत्नं)	...	127
धर्म्याक्षेप (रत्नवर्णं रत्नं)	...	128
कारणाक्षेप (रत्नवर्णं रत्नं)	...	130
कार्याक्षेप (रत्नवर्णं रत्नं)	...	133
अनुज्ञाक्षेप (रत्नवर्णं रत्नं)	...	134
प्रभुत्वाक्षेप (रत्नवर्णं रत्नं)	...	136
अनादराक्षेप (रत्नवर्णं रत्नं)	...	138
आशीर्वाचनाक्षेप (रत्नवर्णं रत्नं)	...	140
पक्षाक्षेप (रत्नवर्णं रत्नं)	...	142
सावित्र्याक्षेप (रत्नवर्णं रत्नं)	...	144

	Śloka
यत्नाक्षेप (འབད་པས་ འགོག་པ)	... 146
परवशाक्षेप (གཞན་དབང་ འགོག་པ)	... 148
उपायाक्षेप (ཐབས་ཀྱིས་ འགོག་པ)	... 150
रोषाक्षेप (ཁྲོ་བས་ འགོག་པ)	... 152
अनुकोशाक्षेप (སྤྱིང་ཇེས་ འགོག་པ)	... 154
अनुशयाक्षेप (འགྱུད་པས་ འགོག་པ)	... 156
संशयाक्षेप (ཐེ་ཆོས་ འགོག་པ)	... 158
श्लिष्टाक्षेप (སྦྲར་བས་ འགོག་པ)	... 160
अर्थान्तराक्षेप (རོན་གཞན་ འགོག་པ)	... 162
हेत्वाक्षेप (ཀུས་ འགོག་པ)	... 164
अर्थान्तरन्यास (རོན་གཞན་བཀོད་པ)	... 166
अर्थान्तरन्यासभेद (རོན་གཞན་བཀོད་པའི་ དབྱེ་བ)	... 167
व्यतिरेक (ཁྲོག་པ་ཅན)	... 177
एकव्यतिरेक (གཅིག་གི་ ཁྲོག་པ་ཅན)	... 178
उभयव्यतिरेक (གཉི་གའི་ ཁྲོག་པ་ཅན)	... 180
सश्लेषव्यतिरेक (སྦྲར་བ་ཅན་གྱི་ ཁྲོག་པ་ཅན)	... 182
साक्षेपसहेतुव्यतिरेक (འགོག་པ་ཅན་དང་གཏན་ཆོག་ས་ ཀྱི་ ཁྲོག་པ་ཅན)	... 183

प्रतीयमानसादृश्यव्यतिरेक (ह्येवमस्य वरुणस्य वरुणस्य)	...	186
सादृश्यव्यतिरेकभेद (वरुणस्य वरुणस्य वरुणस्य)	...	189
विभावना (वरुणस्य वरुणस्य)	...	196
समासोक्ति (वरुणस्य वरुणस्य)	...	202
समासोक्तिभेद (वरुणस्य वरुणस्य)	...	205
अपूर्वसमासोक्ति (वरुणस्य वरुणस्य)	...	210
अतिशयोक्ति (वरुणस्य वरुणस्य)	...	211
अतिशयोक्तिप्रशंसा (वरुणस्य वरुणस्य)	...	217
उत्प्रेक्षा (वरुणस्य वरुणस्य)	...	218
उत्प्रेक्षाव्यञ्जकशब्द (वरुणस्य वरुणस्य)	...	231
हेतुभेद (वरुणस्य वरुणस्य)	...	232
सूक्ष्म (वरुणस्य)	...	257
लेश (वरुणस्य)	...	262
क्रम (वरुणस्य)	...	270
प्रेयरसवदूर्जस्विलक्षण (वरुणस्य वरुणस्य)	...	272
पर्यायोक्त (वरुणस्य वरुणस्य)	..	292

Śloka

समाहित (गुरुन्तु-धन-व)	295
उदात्त (शु-के)	297
अपहृति (वल्लभ-दे-र)	301
श्लेष (सु-व)	306
श्लेषभेद (सु-व-दे-र-व)	311
विशेषोक्ति (सु-व-व-व-व-व)	320
तुल्ययोगिता (म-व-व-व-व-व)	327
विरोध (न-व-व)	330
अप्रस्तुतप्रशंसा (न-व-व-व-व-व)	337
व्याजस्तुति (न-व-व-व-व-व)	340
निदर्शन (न-व-व-व-व-व)	345
सहोक्ति (न-व-व-व-व-व)	348
परिवृत्ति (न-व-व-व-व-व)	348
आशिक्ष (न-व-व-व-व-व)	354
संस्तुति (न-व-व-व-व-व)	356
संस्तुतिभेद (न-व-व-व-व-व)	357

CONTENTS

XV

	Sloka
• प्रकल्पिता (རབ་བདགས་ཉིད)	101
नामान्तरिता (མིང་དྲ་འདུས་པ་ཉིད)	102
निवृता (བསྐྱིབས་པ)	102
समानशब्द (མཐུན་པ་སྒྲ)	103
संमूढ (མྲོངས་པ)	103
परिहारिका (ཡོངས་སྤྱ་འཕྲོག)	104
एकच्छन्ना (གཅིག་བསྐྱིབས་པ)	104
उभयच्छन्ना (གཉི་ག་བསྐྱིབས་པ)	105
संकीर्णा (ཡོངས་སྤྱ་འདྲིས་པ)	105
दोषविभाग (སྒྲིན་གྱི་ ཡོངས་སྤྱ་དབྱེ་བ)	125
अपार्थ (རོན་ཉམས)	128
व्यर्थ (རོན་འགལ)	131
एकार्थ (རོན་གཅིག་པ)	135
ससंशय (ཐེ་ཚོས་ཅན)	139
अपक्रम (རིས་པ་ཉམས་པ)	144
शब्दहीन (སྒྲ་ཉམས་པ)	148
यतिभ्रष्ट (གཏོད་མཚམས་ཉམས་པ)	152

PREFACE

It is not without a feeling of joy that I am offering in the following pages a new edition of the *Kāvyaḍarśa* of Daṇḍin. It is on the basis of a Tibetan manuscript, a portion of which was copied out by the late Rai Sarat Chandra Das Bahadur, C.I.E. I rejoiced not only to get hold of but to utilize Das's manuscript preserved in the University Tibetan Seminar. The *Kāvyaḍarśa* was translated into Tibetan by Śrīlakṣmīkara and Son. ston. Lo. tsā. ba and others in the great Sa-skya monastery of Western Tibet. It is collected in Tanjur, Mdo, Vol. Se of the Sde.dge. edition; Cordier, III, p. 465. This xylograph contains both the transliteration of the Sanskrit text in the Tibetan script as well as its Tibetan translation. The Sanskrit text presented in this volume is taken from this xylograph. It is compared with the Tibetan version. There is also an independent Tibetan commentary on the text by Mi. pham. dge. legs. rnam. rgyal. As it came into my hands when the printing of the present text neared its completion, it could not be utilized by me.

Of the different editions of the Sanskrit text of the *Kāvyaḍarśa* I have mainly used that of the Bibliotheca Indica, 1863.

The manuscript from which the xylograph was made appears to have been written by more than one hand; so there is a lack of uniformity in the xylograph. In order to give an idea of the method of transcribing the Sanskrit text adopted by the scribe I have followed him excepting some cases noted below.

In Buddhist Sanskrit texts at the end of a sentence *m* is generally changed to *anusvāra*. This is, however, not always found in the present work. The consonants after *r* are sometimes found doubled; e.g., I. 95 उद्गीरण् ; 103 मार्गः, II. 9 वरण्, 10 धूरिण्तेक्षणः ; etc. Though such 'doubling of consonants is sanctioned by the rules of grammar, I have dispensed with it in this edition. Besides, there are several inaccuracies that have been corrected by me; e.g.

Chap. I. 30^a मी for मीस् ; 42^e एषां विपर्ययः for एषाम्बिपर्ययः ; 83^b बध्नन्त्योजस्विनीगिरः ; for बध्नन्त्योजस्विनीगिरः 90^a °पातधौत for °पातःधोत.

Chap. II. 5^a उत्प्रेक्षा for उत्प्रेक्षो ; 6^a व्याज for व्यज ; 11^b बध्नन्नेषु for बध्नन्नेषु ; 14^d प्रपञ्चोयं for प्रपञ्चायं ; 20ⁱ पद्मन्तावत् for षट्मन्तावत् ; 24^{a-b} पद्मं सुभ्रु for पद्मसुभ्रु ; 27^d निर्णयोपमा for निर्ल्लयोपमा ; 28^b सञ्ज for सञ्जस् ; 38^a प्रभासारः for प्रभासारं ; 47^a परिजातस्य for परिजातः ; 49^a रत्नायै for रात्नायै ; 49ⁱ सावलेपा for सावलेया ; 54^a सौभाग्यं for सौभग्यं ; 58^a संवादि for सम्बादि ; 81^a सुदंस् for सुदंस् ; 87^a रूपकद्वितयं for रूपकाद्वितयं ; 100ⁱ दैवतर्धयः for देवतर्धयः ; 120ⁱ पुष्पेः for पौष्पेः ; 152^e अयतापि for अयांतापि ; 156^d सकलं वयः for सकलम्बयः ; 158^b किंवा for किम्बा ; 155^e °संवादि for °सम्बादि ; 165^e दिशान्येपि for दिशन्येपि ; 188^a ईदृशास् for ईदृशास् ; 234^e उद्दिष्टं for दृष्टं ; 274^b वृत्तिः for वृत्तिः ; 281^a स्'त् for स्'त्स् ; 302^d मृगास् for मृगास् ; 329^a मृगाक्षीणां for मृगाक्षीनान्.

Chap. III. 8ⁱ किन्विदं for कीविदं ; 23ⁱ दशां for देशां ; 118ⁱ कलभाषिणि for कलभाषिणी ; 134^b मी for मीस् ; 174^{a-b} संस्कृताभङ्गः [सत्यमेवोदितोऽपि चेत्] for संस्कारभङ्गं सत्येन च क्षितादिवै ; 176^{a-b} गतिर्न्यायविरोधस्य सेवा सर्वज्ञ

दृश्यते for न्यायावपि च विरोधमादर्शिता यमल्यर्थ— which can in no way be supported. The Tibetan text supports the reading in the printed text, 176°.^d अथागमविरोधस्य प्रवेश उपदिश्यते for अथागमविरुद्धं ते प्रवेशावपि दर्शिताः— which does not give any suitable sense, nor is correct grammatically.

Sanskrit readings found in the Tibetan xylograph differ in many places from those known to us in the printed edition referred to; e.g.

Chap. I. 1° दोषं for नित्यं ; 2^b उपलक्ष्य for उपलभ्य ; 10^b अलंकारः for अलंकाराः ; 12° विविक्षाणां for तित्तीर्षणां ; 13° अंश for अंग ; 15° आयत्तं for उपेतं ; 19^a सर्गान्तैः for वृत्तान्तैः ; 19^b रञ्जनं for रञ्जकं ; 20^b वर्ज्यते for दुष्यति ; 22^d कथनं for वर्णनं ; 25^a कारणं for लक्षणं ; 26^b साक्षात्सत्त्वं for सोच्छ्वासत्वं ; 27^a आश्वासः for उच्छ्वासः ; 29^a न ते for नैते ; 32^a आप्ताः for आर्याः ; 36^b स्थितिः for स्मृताः ; 35° शास्त्रे for शास्त्रेषु ; 37^b स्कन्धकादि यत् for स्कन्धकादिकं ; 37° ओसरादीनि for आसारादीनि ; 38^a कथादि for कथाहि ; 38^b पठ्यते for बध्यते ; 38° त्वाहुः for प्राहुः ; 39^a शाम्यादि for शल्यादि ; 42^d लक्ष्यते for दृश्यते ; 49^a आननं for मुखं ; 50° वदते for वदधे ; 51^b स्थितः for स्थितिः ; 52° तद्रूपादि for तद्रूपाहि ; 53° तदा for ततः ; 54^d ईप्सितं for इष्यते ; 57^d कर्तुं for हन्तुं ; 63^a वैरस्यायैव कल्पते for वैरस्याय प्रकल्पते ; 67^a परं for खरं ; 69° हि for तु ; 71^d मुखं for मनः ; 72° क्षपितः for क्षयितः 78° अन्यत् for अन्यत् ; 85^d विद्यते for दृश्यते ; 89^d यथा for जनाः ; 97^d मतो for स्मृतो ; 99° इह for इमे ; 99^a अन्यत् for अप्यत्.

Chap. II. 2° प्रतिसंस्कर्तुम् for परिसंस्कर्तुम् ; 3^d अथ for अन्यत् ; 6^a क्लिष्ट for श्लेष ; 7^b संछष्टिः for सङ्कीर्णम् ; 10° परिच्छिप्य for परिभ्रम्य ; 14^d प्रदरयते

for निदर्श्यते ; 15^d प्रकाशनात् for प्रदर्शनात् ; 17^a त्वद् for तव ; 28^d मता for स्मृता ; 30^f मता for स्मृता ; 31^d इष्यते for उच्यते ; 33^d उदिता for मता ; 40^d प्रथयन्ती for बोधयन्ती ; 42^d एव सा for मता ; 48^a समाह्वय for समीकृत्य ; 50^d स्मृता for मता ; 54^a इत्येवमादि for इत्येवमादौ ; 54^o च for एव ; 56^b त्वत् for तत् ; 60^b अन्यूनार्थवाचिनः for अन्यूनार्थवादिनः ; 62^a संरन्धे for सन्धते ; 64^d सादृश्यसूचिनः for सादृश्यसूचकाः ; 65^b इष्यते for उच्यते ; 71^a धर्म्माम्बु for धर्म्माम्भः ; 74^o मुग्धे for मुग्धः ; 75^b च for अपि ; 82^d पश्यति for कल्पते ; 97^o नवाय च नताङ्गीनां for स एवावनताङ्गीनां ; 100^d देवतर्धयः for दैवतर्धयः ; 105^a कर्णात्पलं for नीलोत्पलं ; 113^b अपि for तथा ; 114^o अनुगति for अवगति ; 115^b इत्यपि for एव च ; 116^b कुटजोक्तमाः for कुटजद्रुमाः ; 117^b वर्गं for वृन्दं ; 117^o अद्य for एष ; 118^a अद्य for अत्र ; 128^d तत् नाश्रयः for न तदाश्रयः ; 129^o अत्र for एव and तद् for यद् ; 132^d न्वहं for न्वदं ; 137^a प्रत्याचक्ष्णाया for इत्याचक्ष्णाया ; 137^b विबन्धिनः for अनुबन्धिनः ; 137^d ईदृशः for उच्यते ; 144^d प्रतिबन्धिनः for परिपन्थिनः ; 145^d एकान्तरक्त्या for एवानुरक्त्या ; 146^b मत्प्रियं for त्वत्प्रियं and त्वत्प्रियैषिणी for मत्प्रियैषिणी ; 149^d उपसूचनात् for उपदर्शनात् ; 153^d निवार्यते for निषिध्यते ; 154^d जोर्णं for नीलं ; 161^o दर्शयित्वेति for दर्शयित्वेह ; 162^b तृप्यति for शाम्यति ; 163^b अयं निवर्त्यते for यन्निवार्यते ; 172^a आह्लादयति for आनन्दयति ; 180^d च्छविः for द्युतिः ; 182^o इयता for अयन्तु ; 182^d जलात्मा for जडात्मा ; 186^d सोनुविधीयते for सोप्यभिधीयते ; 190^d लोलदृष्टि for लोलनेत्रं ; 192^b वियदम्भसोः for चन्द्रहंसयोः ; 192^d चन्द्रहंसयोः for वियदम्भसोः ; 195^d अदर्शयत् for अदर्शयत् ; 197^o सूक्ष्म for शुद्ध ; 199^b हेतुकं for हेतुजं ; 207^o सच्छायः for सुच्छायः ;

215° अनुपपत्त्यैव for नोपपद्यते ; 215° स्थितेः for स्थितिः ; 219° उत्सुकः for उद्यतः ; 222° चैवन्तु for चेत्येवं ; 222° कथ्यते for वार्यते ; 224° जन्यते for जायते ; 226° अनुन्मत्तो for उन्मत्तो ; 230° उत्प्रेक्षित for उत्प्रेक्षत and इतीष्यते for इतीष्यतां ; 236° मनोहारोचके for मदनाग्न्यातुरे ; 240° कृतां for स्थितां ; 243° व्याक्रियन्ते for व्याहियन्ते ; 245° आश्रये for आश्रमे ; 260° त्वदर्पित for मदर्पित ; 266° एव for एष ; 276° अनुगम्यतां for अवगम्यतां , 277° सैवावन्ती for सैषा तन्वी ; 283° देवी for तन्वी ; 291° इति मुक्तः for एवमुक्त्वा ; 295° दैवबलात् for दैववशात् ; 296° तस्याः for अस्याः ; 296° नमस्यतः for पतिष्यतः ; 300° अतिव्यक्तं for इति प्रोक्तं ; 302° शीता किल for मयि शीता ; 304° नाम नो for नामतो ; 311° वा for च ; 323° कुलं for बलं ; 325° जगज्जयं for नभस्तलं ; 326° कल्प्यते for कल्पने ; 327° स्मृता for मता ; 329° अपि for च ; 335° लोचनम् for लोचने ; 337° अप्रक्रान्तेप्सिता for अप्रक्रान्तेषु या ; 344° प्रविस्तरः for विस्तरः ; 346° एव for एष ; 348° सह-भावस्य for सहभावेन ; 348° यथा for स्मृता ; 349° पाण्डराः for पाण्डुराः ; 350° अभ्रुभिः for अमुभिः ; 352° निरूपणं for निदर्शनं ; 353° पाण्डरं for पाण्डुरं ; 355° कीर्तितं for दर्शितं ; 356° संदृष्टिः कथ्यते पुनः for सङ्कीर्णन्तु निगद्यते ; 360° यः स्थितः for संस्थितः.

Chap. III. 6° साम्प्रतं for सत्पतिं ; 8° किन्निन्दं for किलु ते ; 21° वा for च ; 38° ईप्सिताः for ईहिताः ; 41° आमोद for आनन्द ; 41° न मे फलं किञ्चन for प्रयोजनं नास्ति हि ; 55° तापनेन for तायनेन ; 63° पिष्टपस्य for विष्टपस्य ; 80° आहुः for प्राहुः ; 111° तायवो for वायवो ; 117° जनं for नरं ; 119° रुषा for क्रुधा ; 127° च for वा ; 129°-b सोयमहमद्य for देवैरहमस्मि ; 129° ऐरावतः for ऐरावणः ; 132° कुलं for बलं ; 132° न च ते कोपि for तव नैकोऽपि ; 137°

अलङ्कृतिः for अलङ्किया ; 145^b अजाः for अमी ; 146¹ न दोषं सूरयो यथा for सूरयो नैव दूषणं ; 153¹ एष for एवं ; 156^c यत्र for तत्र ; 158^a वियुक्ता for विमुक्ता ; 158^c मदनबाणा for स्मरस्य बाणा ; 158^d मृगेक्षणा for वामेक्षणा ; 160¹ अस्मन्मनस्यपि for अस्मद्वपुष्यपि ; 161^a न्यङ्गं for न्यस्तं ; 165^a अस्पर्शां for अमर्शं ; 174^{a-b} सुगतैः संस्कृताभङ्गः [सत्यमेवोदितोऽपि चेत्] for सत्यमेवाह सुगतः संस्कारानविनश्वरान् ; 176^a प्रवेश उपदिश्यते for प्रस्थानमुपदिश्यते ; 184^b सकलः for सफलः and निष्कलः for निष्फलः ; 185^b कन्यका for पुत्रिका.

The differences between our readings of the text and those of Dr. F. W. Thomas (JRAS., 1903, pp. 349-354) are noted below for comparison :—

Chap. I. 12^a विविक्षणां for तितीर्षणां ; 13^a अंश for अंग ; 20^a उपात्तेषु सम्पत्तिः for उपात्तार्थसम्पत्तिः ; 60^b नियच्छति for निगच्छति ; 62^a एनं for एतं ; 80^b एतद् for तद्.

Chap. II. 2^a प्रतिसंस्कृतुं for परिसंस्कृतुं ; 10^a परिक्षिप्य for परिहृत्य ; 62^a संरुन्धे for सन्धत्ते ; 64^a सूचिनः for सूचकः ; 82^a पश्यति for यस्यति ; 134^a यातव्यं for याहि त्वं ; 142^a रन्ध्रावेक्षेण for रन्ध्रान्वेषण ; 148^a त्वं for ते ; 149^a अस्वार्थस्य for तस्वार्थस्यैव ; 155^b सानुकोशमिबोत्पले for सानुकोशोऽयमाक्षेपः ; 182^a इयता for अयं तु ; 197^a सूक्ष्मान्बु for शुद्धाम्बु ; 255^a रागबालातपः for रविबालातपः ; 300^a अतिव्यक्तं for प्रोक्तं ; 310^b यद् for यत्तु ; 343^a संसक्ता for संक्रान्ता ; 350^a अश्रुमिः for अस्रुमिः ; 364^a एष for एव.

Chap. III. 38^a वक्ष्यन्ते for बक्ष्यन्ते ; 41^a आमोद for आनन्द ; 70^a तस्यापि for तन्नापि ; 158^a मदनबाणा for स्मरस्य बाणा.

With reference to the xylograph used by Dr. F. W. Thomas he himself observes that in some cases (viz. II. 155, 362, and III. 128) it is scarcely decipherable. Sometimes he has given the Tibetan readings only, and not also the Sanskrit ones; as for instance, II. 109, 118; III. 141.

There is a peculiar word in the Tibetan transliteration which should be noted here. In II. 116^b we read कुटजोन्मः for कुटजदुम. It seems that *uṅgama* in *Kutajongama* is from Sanskrit *udgama* through Prakrit *uggama* owing to spontaneous nasalisation. Cf. *puṅgala* in Buddhist Sanskrit for *pudgala*. The word *udgama*, literally 'shooting forth' appears to mean 'a bud.'

Asterisks are put to indicate the difference between the two texts, Sanskrit and Tibetan. According to the printed Sanskrit text, one line in II. 56 and another in II. 65 are not to be found in the Tibetan xylograph, and consequently the number of the ślokas has differed in the two. Thus the śloka II. 65 in our text is II. 66 in the printed Sanskrit text, and so on. Again, ślokas II. 155, 156 and 362 are omitted in our xylograph. Discrepancy is also noticed in the arrangement of some of the ślokas; e.g. II. 156, 160 and 161 in our text are II. 161, 159 and 160 respectively in the printed text. Again according to the printed Sanskrit text, both the Sanskrit and Tibetan of a line in III. 161 are missing, but the Sanskrit has been adjusted in our text omitting the Tibetan and consequently there have been put some dots in the Tibetan portion to indicate the omission. In a rare instance, e.g., in śloka III. 64, the second line

in the xylograph stands as third, and the third line as second in the printed Sanskrit text.

Incidentally it may be observed here that the *Kāvyaḍarśa* is not the only Sanskrit text transliterated in Tibetan script; it is just one of the many. The study of the remaining works may prove equally useful and interesting.

Before concluding this preface, I have to fulfil the agreeable duty of acknowledging my indebtedness to Mahāmahopādhyāya Professor Vidhushekhara Bhattacharya, Asutosh Professor of Sanskrit, Calcutta University, who initiated me into Tibetan Studies and has provided me with facilities for work in various ways. Thanks are due to Lama Lobzang Mingyur Dorje, Instructor in Tibetan, Calcutta University, for kindly revising the text in proofs. I must also thank my friends Mr Durgadas Mookerjee, M.A., and Mr Ajit Ranjan Bhattacharya, M.A., for their occasional assistance.

Lastly I must also express my thanks to Mr. J. C. Sarkhel, Manager, Calcutta Oriental Press and his staff who have never been found lacking in courtesies while this work was being seen through the press.

The University of Calcutta,
July, 1939.

ANUKUL CHANDRA BANERJEE

KĀVYĀDARŚA

ॐ । । སྒོ་བ་དཔོན་ དབྱུག་པ་ཅན་གྱིས་ མཛད་པའི་
སྒྲིན་ངག་མེ་ལོང་མ་ ཞེས་བྱ་བ་
སྐད་གཉིས་ཤན་སྦྱར་
བཞགས་སོ ༥

SANSKRIT AND TIBETAN TEXTS

[1b] नम आर्यमञ्जुश्रीकुमारभूताय

འཕགས་པ་འཇམ་དཔལ་གཞིན་ནར་གྱར་པ་ལ་ ཕྱག་འཚལ་ལོ ॥

चतुमुखमुष्णाम्मोज्जनहसवधूर्गम ।

मानसे रमतां धीर्धं सर्वशुक्ला सरस्वती ॥१॥

གདོང་བཞི་ གདོང་གི་ པད་ཚལ་གྱི །

ངང་པའི་ བྱ་མོ་ བམས་ཅད་དཀར །

དབྱངས་ཅན་མ་ མི་ ཁོ་ལོ་ཡི །

ཡིད་ལ་ རིང་དུ་ གནས་པར་མཛོད ॥ १

पूर्वशास्त्राणि संहृत्य प्रयोगानुपलक्ष्य च ।

यथासामर्थ्यमस्त्राभिः क्रियते काव्यलक्षणं ॥२॥

བསྐྱན་བཅོས་སྒྲ་མ་ནམས་ བསྐྱས་ཤིང་ །

སྒྲོར་བ་ནམས་ ཀྱང་ ཉེར་མཚོན་ ཏི །

ཇི་ལྟར་ནས་བཞིན་ བདག་གིས་ནི །

སྒྲན་ངག་ དག་གི་ མཚན་ཉིད་བྱ ། ༢

इह शिष्टानुशिष्टानां शिष्टानामपि सर्व्वथा ।

वाचामेव प्रसादेन लोकयात्रा प्रवर्त्तते ॥३॥

འདི་ན་ ཀུན་ཏུ་ མཆོག་ནས་སྒྲིས་ །

ཇིས་སྒྲ་བཟུན་ དང་ ལྷག་མའི་ཡང་ །

ཆོག་ནས་སྒྲིད་ ཀྱི་ རིན་གྲིས་ ནི །

འདིག་དེན་ལུགས་ལ་ འཇུག་པར་བྱེད ། ༣

इदमन्धन्तमः कृत्स्नं जायते भुवनत्रयं ।

यदि शब्दाद्वायं ज्योतिरास्संसारं न दीप्यते ॥४॥

གལ་ཏེ་ སྒྲས་པོད་ སྒྲང་བ་ཡིས་ །

འཁོར་བ་ ལས་ལ་བར་མ་བྱས་ན །

འདིག་དེན་ལས་སྒྲས་པོ་ མཐའ་དག་ འདི །

སྒྲག་ཅུམ་སྒྲན་བཟུན་དུ་འགྱུར ། ༤

आदिराजयशोविम्बमाक्षं प्राप्य वाङ्मयं ।
तेषामसन्निधानेपि न स्वयम्पश्य नश्यति ॥५॥

ཨོན་གྱི་རྒྱལ་པོ་ ལྷགས་པའི་བཀུགས་ །
ངག་གི་རང་བཞིན་ མེ་ལང་ ཐོབ་ །
དེ་དག་ཉེ་བར་མི་གནས་ ཀྱང་ །
རང་ཉིད་ ཉམས་པ་མེད་ལ་ ལྷོས་ ॥ ५

गौर्गौः कामदुघा सम्यक् प्रयुक्ता स्मर्यते बु[2a]धैः ।
दुष्प्रयुक्ता पुनर्गोत्वं प्रयोक्तुः सैव शंसति ॥६॥

མཁས་པས་ ཡང་དག་ རབ་སྤར་བའི་ །
ངག་ནི་ འདོད་འཇོའི་ བ་ཅ་ བཤད་ །
དེ་ཉིད་ ཉམས་པར་སྤར་ ཅ་ སྤར་ །
སྤོར་པོ་ བ་ལང་ཉིད་ བཇོད་བྱེད་ ॥ ६

तदल्पमपि नोपेक्ष्यं काव्ये दुष्टं कथञ्चन ।
स्याद्वपुः सुन्दरमपि भिन्नेनैकेन दुर्मगं ॥७॥

དེ་ཕྱིར་ སྒྲན་ངག་ དག་ལ་ སྒྲོན།
 རྒྱང་བར་གྱར་ ཀྱང་ ཅི་ཞིག་ ལྟར།
 བཤང་སྒྲོམས་མི་བྱ་ ལུས་མཛེས་ཀྱང།
 སྒྲོན་གཅིག་གིས་ནི་ སྐལ་ངན་འགྱར། ॥ १७

गुणदोषानशास्त्रज्ञः कथं विभजते जनः ।
 किमन्यस्याधिकारोस्ति रूपभेदोपलब्धिषु ॥८॥

སྒྲེ་བོ་ བལྟན་བཅོས་ མི་ཤེས་བས།
 ཡོན་ཏན་ སྒྲོན་དག་ ཇི་ལྟར་དབྱེ།
 གཟུགས་ཀྱི་དབྱེ་བ་ དམིགས་པའི་སྐབས།
 ཡང་བ་དག་ལ་ ཡོད་དམ་ཅི། ॥ ८

अतः प्रजानां व्युत्पत्तिमिमिसन्धाय सूरयः ।
 बाचां विवित्रमार्गाणां निबबन्धुः क्रियाविधिम् ॥९॥

དེ་ཕྱིར་ མཁས་པས་སྒྲེ་དག་ནམས།
 བྱེ་བྲག་དྲིགས་ལ་ མངོན་དགོངས་ནས།

ནམ་བཀ་ལམ་ལུན་ ཚོག་ནམས་ ཀྱི །

བྱ་བའི་ཚོག་ དེས་བར་སྦྱར ༥ ༩

तैः शरीरं च काव्यानामलंकारश्च दर्शितः ।

शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली ॥१०॥

དེ་དག་གིས་ནི་ ལྷན་ངག་གི །

ལུས་དང་ རྒྱན་ ཡང་ རབ་དུ་བསྟན །

ལུས་ ནི་ རེ་ཞིག་ འདོད་བ་ཡི །

དོན་གྱི་ནམ་བཅད་ ཚོག་གི་ སྟེང་ ॥ ༡༠

पद्यं गद्यश्च मिश्रश्च तन्निधैव व्यवस्थितम् ।

पद्यञ्चतुष्पदी तच्च वृत्तं जानिरिति द्विधा ॥११॥

དེ་ཡང་ ཚོགས་བཅད་ ལྷུག་བ་ དང་ །

སྟེལ་མ་ ནམ་གསུམ་ ཉིད་དུ་ གནས །

ཚོགས་བཅད་ ཀྱང་བཞི་བ་ དེ་ཡང་ །

མྱོད་ རྒྱ་དེ་ ཞེས་ ནམ་གཉིས ༥ ༡༡

छन्दोविचितां स[2b]कलस्तत्पदञ्चो निदर्शितः ।
 सा विद्या नौर्विविधूणां गम्भीरं काव्यसागरं ॥१२॥
 दे'यी'सु'स'प' सप्र'द'ग'के ।
 सु'व'सु'र' ग'बु'द'रु' दे'स'प'र'व'सु'र' ।
 र'ग'दे' सु'र'द'ग' कु'स'के'के ।
 स'व'सु'र' द'बु'ग' द'दे'र' क'स'स' ग'ु'गु ॥ २२

मुक्तकं कुलकङ्कोषः संघात इति तादृशः ।
 सर्गबन्धोऽशरूपत्वाद्युक्तः पद्यविस्तरः ॥१३॥
 ग'ु'र'व' द'द'के' र'ग'स' द'द' स'दे'र' ।
 द'द'स'प' ले'स'गु' दे'द'द'यी ।
 के'ग'स'प'द'द' कु'के' स'क'स' व'के'द'स' ।
 क'प'स' द'द'व'ले'के' सु'र' स'व'दे'र' ॥ २३

सर्गबन्धो महाकाव्यमुच्यते तस्य लक्षणं ।
 आशीर्नमयिकया वस्तुनिर्देशो वापि तन्मुखं ॥१४॥

སཀས་ བཅོངས་པ་ ལྷན་ངག་ཆེ །

དེ་ཡི་ མཚན་ཉིད་ བཟོད་པར་བྱ །

ཤིས་ བཟོད་ ཕྱག་བྱ་ དངོས་པོ་ནི །

ངེས་པར་ བལྟན་པའང་ དེ་ཡི་སྒྲོལ་ཆོ ། ༡

इतिहासकथोद्भूतमितरथा सदाश्रयं ।

चतुर्वर्गफलप्राप्तं चतुष्टयात्मनायकं ॥१५॥

སྒྲོན་བྱང་གདམ་ ལས་ བྱར་པའམ །

ཅིག་ཤོས་ ལེགས་པ་ལ་ བདེན་པ །

སྒེ་བཞི་ འབྲས་བུའི་ དབང་གུར་ དང་ །

མཁས་ཤིང་ རྒྱ་ཆེའི་ འདྲེན་པ་ཅན ། ༡༦

नगरार्णवशीलर्तुचन्द्रार्कोदयवर्णनैः ।

उद्यानसलिलक्रीडामधुपानरतोत्सवैः ॥१६॥

གྲོང་ཁྱེར་ རྒྱ་མཚོ་ རི་དང་ ཏུས །

ཉི་ཁྲ་འཆར་བའི་ བལྟགས་པ་ དང་ །

སྒྲིང་ཆལ་ཅུ་ཡི་ རོལ་ཅེད་ དང་ །

ཆང་འཕྱང་ དགའ་བའི་ དགའ་སྒྲོན་དང་ ॥ १८

विप्रलम्भैर्विवाहेभ्यः कुमारोदयव्यञ्जनैः ॥

मन्त्रवृत्तप्रयाणाजिनायकाम्युदयरपि ॥१९॥

བསྐྱུ་བ་ དང་ནི་ བག་ས་ དང་ །

གཞོན་ནུ་སྒྲི་ དང་ འཕྲེལ་བ་ དང་ །

གྲོས་ དང་ སྔ་ཉ་ བགྲོད་བ་དང་ །

གཡུལ་དང་ འབྲིན་བ་ དར་བས་ ཀྱང་ ། १९

अलंकृतमसंक्षिप्तं रसभावनिरन्तरं ।

सर्गे रनतिविस्तीर्णैः श्रव्यवृत्तैः सुसन्धिभिः ॥२०॥

བརྒྱན་བར་གྱུར་ཅིང་ མདོར་བསྐྱུས་ མིན་ །

ཉམས་དང་ འགྱུར་བ་ དག་གིས་ གདམ་ །

སག་གིན་དུ་ བྱ་ཆེ་ མིན་ །

མཉན་འེས་ སྒྲིང་ ལེགས་མཆམས་སྐྱར་ ॥ २०

सर्वत्र भिन्नसर्गान्तै[3a]रूपेतं लोक*रञ्जनं ।

काव्यं कल्पान्तरस्यापि जायते सदर्लकृति ॥१६॥

गुणं दुः सक्कं दवां मीं सवद ।

घं ददं द्वाकं दसं दद्विं द्वाकं दद्विं सवद ।

श्लोकं दवां दसं दद्विं द्वाकं दद्विं ।

वसन्तं दद्विं वदं दुः मक्कं दसं दद्विं ॥ १८

न्यूनमप्यत्र येः कौशिकेनैः काव्यं न* वज्यते ।

• यद्युपात्तेषु सम्पत्तिराराधयति तद्विदः ॥२०॥

मदं विं द्वाकं दवां दसं दद्विं द्वाकं दद्विं ।

मदं दद्विं श्लोकं दसं दद्विं द्वाकं दद्विं ।

दद्विं दद्विं मक्कं दसं दद्विं दद्विं ।

दद्विं दद्विं श्लोकं दसं दद्विं दद्विं ॥ २०

गुणतः प्रागुपन्यस्य नायकं तेन चिद्विषां ।

निराकरणमित्येष मार्गः प्रकृतिसुन्दरः ॥२१॥

ཐོག་མར་ འདྲན་བ་ ཡོན་དན་ གྱིས །

ཉི་བར་ བཀོད་ནས་ དེ་ཡིས་ནི །

དག་ལ་ བཀོད་བ་བྱེད་ ཅེས་བའི །

ལས་འདི་ རང་བཞིན་ མཛེས་བ་ ཡིན ༥ ༢༡

वंशवीर्यश्रुतादीनि वर्णयित्वा रिपोरपि ।

तज्जयाभायकोत्कर्षकथनञ्च धिनोति नः ॥२२॥

རིགས་ དང་ བཙོན་འགྲུས་ ཐོས་ རོགས་གྱིས །

དག་བོ་ལ་ ཡང་ བསྐྱབས་བྱས་ནས །

དེ་ལས་ རྒྱལ་བར་ འདྲན་བ་ ནི །

ཁྱད་འཕགས་ བཛྲོད་བའང་ བདག་ དགའ་སྦྱེས ༥ ༢༢

अपादपदसन्तानो गद्यमाख्यायिका कथा ।

इति तस्य प्रमेदौ द्वौ तयोराख्यायिका किल ॥२३॥

ཀང་བ་མེད་བའི་ ཚོག་རྒྱན་ ནི །

ལྷག་བ་ བཛྲོད་བ་ དག་ དང་ བཀྲམ །

ཞེས་པ་ རེ་ཡི་ རབ་དབྱེ་ གཤིས།

དེ་ཡ་འདྲིན་པ་ ཉིད་གྱིས་ མི། ༢༢

नायकेनैव वाच्यान्या नायकेनैतरि वा ।

स्वगुणाविष्किया दोषो नात्र भूतार्थशंसिनः ॥२४॥

བཛྲོད་པར་བྱ་བ་ བཛྲོད་པ་ལོ།

གཞན་ནི་ འདྲིན་པ་འཇམ་ གཞན་ གྱིས་ ཀྱང་།

རང་གི་ ཡོན་ཏན་ བསྐྱབས་ སྟོན་ འདིར།

ཡང་དག་དོན་ བསྐྱབས་ ཡིར་ ཡོད་མིན་ ॥ ༢༣

अपि त्वनियमो द्रष्टृस्तत्राप्यन्यैरुदीरणात् ।

अन्यो वक्ता[3b] स्वयं वेति कीदृशो वा भेदकारणं ॥२॥

འོན་ཀྱང་ ཅིས་པ་ མ་མཐོང་སྟེ།

དེར་ཡང་ གཞན་གྱིས་ བཛྲོད་པ་འདི་སྟེར།

གཞན་གྱིས་བཛྲོད་ དེ་ རང་གིས་ ཞེས།

དབྱེ་བའི་མ་ མི་ ཅི་འད་ཞིག ॥ ༢༤

वक्रोच्चापरवक्राश्च साध्यास्तत्राश्च भेदकं ।
विह्वलाख्यायिकायाश्चेत्यसङ्गेन कथास्तपि ॥२६॥

གལ་ཏེ་ གློ་ དང་ གཞན་ གློ་ དང་ །
དབྱགས་ མཚས་ བཅས་ཉིད་ བཛོད་བ་ཡི །
ཐ་དད་བ་ཡི་ ཉགས་ ཡིན་ ན །
ཞར་གྱིས་གདམ་ རྣམས་ དག་ལ་ཡང་ ॥ २७

आर्याद्विषयवेशः किं न वक्रोपरवक्रयोः ।
भेदश्च दृष्टो लम्भाद्विराभासो वास्तु किन्ततः ॥२७॥

འཕགས་ས་ སྟོགས་ བཞིན་ གློ་ དང་ནི །
གཞན་གྱི་གློ་ དག་ ཅིས་ མི་འཇུག །
ལྟ་ སྟོགས་སམ་ ལྟ་ལྟ་སའ །
དབྱེ་བ་ མཐོང་ཡང་དེ་ ལས་ཅི ॥ २८

तत्कथाख्यायिकेत्येका जातिः संह्यादुपाकृता ।
तत्रैवान्तर्भविव्यन्ति शेषास्त्वाख्यानजातयः ॥२८॥

དེ་ཕྱིར་ གཏམ་ དང་ བཟློན་པ་ ཞེས།
 མིང་ གཉིས་ དག་གིས་ རིགས་གཅིག་ མཚོན།
 ལྷག་མ་ བཟློན་པ་འོ་ རིགས་ རྣམས་ ཀྱང་།
 འདི་ཉིད་ ནང་དུ་ འདུས་པར་ འགྱུར། ॥ ༣༤

कन्याहरणसंग्रामविप्रलम्भोदयादयः ।
 सर्गबन्धसमा एव न ते वैशेषिका गुणाः ॥२६॥

བྱ་མོ་འཕྲོག་ དང་ གཡུལ་ དང་ བློ།
 བསྐྱུ་བ་ དར་བ་ ལ་སོགས་པ།
 སུགས་བཅེངས་པ་ མཚུངས་པ་ཉིད།
 དེ་དག་ ཟླ་བྱེད་ ཡོན་ཏན་ མིན། ॥ ༣༥

कविभावकृतं विह्वलमन्यत्रापि न दुष्यति ।
 मुष्णमिष्टार्थसंसिद्धौ किं हि न स्यात्कृतान्मनाम् ॥३०॥

ལྷན་ངག་མཁན་གྱི་ བསམ་བྱས་ རིགས།
 གཞན་དུ་ དང་ བློ་ ལྷན་མི་ འགྱུར།

འདོད་དོན་ གྲུབ་ལ་ མྱོ་ཅ་ ཉི །

སཤམས་བ་རྣམས་ལ་ ཅིས་ མི་འགྱུར ༥ 30

मिथ्याणि नाटकादीनि तेषामन्यत्र विस्तरः ।

गद्यपद्यमयी कापि चम्पूरित्यभिधीयते ॥३१॥

སྤེལ་མ་ རྒྱུས་གར་ལ་སོགས་དེ །

དེ་དག་ རྣམས་ནི་ གཞན་ན་ གྲུབ །

ལྷག་པ་ ཆོགས་བཅད་རང་བཞིན་ ཡང་ །

ཅུ་ ཞེས་བར་ མངོན་བར་ བཟློད ༥ 32

तदेतद्वाङ्मयम्भूयः संस्कृतम्याकृतन्तथा ।

[4a]अपमंशश्च मिश्रश्चत्याहुःराताश्चतुर्विधं ॥३२॥

ངག་གི་ རང་བཞིན་ དེ་དག་ ཀྱང་ །

ལོགས་སྤྱར་ དེ་བཞིན་ རང་བཞིན་ རང་ །

ཟུར་ཆག་ འདྲིས་མ་ ཞེས་བྱ་བ །

རྣམ་པ་བཞི་ཅུ་ སཤམས་བས་ གསུངས ༥ 33

संस्कृतं नाम देवी वामन्याख्याता महर्षिभिः ।

तद्भवन्तत्समन्देशीत्यनेकः प्राकृतक्रमः ॥३३॥

ལེགས་སྤྱད་ ཞེས་བྱ་ ལྷ་ཡི་ནི།

སྒྲ་དུ་ རྒྱ་སྤྱོད་ ཆེན་པོས་ གསུངས།

དེ་སྤྱིས་ དེ་མཚུངས་ ཡུལ་ཅན་ ཞེས།

དུ་ས་ རང་བཞིན་ དག་གི་ རིས། ॥ ३३

महाराष्ट्राश्रयाम्भाषां प्रकृतम्प्राकृतं विदुः ।

सागरः सूक्तिरज्ञानां सेतुबन्धादि यन्मयं ॥३४॥

ཡུལ་འཁོར་ཆེན་པོ་ ལ་ བདེན་ སྒྲ།

ལེགས་བརྗོད་ རིན་ཆེན་ དག་གི་ མཚོ།

སེ་དུས་ བཅིངས་ སེགས་ རང་བཞིན་ གང་།

རང་བཞིན་ མཚོག་དུ་ བྱུར་བར་ རིག། ॥ ३ॣ

सौरसेनी च गौडी च लाटी चान्या च साक्षरी ।

याति प्राकृतमित्येव व्यवहारेषु सन्निधिः ॥ ३५॥

ས་ར་སེན་གོ་ཏ་དང་།

ལྟ་ཏ་གཞན་ཡང་དེ་འདྲ་ཡི།

སྐད་ནི་རང་བཞིན་ཉིད་ཅེས་བྱའི།

ཐ་སྟན་རྣམས་ལ་ཉེ་བར་འགྱུར་༥ ༢༥

आभीरादिगिरः काव्येष्वपभ्रंश इति स्थितिः ।

शास्त्रे तु संस्कृतादन्यदपभ्रंशतयोदितं ॥३६॥

བ་ཡང་རྩི་ལ་སྟགས་བའི་ཆོག།

སྟན་ངག་ལ་རྟུར་ཆག་ཅེས་གནས།

བསྟན་བཅོས་རྣམས་ལས་ལྟགས་སྟུར་ལས།

གཞན་པ་རྟུར་ཆག་ཉིད་ཏུ་བརྟེན་༥ ༢༦

संस्कृतं सर्गबन्धादि प्राकृतं स्कन्धकादि *यत् ।

ओसरादीन्यपभ्रंशो नाटकादि तु मिश्रकं ॥३७॥

ལྟགས་སྟུར་སྟགས་བཅོངས་ལ་སྟགས་།

རང་བཞིན་སྟན་ཀ་སྟགས་དང་།

ཟུར་ཆག་ མོ་ས་ར་ སོགས་དེ །

རྒྱུས་གར་ ལ་སོགས་ འདྲིས་པའོ ༥ ༢༩

कथादि सर्वभाषामिः संस्कृतेन च *पठ्यते ।

भूतभाषामयीं त्वाहुर्द्भुतार्थां बृहत्क[4b]थां ॥३८॥

གདམ་ སོགས་ སྒད་ རྣམས་ བསམ་ཅད་དང་ །

ལེགས་སྦྱར་གྱིས་ ཀྱང་ བཅིངས་པ་སྟེ །

སྒད་བྱང་ དོན་ཅན་ རྒྱ་ཆེའི་གདམ །

འབྱང་པོའི་སྒད་ཀྱི་ རང་བཞིན་ བཟོད ༥ ༣༠

लास्यच्छलितशाम्यादि प्रेक्षार्थमितरत्पुनः ।

अव्यमेवेति सैषापि द्वयी गतिरुदाहृता ॥३९॥

སྒླེག་ དང་ རོལ་ དང་ སྦྱབས་ ལ་སོགས །

ལྷ་བའི་དོན་ ཡིན་ ཅིག་ཤོས་ ཀྱང་ །

སཉན་པར་བྱ་བ་ཉིད་ ཅེས་པ །

འདི་ཡང་ ལུགས་གཉིས་ དག་ད་ བཟོད ༥ ༣༡

अस्यनेको गिरां मार्गाः सुखमेव परस्परं ।
तत्र वेदमंगौडीयौ वण्येते प्रस्फुटान्तरौ ॥४०॥

ཡན་ཚུན་ རྟེན་པ་ ལྷོ་མོ་ཅན།
ཆོག་གི་ལམ་ བྱི་ ཏུ་མ་ ཡོད།
དེ་ལ་ བེ་ རྟུ་ རང་ནི།
གོ་ཏེ་པ་ བྱུང་ གསལ་བར་ བཟོད། ॥ ༩༠

शेषः प्रसादः समता माधुर्यं सुकुमारता ।
अर्थव्यक्तिस्वरत्वमोजःकान्तिसमाधयः ॥४१॥

སྤྱར་བ་ རབ་དངས་ མཉམ་ ཉིད་ རང་།
སྟོན་ རང་ འིན་ཏུ་ གཞིན་པ་ རང་།
དོན་ གསལ་བ་ རང་ བྱ་ཆེ་ ཉིད།
བཟོད་ རང་ མཛེས་ལྷན་ ཉིང་ངེ་འཛིན། ॥ ༩༡

इति वेदमर्मार्गस्य प्राणा दशगुणाः *स्तुताः ।
एषां विवर्य्ययः प्रायो लक्ष्यते गौडवर्त्मनि ॥४२॥

ཡོན་ཏན་ འདི་ བཅུ་ བོ་དགྲའི།
 ལམ་གྱི་ སློག་ཏུ་ བཤད་པ་ ཡིན།
 འདི་དག་ ཕལ་ཆེར་ བརྒྱུག་བས་ ནི།
 གོ་ཏེ་ལམ་ དག་ མཆོན་པ་ ཡིན། ॥ ༨༢

मिश्रमस्पृष्टशैथिल्यमन्वयाणाक्षरोत्तरं ।

शिथिलं मालतीमाला लोलालिकलिला *यथा ॥४३॥

སྤྱད་པ་ རྟོན་བས་ མ་ རིག་བའོ།
 སློག་ཆུང་ ཡི་གེ་ མང་བ་ ནི།
 རྟོན་པ་ སྒྲ་ལ་རྟོ་ སྒྲ་ལ།
 ལོ་ལ་ལི་ཀ་ལི་ལྒྲ་ འདོད། ॥ ༨༣

अनुप्रासधिया गौडैस्तदिष्ट बन्धगोचरात् ।

बंधमैर्मालतीदाम लंघितं ब्रमरैरिति ॥४४॥

གོ་ཏེ་བ་ ཡིས་ ཇེས་ཁྲིད་སློས།
 དེ་ འདོད་ སྒྲ་ལ་རྟོ་ སྒྲ་མ།

ལེ་གླིང་གྱུ་མ་རིེ་ཞེས།

མེ་དགྲ་ཡིས་སྤྱར་ལྗེ་བྱེད། ༥༥

प्रसादवत्प्रसिद्धार्थमिन्दोरिन्दीवरद्युति ।

लक्ष्म लक्ष्मीन्तनोतीति प्रतीतिसुभगं वचः ॥४५॥

རབ་དངས་ལྡན་པ་ བྲགས་རོན་ཅན།

ལྷ་བའི་མཚན་ས་ ཡུལ་གྱི།

འོད་ཀྱིས་ མཛེས་པ་ ལྷས་ ཅས་པ།

དྲགས་པའི་ སྐལ་བཟང་ལྡན་པའི་ ཚོག། ༥༦

अनुत्पन्नमिति गौडोयर्नातिरुद्धमपीष्यते ।

यथानत्यज्जनाब्जन्मत्स[5a]दृक्षाङ्को बलशृगुः ॥४६॥

ངེས་ཚོག་ ཡོད་ ལྷར་ བོ་ར་པ།

ཤིན་ཏུ་ བྲགས་པ་ མིན་ ལང་ འདོད་།

ཤིན་ཏུ་ དཀར་ མིན་ རྩ་ལས་སྦྱེས།

ནི་འདྲས་ མཚན་པ་ འོད་དཀར་ཅན། ༥༧

समं बन्धेष्वविषमन्ते मृदुस्फुटमध्यमाः ।

बन्धा मृदुस्फुटोन्मिधवर्णविन्यासयोनयः ॥४७॥

संभ्रमं च श्रुतं च मीमांस्यं च ।

देवं च दत्तं च तु वरं च च ।

श्रुतं च दत्तं च तु वरं च च ।

यिं चोच्यते चोच्यते चोच्यते च ॥ ८७

कोकिलालापवाचालो मामेति मलयानिलः ।

उच्छ्रिताच्छाच्छनिर्मरांभःकणोक्षितः ॥४८॥

सुप्रभां च उच्छ्रितां च सुप्रभां च ।

संभ्रमं च श्रुतं च तु वरं च च ।

भ्रमं च संप्रभां च सुप्रभां च ।

सुप्रभां च उच्छ्रितां च सुप्रभां च ॥ ८८

चन्दनप्रणयोद्गन्धिर्मन्दो मलयमास्तः ।

स्पर्शते रुद्रमर्दयौ धररामाननानिलो ॥४९॥

ཅན་གྱིས་ བསྐྱོས་ རི་ ལང་ ཞིང་ །
 འཇམ་པ་ མ་ལ་ཡ་ཡི་རྒྱང་ །
 བདག་གི་ བདན་ འགོག་ དགའ་མ་ ནི །
 མཆོག་གི་ ཁ་ཡི་ རྒྱང་ དང་ འགྲན ༥ ༥༦

इत्यनालोच्य वैषम्यमर्थालंकारडम्बरौ ।
 अपेक्षमाणा *ववृते पौरस्त्या काव्यपद्धतिः ॥५०॥

ཞིས་པ་ མི་མཉམ་ མ་ བདགས་པར །
 རོན་གྱི་ རྒྱན་ དང་ ཆོགས་ དག་ ལ །
 ལྷོས་ནས་ ཤར་ཕྱོགས་པ་ དག་ ལ །
 ལྷན་ངག་ ལས་ ནི་ བྱང་བར་གྱུར ༥ ༥༠

मधुरं रसवद्भावि वस्तुन्यपि रसः स्थितः ।
 येन माद्यन्ति धीमन्तो मधुनेव मधुमताः ॥५१॥

ལྷན་པ་ ཉམས་ལྡན་ ཆོག་ དང་ ནི །
 དངོས་པོ་ ལ་ ཡང་ ཉམས་ གནས་པ །

སྤང་ཅི་ སྤྲོད་བ་ སྤང་ཅིས་ བཞིན།
གང་གིས་ སྤོ་ལྷན་ དགའ་བྱེད་པའོ། ॥ ४१

यथा कयापि श्रुत्या यत्समानमनुभूयते ।
*तद्वृथादिपदास्तस्मिन् सानुप्रासा रसावहा ॥५२॥

སྤྲོ་ བི་ གང་ དང་ ཅེ་ཡིས་ ཀྱང་།
གང་ཞིག་ མཚུངས་པར་ ཉམས་སྤོང་བ།
དེ་ཡི་ གཟུགས་ མོགས་ ཆོག་ཉེ་བ།
ཇིས་སྤྱ་ ཁྲིད་ བཅས་ ཉམས་དང་ལྷན། ॥ ४२

एष राजा यदा लक्ष्मीम्प्राप्तवान् ब्राह्मणप्रियः ।
तदा[5b]प्रभृति धर्मस्य लोकेस्मिन्नुत्सवोऽभवत् ॥५३॥

གང་ཆོ་ བྲམ་རྩེ་ དགའ་བ་ཡི།
རྒྱལ་པོ་ འདི་ཡིས་ དབལ་ཐོབ་གུར།
དེ་ནས་བརྒྱང་ལྟེ་ ཆོས་ཀྱི་ བི།
དགའ་སྤྲོན་ འཛིག་དེན་ འདི་ཅ་ བྱང་། ॥ ४३

इतीदं *नाहतं गोडेरनुप्रासस्तु तत्प्रियः ।
अनुप्रासादपि प्रायो वेदमैरिदमीप्सितं ॥५४॥

उ० २६० ॥ १०० ॥ १०० ॥
१०० ॥ १०० ॥ १०० ॥
१०० ॥ १०० ॥ १०० ॥
१०० ॥ १०० ॥ १०० ॥

वर्णावृत्तिरनुप्रासः पादेषु च पदेषु च ।
पूर्वानुभवसंस्कारबोधिनी यद्यदूरता ॥५५॥

१०० ॥ १०० ॥ १०० ॥
१०० ॥ १०० ॥ १०० ॥
१०० ॥ १०० ॥ १०० ॥
१०० ॥ १०० ॥ १०० ॥

चन्द्र शरणिशोतंसे कुन्दस्तवकविघ्नमे ।
इन्द्रलोनिमं लक्ष्म सन्ध्यात्यलिनः श्रियम् ॥५६॥

ལྷོན་མཚན་ དབུ་གྱུན་ ལྷོ་བ་ བློ།
 ཀླུ་ལྷི་ རོན་པོར་ འབྲུལ་བ་ ལ།
 མཚན་མ་ ལྷོན་ལྷོ་ལ་ མཚུངས།
 བྱང་བའི་ དབལ་ བློ་ ཡང་དག་ འཛོན་ ॥ ༡༩

चारु चान्द्रमसं भीरु विम्बम्पश्येदमम्बरे ।
 मन्मनो मन्मथाक्रान्तं निर्वयं *कतुमुद्यतं ॥५७॥

མཛོས་མ་ མཁའ་ལ་ ལྷོ་བ་ཡི།
 དཀྲིལ་འཁོར་ མཛོས་བས་ བདག་གི་ཡིད།
 ཡིད་སྐྱབ་ ཀྲིས་ མནན་ བརྩེ་མེད་དུ།
 འཛོམས་བར་ བརྩེན་བ་ འདི་ ལ་ ལྷོས་ ॥ ༡༧

इत्यनुप्रासमिच्छन्ति नानिदूरान्तरश्रुतिम् ।
 न तु रामामुखाम्भोजसदृशश्चन्द्रमा इति ॥५८॥

ཅེས་བ་ འོན་དུ་ མི་རིང་བར།
 ཐོས་བ་ དག་ བློ་ ཅེས་ཁྲིད་ འདོད།

དགའ་མ་ བཞིན་གྱི་ཚུ་སྤྲེས་ དང་ ।
 མཚུངས་པ་ ལྷ་བ་ ཅེས་ མི་འདོད་ ॥ ༡༥

स्मरः स्मरः खलः कान्तः कायः कोपश्च नः कृशः ।
 च्युतो मनोधिको रागो मोहो जातोसवोगताः ॥६६॥

བདག་གི་ ལུས་ དང་ ཁྲོ་བ་ ལྔ་ ।
 འདོད་པ་ ཚུབ་ ཅིང་ མཇུང་བོ་ངན་ ।
 ཁྲིངས་པ་ཉམས་ ཤིང་ ཆགས་པ་རྒྱས་ ।
 མྲིངས་པ་ སྤྲེས་ཏེ་ སློག་ ཉམས་ མྲིང་ ॥ ༡༦

इत्यादि बन्धपारुष्यं शैथिल्यञ्च नियच्छति ।
 अतो नैव[6a]मनुप्राप्तं दाक्षिणात्याः प्रयुज्यते ॥६७॥

ཅེས་སློགས་ སྤྲོར་བ་ ཚུབ་པ་ དང་ ।
 ཁྲོལ་བ་ ཡང་ནི་ སྤྲོར་བར་བྱེད་ ।
 དེ་ཕྱིར་ དེ་ལྟའི་ རྒྱུ་ཁྲིད་ ནི་ ।
 ལྷ་སྤྲོགས་པ་ དག་ མི་སྤྲོར་ཙོ་ ॥ ༡༧

आवृत्तिमेव संघातगोचरं यमकमिदुः ।

तन्तु नैकान्तमधुरमतः पञ्चाद्विधास्यते ॥६१॥

कै०ग०स०प०रे० श्रु०द०पु०प० व०श्रु०र०व०के० ।

पि०क०तु०द०द० व०क०प०र० री०ग० ।

दे०प०द०ग०उ०ग०दु० श्रु०क०प० वी०ग० ।

दे०पु०र० श्रु०क०स० व०श्रु०क०प०र०पु० ॥ ७१

कामं सर्वोप्यलंकारो रसमर्थे निषिञ्चति ।

तथाप्यप्राप्त्यतेवैनम्भारम्वहति भूयसा ॥६२॥

दे०स०प०र० कृ०क०क०स० गृ०क०प० प०द० ।

दे०क०पु० श्रु०क०स० द०ग० श्रु०क०प०र०पु०द० ।

दे०कृ०क० प०द० श्रु०द०प० श्रु०द० ।

श्रु०क०प०स० प०र० द०दे०प०प०कै०र० द०दे०क० ॥ ७२

कान्ये कामयमानं मान्त्वं न कामयसे कथं ।

इति प्राप्नोयमर्थत्मा खेरस्यायेव कल्प्यते ॥६३॥

འདོད་ལྷན་ བདག་ལ་ གཞིན་ནུ་མ།
 ཁྱོད་ནི་ཅི་ལྟར་ འདོད་མི་ བྱེད།
 ཅེས་ འདི་ གྲོང་པའི་དོན་ བདག་ ཉིད།
 ཉམས་ དང་ བྲལ་བ་ ཁོ་ནར་བྱེད། ॥ ༥༢

कामं कन्दर्पचण्डाला मयि वामाक्षि निर्दयः ।
 त्वयि निर्मत्सरो द्रिष्ट्येत्यप्राम्योर्थो रसावहः ॥६४॥

གཡོན་མིག་ འདོད་པ་ གདུམ་པོ་ནི།
 ཇེས་པར་ བདག་ལ་ བརྟེ་བ་མེད།
 ཁྱོད་ལ་ ཁྱོ་མེད་ དགའ་ ཅེས་པ།
 གྲོང་པའི་ དོན་མེད་ ཉམས་དང་ལྷན། ॥ ༥༣

शब्देऽपि प्राम्यतास्त्येव सा सम्येतरकीर्तनात् ।
 यथा यकारादिषु रत्युत्सवनिरूपणे ॥६५॥

སྒྲ་ལའང་ གྲོང་པ་ཉིད་ ཡོད་དེ།
 དེ་ནི་ ལེགས་པའི་ ཅིག་ཤོས་ བྲགས།

དགའ་བའི་དགའ་སྟོན་བརྗོད་པ་ལ །

ཇི་ལྟར་ ཡ་ཡིག་ལ་སོགས་བཞིན ། ༥༥

पदसन्धानवृत्त्या च वाक्यार्थत्वेन वा पुनः ।

दुष्पतीतिकरं ग्राम्यं यथा या भवतः प्रिया ॥६६॥

ཆོག་གི་སཚམས་སྟེར་གྱིས་ ཉུགས་ དང་ །

སྟེར་ཡང་ ངག་དོན་དག་གིས་ ཀྱང་ །

ཉེས་བར་རྟོགས་བྱེད་ བྱོང་བ་སྟེ །

ཡ་ ལྟ་བ་དེ་ གྱི་ཡུ་ བཞིན ། ༥༦

परं प्रहृत्य विभ्रान्तः पुरुषो वीर्यवानिति ।

एव[6b]मादि न शंसन्ति मार्गयोरुभयोरपि ॥६७॥

གཞན་ལ་ བསྐྱུན་ནས་ སྟེས་བྱ་ བྱི །

བྱིས་ལྟར་བའི་ བི་ཤུན་ །

དེ་ལྟ་བུ་ སོགས་ ལས་དག་ བྱི །

གཉིས་ཀ་ལ་ ཡང་ བསྐྱུགས་ས་ཡིན ། ༥༧

भयिनीभगवत्यादि सर्वत्रैवानुमन्यते ।

विभक्तमिति माधुर्यमुच्यते सुकुमारता ॥६८॥

झ'ग'व'हुं' झु'गी'की ।

लेस'से'ग'स' ग'ग'हुं'स'स'ले'ग'की ।

दे'ह'र' झु'ग'व' क'स'व'सु ।

प'ग'हुं'ग'ले'ग'व' स'ग'द'व'सु ॥ ७८

अनिष्टुराक्षरप्रायं सुकुमारमिहेष्यते ।

बन्धशोधित्यदोषो हि *दर्शितः सर्वकोमले ॥६९॥

कु'व'स'ग'यी'ग'स'द'व' क' ।

प'ग'हुं'ग'ले'ग'व'की'हुं' १२२ ।

ग'द'सु'र' स'स'स'उ'द'स'की'व' की ।

सु'र'व'स'द'व'की'हुं'हुं'हुं'हुं' स'ग'द' ॥ ७९

मण्डलीकृत्य वर्हाणि कण्ठैर्मधुरगीतिभिः ।

कलापिनः प्रनृत्यन्ति काले जीमूतमालिनि ॥७०॥

སྒྲིན་གྱི་ཕྱེང་བ་ལྟ་ན་ ཏུས་སུ །
 སྒྲིན་པར་སྒྲོགས་པའི་མཁྱིན་ལྟ་བུ །
 མེ་བྱ་ཡི་ རི་ མཐུག་མ་དག །
 ལྷུས་ཕོར་བྱས་ནས་ གར་བྱེད་དོ ॥ ༡༠

इत्यनूर्जित एवार्थो नालंकारोपि तादृशः ।
 सुकुमारतयैवैतदारोहति सतां मुखं ॥७१॥

ཞེས་པ་ དོན་གྲས་ཉིད་མ་ཡིན །
 གྲིན་ ཡང་ དེ་འདྲ་ ཡོད་མིན་དེ །
 གིན་ཏུ་གཞིན་པ་ཉིད་ཀྱིས་ དེ །
 དམ་པ་ནས་སྒྱི་ ཁ་ ར་ གནས ॥ ༩

दीप्तमित्यपरैर्भूम्ना कृच्छ्रोद्यमपि बध्यते ।
 न्यक्षेण पक्षः क्षपितः क्षत्रियाणां क्षणादिति ॥७२॥

གསལ་ སྤྱིར་ གཞན་དག་ གལ་ཆེར་ རི །
 བརྗོད་པར་ དཀའ་བ་དག་ ཀྱང་ སྒྲོར །

རྒྱལ་རིགས་ནམས་ཀྱི་ རྩོགས་མཐའ་དག །

སྐད་ཅིག་གིས་ རི་ ཉམས་པར་བྱས ། ༡༢

अथर्व्यक्तिरनेयत्वमर्थस्य हरिणोद्धृता ।

भूः खुरभ्रुण्णनागासृग्लोहितादुदधेरिति ॥७३॥

དོན་གསལ་ དོན་བདག་མི་དགོས་ཉིད །

འཕྲོག་བྱེད་ཀྱིས་ རི་ ས་གཞི་དག །

མིག་པས་ བཅད་པའི་སྒྲ་བྲག་གིས །

དམར་བ་ རྩ་ཡི་གཏོར་ ལས་ཕྱང་ ། ༡༣

मही महावराहेण लोहितादुद्धृतोदधेः ।

इतीयत्ये[7a]व निर्दिष्टे नेयत्वमुरगासृजः ॥७४॥

ཕག་པ་ཆེན་པོ་ དག་གིས་ ས །

རྩ་གཏོར་དམར་པོ་དག་ལས་ཕྱང་ །

ཞེས་པ་ འདི་ཉིད་ བསྟན་པ་ནི །

ཕྱང་འགྲོའི་བྲག་ རི་ བདག་དགོས་ཉིད ། ༡༤

नेष्टशम्यद्भु मन्यन्ते मार्गयोरुभयोरपि ।

न हि प्रतीतिः सुमगा शब्दन्यायविलङ्घिनी ॥७५॥

ལམ་ ཉི་ གཉིས་ཀ་ དག་ལ་ ཡང་ །
 ཉིགས་པའི་སྐལ་བཟང་མི་ལྷན་ ཞིང་ །
 སྒྲ་ཡི་ཚུལ་ལས་འགོངས་གྱུར་པ་ །
 འདི་འདྲ་ སལ་ཆེར་ བཞེད་ས་ཡིན་ ॥ ༧༧

उत्कर्षवान्गुणः कश्चिदुक्तं यस्मिन्प्रतीयते ।
 तदुदाराह्वयं तेन सनाथा काव्यपद्धतिः ॥७६॥

གང་དུ་ འགའ་ཞིག་ བཟོད་པ་ལ་ །
 བྱད་འཕགས་ལྷན་པའི་ཡོན་ཏན་ཉིགས་ །
 དེ་ནི་ སྐྱ་ཆེར་བཟོད་དེ་ དེས་ །
 སྒྲ་ངག་ལམ་གྱི་ བཞེད་དང་བཅས་ ॥ ༧༦

अर्थिनां कृपणा हृष्टिस्त्वन्मुखे पतिता सकृत् ।
 तदवस्था पुनर्देव नान्यस्य मुखमीक्षते ॥७७॥

སྒྲིང་བ་རྣམས་ ཀྱི་ བཞེད་པའི་མིག་ །
 ལན་ཅིག་ བྱོད་ བཞེད་ལ་ ལྷང་བ་ །

ལྷ་ཅིག་གནས་སྐབས་དེ་ཡིས་སྒྲར།
གཞན་གྱི་གདོང་ལ་ལྷ་མ་ཡིན། ॥ ११

इति त्यागस्य वाक्येऽस्मिन्नुत्कर्षः साधु लक्ष्यते ।
अनेनैव पथान्यच्च समानन्यायमूह्यताम् ॥७८॥

ཅེས་པ་ཉིད་ཀྱི་ཚིག་འདྲ་ལ།
གདོང་བ་ཁྱད་འཕགས་ལགས་པ་མཆོན།
ལས་འདི་ཉིད་ཀྱིས་གཞན་དག་ཀྱང་།
རིགས་པ་མཚུངས་པས་དཔག་པར་བྱ། ॥ १२

अग्राज्यैर्विशेषणैर्युक्तमुदारं कैश्चिद्विष्यते ।
यथा लीलाम्बुजक्रीडासरोहेमाङ्गदादयः ॥७९॥

བསྐྱབས་པར་འོས་པའི་ཁྱད་པར་དང་།
ལྷ་པ་སྐྱ་ཆེར་འབའ་ཞིག་འདོད།
རིལ་པའི་ཚུ་སྤྱིས་ཅེ་དགའི་མཆོ།
གསེར་གྱི་སྐྱ་ལ་སོགས་པ་བཞིན། ॥ १३

ओजः समासभूयस्त्वमेतद्गद्यस्य जीवितम् ।

पद्येप्यदाक्षिणात्यानामिदमेकम्परायणम् ॥८०॥

བཟློན་པ་ ཚོག་ རྩུང་ མང་པོ་ ཉིད་ །

འདི་ནི་ ལྷུག་པ་ དག་གི་ གསོས་ །

ཚོགས་བཅད་ལ་ ཡང་ ལྷོ་ཕྱོགས་པ་ །

མེན་པ་ འདི་ཉིད་ ཀུའིག་ཕུ་ བཞིད་ ॥ ༨༠

तद्गुरुणां लघू[7b]नाञ्च बाहुल्याल्पत्वमिश्रणैः ।

उच्चावचप्रकारं सदृश्यमाख्यायिकादिषु ॥८१॥

དེ་ལ་ ལྷུ་ དང་ ཡང་པ་ རྣམས་ །

མང་ དང་ ཉུང་པ་ཉིད་ སྟེལ་པ་ །

མཐོ་དམན་གྱི་ ཉི་ རྣམ་པ་ དེ་ །

བཟློན་པ་ལ་སོགས་རྣམས་ལ་མཐོང་ ॥ ༨༡

अस्तमस्तकपर्यस्तसमस्तार्कांशुसंस्तरा ।

पीनस्तनस्थिताताम्रकम्रवस्त्रेव वारुणी ॥८२॥

ལྷ་བ་ཀྱི་རི་མགོར་ ལྷུང་བ་ ཡོ།
 མཐའ་དག་ ཉི་འོད་ མལ་སྟན་ཅན།
 མཁྱིམ་པ་འི་ལྷ་མ་ ལ་ གནས་པ་འི།
 ལོས་ དམར་ མཛོས་ བཞིན་ ལུ་ལྷན་མ ॥ ༤༢

इति पद्येपि पौरस्त्या बध्नन्त्योजस्विनीर्गिरः ।
 अन्ये त्वनाकुलं हृद्यमिच्छन्त्योजो गिरां यथा ॥८३॥
 ཅེས་པ་ བཟློན་དང་ལྷན་པ་འི་ཆོག།
 ཆོགས་བཅད་ལ་ ཡང་ ཤར་བ་ སྦྱོར།
 གཞན་དག་ འབྲུགས་མིན་ མཛོས་པ་ཡི།
 ཆོག་རྣམས་ བཟློན་པར་ འཛོད་དེ་ དཔེར ॥ ༤༣

पयोधरतटोत्संगलमसन्ध्यातपांशुका ।
 कस्य कामातुरं चेतो वादणी न करिष्यति ॥८४॥
 ལུ་འཛོན་ངོས་ཀྱི་ ཡང་ ན་ གནས།
 མཚམས་ཀྱི་ཉི་འོད་ ལོས་དང་ལྷན།

ཐུ་ཐུན་མ་ཡིས་ སུ་ཡི་ཡིད།

འདོད་པས་གཟེར་བར་བྱེད་མི་འགྱུར། ༥༥

कान्तं सर्वजगत्कान्तं लौकिकार्थाननिक्रमात् ।

तच्च वार्ताभिधानेषु वर्णनास्वपि विद्यते ॥८५॥

མཇེས་པ་ འཇིག་རྟེན་ རོན་དག་ ལས།

མ་འདས་ འགྲོ་ཀུན་ ལ་ མཇེས་པ་འོ།

དེ་ཡང་ གཏམ་གྱི་མངོན་བཛེད་ དང་།

བསྐྱབས་པ་ ལ་སོགས་རྣམས་ལའང་ *སྦྱར། ॥ ༥༦

गृहाणि नाम तान्येव तपोराशिभवाद्भूशः ।

सम्मावयति यान्येव पावनेः पादपांशुभिः ॥८६॥

དཀར་ཕུབ་པ་པོ་ ཁྱོད་འདྲ་ཡི།

ཞབས་ཀྱི་རྒྱལ་ རི་ གཙང་མ་ དག།

ཡང་དག་ བཏབ་པ་ གང་ ཡིན་པ།

དེ་དག་ ཁོ་ན་ ཇེས་པར་ ཁྱིམ། ॥ ༥༧

अनयोरनवद्याङ्गि स्तनयोर्जृम्भमाणयोः ।
अवकाशो न पर्याप्तस्तव बाहुलतान्तरं ॥८७॥

झुङ्खेद'लुस'उङ्' सुद'ग्री' ऋ ।
लम'पदे'दसि'पैद'वर'दम'दु ।
कु'स'रम' सुस' ददे'दम' मीस ।
मो'ल्लवस' छेद'वर' दगुर'स'पैङ् ॥ ८७

इति [8a]संभाव्यमेवेतद्विशेषाख्यानसंस्कृतं ।
कान्तं भवति सर्वस्य लोकयात्रानुवर्तिनः ॥८८॥

लेस'प' सुद'वर' वहेद'प' पौस ।
लेमस'सुद' दे'दम' सैद'प' छेद ।
ददे'म'देङ्'लुमस'ग्री'हेस'सु'ङ् ।
ददुम'प' मसस'उद' सहेस'वर' दगुर ॥ ८८

लोकातीत इवात्यर्थमध्यारोप्य विवक्षितः ।
योर्यस्तेनातितुष्यन्ति विदग्धा नेतरे यथा ॥८९॥

འཇིག་རྟེན་ འདས་ བཞིན་ བརྗོད་ འདོད་ ཀྱིས །

དོན་གང་ ཤིན་ཏུ་ བཞོད་ གྱུར་བ།

དེ་ཡིས་ མཁས་པ་ ཤིན་ཏུ་ རི །

ཆོས་འགྱུར་ ཅིག་ཤོས་ མ་ཡིན་ དཔེར ༥ ༤༠

देवधिष्ण्ययमिवाराध्यमद्यप्रभृति नो गृहम् ।

युष्मत्पादरजःपातघातनिःशेषकिल्बिषम् ॥६०॥

དང་ནས་ བརྒྱུང་སྟེ་ བདག་གི་བྱིས །

ལྷ་ཡི་བྱིས་ བཞིན་ བརྟེན་པར་ འེས །

བྱིད་ཀྱི་ ཞབས་རྒྱལ་ ལྷུང་བ་ ཡིས །

ཉེས་པ་ དག་ནི་ མ་ལུས་ བཀྱས ༥ ༤༡

अल्पस्त्रिर्मितमाकाशमनालोच्यैव वेधसा ।

इदमेवंविधममावि भवत्याः स्तनजृम्भणम् ॥६१॥

བྱིད་ཀྱི་ རྒྱ་མ་ འདི་ལྷ་བྱུར །

ནས་པར་སྐྱས་པར་འགྱུར་བ་འདི །

ངེས་པར་མ་བརྟགས་ བྱིད་པོ་ ཡིས །

ནས་མཁའ་ དག་ནི་ ལུང་ལུར་ ལྷུལ ༥ ༤༢

इदमत्युक्तिरित्युक्तमेतद्गौडोपलालितं ।

प्रस्थानं प्राक् प्राणीतन्तु सारमन्यस्य वर्त्मनः ॥६२॥

འདི་ནི་ ཏ་ཅང་ བཟློན་པ་ འདི །

གོ་ཏ་བ་ལ་ མཛོས་པར་ བཟློན །

འཇུག་པ་ ལྷ་མ་ གཞན་ གྱི་ནི །

ལས་ལ་ ལྷིང་པོ་ཉིད་དུ་ བཤད ॥ ༦༢

अन्यधर्मस्ततोऽन्यत्र लोकसीमानुरोधिना ।

सम्यगाधीयते यत्र स समाधिः स्मृतो यथा ॥६३॥

གཞན་གྱི་ཆོས་ དེ་ གཞན་དག་ལ །

འཇིག་རྟེན་ ལུགས་ཀྱི་ ཇེས་འབྲངས་ ནས །

དྲིང་ངེ་འཇིན་པར་བྱེད་པ་དེ །

དྲིང་ངེ་འཇིན་ དུ་ བཟློན་དེ་ དཔེར ॥ ༦༣

कुमुदानि निमीलन्ति कमलान्युन्मिषन्ति च ।

इति नेत्रक्रियाध्यासाल्लङ्घ्या [8b]तद्वाचिनी श्रुतिः ॥६४॥

ཀུ་མ་ད་ རི་ མིག་འཇུམ་ ཞིང་ །
 བདུ་དག་ ཀྱང་ མིག་འབྱེད་ ཅེས་ །
 མིག་གི་བྱ་བ་ བཀོད་པ་ ལས་ །
 དེ་ཡི་ བཟོད་བྱེད་ སྒྲ་དག་ ཐོབ་ ॥ ༧༧

निष्ठूतोद्गोर्णवान्तादि गौणवृत्तिव्यपाश्रयं ।
 अतिसुन्दरमन्यत्र ग्राम्यकक्षां विगाहते ॥६५॥

རིཏུ་ད་ དང་ ཡུདྲི་རྩི་ །
 སྒྲུགས་ མོགས་ བདགས་པའི་ འཇུག་ བདེན་པ་ །
 ཤིན་དུ་ མཛོས་དེ་ བཀའ་དུ་ རི་ །
 བོང་པ་ཉིད་ཀྱི་ རས་པ་ བདེན་ ॥ ༧༨

पद्यान्यर्काःशुनिष्ठूताः पीत्वा पावकविप्रुषः ।
 भूयो वमन्तीव मुखैरुद्गीणारुणरेणुभिः ॥६६॥

བདུས་ཉི་ཟེར་ སྒྲུགས་པ་ རསས་ །
 འཇུངས་ནས་ རྩལ་ དམར་ སྒྲུགས་པ་ཡི་ །

ཁ་ཡིས་དག་བྱེད་ཟེར་ས་ དག །

ཤིན་དུ་སྐྱགས་པར་བྱེད་པ་ བཞིན ༥ १७

इति हृद्यमहृद्यन्तु निष्ठोवति बधूरिति ।

युगपन्नैकधर्माणामध्यासश्च मतो यथा ॥६७॥

ཅེས་པ་ མཛོས་དེ་ མི་མཛོས་པ །

ཅུང་ས་ སྐྱགས་པར་བྱེད་ཅེས་པའོ །

ཅིག་ཅར་ ཉིད་དུ་ ཆོས་ ཏུ་ས །

བཞེད་པ་ དག་ ཀྱང་ འདོད་དེ་ དཔེར ༥ १८

गुरुगर्भभराक्लान्ताः स्तन त्र्योमेधपङ्क्तयः ।

अचलाभित्यकोत्सङ्गमिमाः समधिरोरते ॥६८॥

སྐྱེ་བའི་མང་ལ་ ཁར་གྱིས་ངལ་ཞིང་ །

འཁྱུན་པར་བྱེད་པ་ སྐྱིན་གྱི་སྡེང་ །

འདྲི་དག་ གཡོ་མེད་སྡིང་གི་ བྱི །

མང་བ་དག་དུ་ ཡང་དག་ཉལ ༥ १९

उत्संगशयनं सख्याः स्तननं गौरवह्वलः ।

इतीह गर्भिणीधर्मा बहवोन्यत्र दर्शिताः ॥६६॥

ग्रीवाशः शिरः पदः पदः ३५५ ५८ ।

३५५ ५८ ३५५ ५८ ५८ ।

उत्सः पः ३५५ ३५५ ३५५ ३५५ ।

३५५ ३५५ ३५५ ३५५ ३५५ ॥ ७७

तदेतन्काव्यसर्वस्वं समाधिर्नाम यो गुणः ।

कविसार्थः समग्रोपि तमेनमनुगच्छति ॥१००॥

३५५ ३५५ ३५५ ३५५ ३५५ ३५५ ।

३५५ ३५५ ३५५ ३५५ ३५५ ३५५ ।

३५५ ३५५ ३५५ ३५५ ३५५ ३५५ ।

३५५ ३५५ ३५५ ३५५ ३५५ ३५५ ॥ १००

इति मार्गद्वयं भिन्नं तत्स्वरूपनिरूपणात् ।

तद्भेदास्तु न शक्यन्ते वक्तुम्[9a]तिकवि स्थिताः ॥१०१॥

३५५ ३५५ ३५५ ३५५ ३५५ ३५५ ।

३५५ ३५५ ३५५ ३५५ ३५५ ३५५ ।

དེ་དག་ དབྱེ་བ་ ལྷན་ངག་མཁན །
 སོ་སོ་ལ་ གནས་ བཟོད་ མི་ནས ། ༡༠༡

इक्षुक्षीरगुडादीनां माधुर्यस्यान्तरमहत् ।
 तथापि न तदाख्यातुं सरस्वत्यापि शक्यते ॥१०२॥

བུར་ཤིང་འོ་མ་ བུར་སོགས་ ཀྱི །
 མངར་བ་ཉིད་ བྱི་ བྱད་བར་ཆེ །
 དེ་ལྟ་མོད་ཀྱི་ དེ་བཟོད་བར །
 དབྱངས་ཅན་མས་ ཀྱང་ ལྷས་མཁྱེན ། ༡༠༢

नैसर्गिकी च प्रतिभा श्रुतञ्च बहु निर्मलं ।
 अमन्दध्यामियोगोस्याः कारणं काव्यसम्पदः ॥१०३॥

རང་བཞིན་ གྱིས་གྲུབ་ སྒྲོབས་བ་ དང་ །
 མང་དུ་སྒྲོས་བ་ ཅི་མེད་ དང་ །
 མངོན་བར་ སྒྲོར་བ་མི་དམན་བ །
 ལྷན་ངག་ གན་སྤྲུམ་ཚོགས་བའི་གྱ ། ༡༠༣

न विद्यते यद्यपि पूर्ववासना गुणानुबन्धि प्रतिमानमद्भुत ।

श्रुतेन यत्नेन च वागुपासिता ध्रुवङ्करोत्येव कमप्यनुग्रह ॥१०४॥

གལ་དེ་ སྟོན་གྱི་བཟུང་ཆགས་ ཡོན་དྲ་ གྱིས།

ཆེས་འབྲེལ་ སྟོབས་པ་ མཉམ་བུ་ མེད་པ་ལའང།

ཐོས་ དང་ འབད་པ་ དག་གིས་ ངག་ བཅེན་ ན།

རི་ཞིག་ལྟར་ ཡང་ ངེས་པར་ ཆེས་འཛིན་བྱེད། ॥ १०८

तदस्तनन्दैरनिशं सरस्वती क्रमादुपास्या खलु कीर्त्तिमीप्सुभिः ।

कृशे कवित्वेपि जनाः कृतश्रमा विदग्धगोष्ठीषु विहर्तुमीशते ॥१०५॥

དེ་མཉམ་ བྱམས་འདོད་ནམས་ གྱིས་ དྲག་དུ་ ནི།

སྟོམས་ལས་ མེད་པར་ རིས་པས་ དབུངས་ཅན་ བཅེན།

སྟན་ངག་ རུང་བུ་ལ་ ཡང་ ངལ་བྱས་ མེ།

སེམས་པའི་འདུན་ས་དག་དུ་ འདུག་ལ་ དབང་ ॥ १०५

दण्डिनः कृतौ काव्यादर्शे मार्गविभागो नाम प्रथमः परिच्छेदः ॥

དབྱུག་པ་ཅན་གྱིས་ བྱས་པའི་ སྟན་ངག་སེ་ལོང་ལས་ ལས་ རྣམ་པར་

ཕྱི་བའི་ རྣམ་པར་བཅད་པ་ མྱེ་ དང་པོའོ། ॥

CHAPTER II

काव्यशोभाकरान्धर्मानलंकारान्प्रचक्षते ।

ते चाद्यापि विकल्प्यन्ते कस्तान् कात्स्न्येन [9b]वक्ष्यति ॥१॥

झुङ्गन् सङ्घेसं वरं सुदं वं धी ।

रेसं कससं सुङ्गं लेसं रवङ्गं वङ्गेङ्गं ।

रेङ्गे रङ्गङ्गं कसङ्गेङ्गं सुङ्गे ।

रेङ्गं सङ्गुसं सुङ्गं रङ्गं रङ्ग ॥ १

किन्तु बीजं विकल्पानां पूर्वाचार्यैः प्रदर्शितं ।

तदेव प्रतिसंस्कर्तुमयमस्मत्परिश्रमः ॥२॥

रेङ्गं सङ्गं कसङ्गेङ्गं सङ्गेङ्गेङ्गे ।

सुङ्गेङ्गेङ्गेङ्गेङ्गेङ्गेङ्गेङ्गेङ्गेङ्गे ।

रेङ्गेङ्गे रवङ्गेङ्गेङ्गेङ्गेङ्गेङ्गेङ्गे ।

रेङ्गेङ्गेङ्गेङ्गेङ्गेङ्गेङ्गेङ्गेङ्गेङ्गे ॥ २

काश्चिन्मार्गविभागार्थमुक्ताः प्रागप्यलंक्रियाः ।

साधारणमलंकारजात*मद्य प्रदर्श्यते ॥३॥

ལམ རི་ རྣམ་པར་དབྱེ་རོན་དུ །
 རྒྱན་ འགའ་ཞིག་ནི་ སྤར་ ཡང་ བསྟན །
 བྱེད་མེད་དག་དུ་ རྒྱན་ གྱི་ རི །
 རྒྱལ་མ་ འདི་ རབ་དུ་ བསྟན་པར་བྱ ༥ ༣

स्वभावाख्यानमुपमा रूपकं दीपकावृत्ती ।
 आक्षेपोर्थान्तरन्यासो व्यतिरेको विभावना ॥४॥

རང་བཞིན་ བརྗེད་ དང་ དཔེ་ དང་ རི །
 བཞུགས་ཅན་ བསལ་བྱེད་ བསྐྱོར་བ་ དང་ །
 འགོག་ དང་ རོན་བཞིན་བཞེད་པ་ དང་ །
 རྒྱལ་པ་ཅན་ དང་ སྤྱིད་པ་ཅན ༥ ༥

समासातिशयोक्त्येक्षा हेतुः सूक्ष्मो लवः क्रमः ।
 प्रेयो रसवद्वृजंस्त्रि पर्यायोक्तं समाहितम् ॥५॥

བསྐྱུས་ དང་ བལ་བྱུང་ རབ་བཅུགས་དང་ །
 གྱི་ དང་ སྤྱི་མོ་ ཅ་ དང་ རིམ །

དགའ་ དང་ ཉམས་ལྷན་ གཞི་བཟོད་ཅན།
 རྣམ་གྲངས་ བཟོད་ དང་ ཀླན་དུ་ བན ༥ ༥

उदात्तापह्नुतिस्त्रिष्टविशेषास्तुल्ययोगिता ।
 विरोधाप्रस्तुतस्तोत्रे व्याजस्तुतिनिदर्शने ॥६॥

གྱ་ཆེ་ བསྟོན་དོར་ སྤར་བ་ དང་ །
 བྱད་པར་ མཆོངས་པར་ སྟོར་བ་ དང་ །
 འགལ་ དང་ རྒྱབས་མེན་ བསྟོད་བ་ དང་ །
 རྩོལ་བསྟོད་ ཇེས་པར་ བསྟན་བ་ དང་ ॥ ༦

सहोक्तिः परिवृत्त्याशीः संसृष्टिरथ भाविकं ।
 इति वाचामलंकारा दर्शिताः पूर्वसूरिभिः ॥७॥

ལྷན་ཅིག་ བཟོད་ དང་ ཡོངས་བཟུངས་ ཤེས་
 རབ་སྟེལ་ དེ་ནས་ དགོངས་བ་ཅན།
 འདི་དག་ ཆོག་རྣམས་དག་གི་ རྟེན།
 སྟན་དུ་ སྟོན་གྱི་སྐལས་པས་ བསྟན ༥ ༧

नानावस्थं पदार्थानां रूपं साक्षाद्विवृण्वती ।

[10a] स्वभावोक्तिश्च जातिश्चेत्याद्या सालङ्कृतिर्यथा ॥८॥

དངེས་པོ་རྣམས་ཀྱི་ རང་བཞིན་ དང་ ।

གནས་སྐབས་ ལྷ་ཚོགས་ དངེས་གསལ་བྱེད་ ।

དེ་ནི་ རང་བཞིན་བཟོད་པ་ དང་ ।

རིགས་ ཞེས་ དང་བོའི་གྲུན་ ཡིན་ དཔེར ॥ ༨

तुण्डैराताम्रकुटिलैः पक्षैर्हरितकोमलैः ।

त्रिवर्णराजिभिः कण्ठैरेते मञ्जुगिरः शुकाः ॥९॥

སརྱ་ ཉི་ དམར་ ཞིང་ བྲག་པ་ དང་ ।

གཡོག་པ་ ལྷང་ ཞིང་ མཉེན་པ་ དང་ ।

སྒྲིན་པ་ ཁ་དོག་ གསུམ་འཕྲེང་ཅན་ ।

ནེ་ཙྱེ་ འདི་དག་ ཚོག་འཇམ་ལྡན་ ॥ ༩

कलकणितगर्भेण कण्ठेनाघूर्णितेक्षणः ।

पारावतः परिक्षिप्य रिरंसुश्रुम्बति प्रियाम् ॥१०॥

མགྲིན་པའི་ནང་ནས་ ལྷན་སྒྲོགས་ ཤིང་ །

མིག་ རི་ ཀུན་དུ་ འཕྲུལ་བ་ ཡི །

པག་རོན་ ཅི་འདོད་ དགའ་མ་ལ །

ཡོངས་སུ་བསྐོར་ནས་ མུ་དག་སྒྲོར་ ॥ ༡༠

वपुर्नङ्गेषु रोमाञ्चं कुर्वन्मनसि निर्वृति ।

नेत्रे चामीलयन्नेव प्रियास्पर्शः प्रवर्तते ॥११॥

དགའ་མ་ཡི་ རི་ རིག་པ་ འདྲ་ །

ལུས་ལ་ སྒྲ་ལོང་ ལྷས་བ་དང་ །

ཡིད་ རི་ བདེ་བར་བྱེད་པ་ དང་ །

མིག་དག་ ལུས་བར་བྱེད་ ཅིང་ འཇུག ॥ ༡༡

कण्ठे कालः करस्थेन कपालेनेन्दुशेखरः ।

जटाभिः क्षिग्धताम्राभिराविरासीद् वृषध्वजः ॥१२॥

མགྲིན་སྒྲོན་ ལག་ན་ཐོད་པ་ནི །

གསལ་བ་སྒྲ་བའི་ཅོད་པ་དང་ །

སྒྲུལ་ ཞིང་ དམར་བའི་ རལ་བ་ཅན་ །
 ཁྱུ་མཆོག་ སྒྲུལ་མཚན་ གསལ་བར་གྱུར་ ॥ १५

जातिक्रियागुणद्रव्यस्वभावाख्यानमीदृशम् ।
 शास्त्रेष्वस्यैव साम्राज्यं काव्येष्वप्येतदीप्सितम् ॥१३॥

རིགས་ དང་ བྱ་བ་ ཡོན་ཏན་ ཇམ་ །
 རང་བཞིན་ བཛོད་བ་ འདི་འདྲ་ འདི་ །
 བཟླ་ན་བཅོས་རྣམས་ལ་ སྒྲུལ་སྲིད་ཉིད་ །
 སྒྲུན་ངག་རྣམས་ལ་ སྒྲུལ་སྲིད་ཉིད་ ॥ १६

यथा कथंचित्सादृश्यं यत्रोद्भूतम्प्रतीयते ।
 उपमा नाम सा तस्याः प्रपञ्चोयं प्रदर्शयते ॥१४॥

ཇི་ལྟར་ཅི་ཞིག་ལྟར་ མཚུངས་བར་ །
 གསལ་བ་ གང་དུ་ ཉོགས་བྱེད་བ་ །
 དེ་ ཁི་ དབྱེ་ ཞེས་བྱ་ སྡེ་ དེའི་ །
 སྒྲེས་བ་ འདི་ཁི་ རབ་བཤད་བྱ་ ॥ १७

अमोखमिवाताम्रं मुग्धे करत[10b]लन्तव ।
इति धर्मोपमा साक्षात्तुल्यधर्मप्रकाशनात् ॥ १५॥

མཛེས་མ་ བྱིད་ཀྱི་ ལག་མཐིལ་ རི།
རྒྱུ་སྐྱེས་བཞིན་དུ་ རུང་ཟད་དམར།
ཅེས་པ་ ཆོས་དག་ དངོས་སུ་ རི།
མཆུངས་པའི་ཆོས་དག་བཟུན་ བྱེད་ཅོ་ ॥ १५

राजीवमिव ते वक्त्रं नेत्रे नीलोत्पले इव ।
इति प्रतीयमानंकधर्मा वस्तूपमैव सा ॥१६॥

བྱིད་ཀྱི་གདོང་ བཟླ་ རི་ བཞིན།
སྐྱེས་དག་ རྒྱུ་སྐྱེས་ བཞིན་པོ་ བཞིན།
ཞེས་པ་ ཆོས་གཅིག་ རྟོགས་བྱེད་པ།
དེ་ རི་ དངོས་པོའི་དག་ཉིད་ ཅོ་ ॥ १६

त्वदाननमिवोन्निद्रमरविन्दमभूदिति ।
सा प्रसिद्धिविपर्यासाद्विपर्यासोपमेष्यते ॥१७॥

ཁྱོད་ཀྱི་གདོང་བཞིན་བདུ་ནི།
 རྣམ་པར་གྱུས་པར་གུར་ཅེས་པ།
 དེ་ནི་གྲགས་པ་བརྒྱུག་པའི་ཤྱིར།
 བརྒྱུག་པའི་དབེ་ཞེས་བྱ་བར་འདོད། ॥ १७

तवाननमिवाम्मोजमम्मोजमिव ते मुखं ।
 इत्यन्योन्योपमा सेयमन्योन्योत्कर्षशंसिनी ॥१८॥

ཁྱོད་ཀྱི་གདོང་བཞིན་ཅུ་སྐྱེས་དེ།
 ཅུ་སྐྱེས་བཞིན་དུ་ཁྱོད་ཀྱི་ཞལ།
 ཞེས་པ་ཡན་ཅན་ཁྱད་འཕགས་ནི།
 བརྒྱུད་པར་བྱེད་འདི་ཡན་ཅན་དབེ། ॥ १८

त्वन्मुखं कमलेनैव तुल्यं नान्येन केनचित् ।
 इत्यन्यसाम्यव्यावृत्तेरियं सा नियमोपमा ॥१९॥

ཁྱོད་ཞལ་བདུ་ཉིད་དང་མཐུངས།
 བཞུན་ནི་འགའ་ཞིག་དང་ཡང་མིན།

ཞེས་པ་ མཚུངས་པ་ གཞན་ བརྒྱུག་ ལྟེན་ །

འདི་ མི་ ཇེས་པ་ཉིད་ཀྱི་དཔེ་ ॥ ༡༩

पश्चन्तावत्तवान्वेति मुखमन्यच्च तादृशं ।

अस्ति चेदस्तु तत्कारित्यसावनियमोपमा ॥२०॥

རེ་ཞིག་ ཁྱོད་ གདོང་ བརྒྱ་ཡི་ །

ཇེས་འགྲོ་ གཞན་ཡང་ ཇེ་འདྲ་བ་ །

གཤམ་ཏེ་ ཡོད་ན་ ཇེ་ ཁྱེད་འགྱུར་ །

ཞེས་པ་ འདི་མི་ ཇེས་མེད་དཔེ་ ॥ ༢༠

समुच्चयोपमाप्यस्ति न कान्त्येव मुखन्तव ।

हादनाख्येन चान्वेति कर्मणेन्दुमितीदृशी ॥२१॥

ཁྱོད་ གདོང་ མཇེས་པ་ ཁྱོད་ཡིས་ །

ཟླ་བའི་ ཇེས་སུ་ འགྲོ་མིན་ ཏེ་ །

དགའ་སྦྱོར་ ལས་ཀྱིས་ ཀྱང་ ཞེས་པ་ །

འདི་འདྲ་ བསྐྱས་པའི་ དཔེ་ ཡང་ ཡོད་ ॥ ༢༡

त्वय्येव त्वन्मुखं दृष्टं दृश्यते दिवि चन्द्रमाः ।
इयत्येव भिदा[।।a]नान्येत्यसावतिशयोपमा ॥२२॥

ཁྱད་ཀྱི་ལལ་ ཀི་ ཁྱིད་ཉིད་ལ་ །
མཐོང་གི་ ལླ་བ་ མཁའ་ལ་ མཐོང་ །
འདི་ཉིད་ ཁྱི་མ་ བ་དད་ དེ །
གཞན་མེད་ ཅེས་ འདི་ ཁྱད་པར་དགེ ། ५५

मय्येवास्या मुखश्रीरित्यलमिन्द्रोर्विकथनेः ।
पद्मेपि सा यदस्त्येवेत्यसावुत्प्रेक्षितोपमा ॥२३॥

དེ་ཡི་ བཞིན་དཔལ་ ང་ཉིད་ལ་ །
ཡོད་ ཅེས་ ལླ་བ་ ལྷོམས་ མི་དགོས་ །
བདུ་ལ་ ཡང་ དེ་ ཡོད་ ལྷིར་ །
ཞེས་པ་ འདི་ ཀི་ རབ་བདགས་དགེ ། ५३

यदि किञ्चिद्भवेत्पद्मं सुष्ठु विभ्रान्तलोचनं ।
तत्तु मुखध्रियन्धत्तामित्यसावद्भुतोपमा ॥२४॥

གལ་དེ་ བརྒྱ་ འགའ་ཞིག་ ལ །

སྒྲིན་ལེགས་ རྣམ་འཕྲུལ་ མིག་ལྔན་ ཅ །

ཁྱོད་ཀྱི་ བཞིན་གྱི་ དབལ་ འཛིན་ ཏི །

ཞེས་པ་ འདི་ ཅི་ མཛད་བྱུང་དཔེ ༥ ༢༥

शशीत्युत्प्रेक्ष्य तन्वङ्गि त्वन्मुखत्त्वन्मुखाशया ।

इन्दुमप्यनुधावामीत्येषा मोहोपमा स्मृता ॥२५॥

ལུས་ལྔ་ ཁྱོད་ གདོང་ ར་བང་ཅན །

ཞེས་ བདགས་ ཁྱོད་ གདོང་ བསམ་པ་ ཡིས་

ཟླ་བ་ཡི་ ཡང་ ཇེས་སུ་བསྟེགས །

ཞེས་ འདི་ མཛད་སྤྱོད་པའི་དཔེ་བྱུང་ བཤད ༥ ༢༥

किम्पद्ममन्तर्घ्रान्तालि किन्ते लोलेक्षणं मुखा ।

मम कोलायते चित्तमितीयं संशयोपमा ॥२६॥

པད་ནང་ བྱུང་བ་ འཁོར་རམ་ ཅི །

ཁྱོད་ གདོང་ ལ་ མིག་ གཡོ་ འམ་ ཅི །

བདག་གི་སེམས་ནི་རྣམ་པར་གཡོ།

ཞེས་པ་འདི་ནི་གྲེ་ཚེས་དཔེ ༥ ༢༩

न पद्मस्येन्दुनिग्राह्यस्येन्दुलज्जाकरी द्युतिः ।

अतस्त्वन्मुखमेवेदमित्यसौ निर्णयोपमा ॥२७॥

ཁླ་བ་སྤྲངས་བྱེད་མཛེས་པ་འདི།

ཁླ་བས་ཚར་གཙོད་བསྐྱེད་མིན།

དེ་ཤིར་ཁྱེད་ཀྱི་གདོང་ཉིད་དོ།

ཞེས་པ་འདི་ནི་ངེས་པའི་དཔེ ༥ ༢༧

शिशिरांशुप्रतिद्वन्द्धि श्रीमत्सुरभिगन्धि च ।

अम्भोजमिव ते वक्त्रमिति श्लेषोपमा मता ॥२८॥

བསེལ་ཟེར་ཅན་གྱི་དགྲ་ཁླ་དང་།

དཔལ་དང་ལྷན་དང་དྲི་བཟང་གིས།

ཁྱེད་ཀྱི་གདོང་ནི་ཅུ་སྤྲེས་བཞིན།

ཞེས་པ་སྤྲངས་པའི་དཔེ་ཅུ་བཤད ༥ ༢༨

सरूपशब्दवाच्यत्वात् सा समानोपमा यथा ।

[11b] बालेवोद्यानमालेयं सालकाननशोभिनी ॥२६॥

མཚུངས་པའི་སྒྲ་ཡིས་ བཟོད་བྱའི་ ལྷོར་ །

མཉམ་ཉིད་དཔེ་ ལྷོ་ ཇི་ལྟར་ བྱ་ །

སྒྲིད་ཚལ་སྒྲེང་ འདི་ བྱ་མོ་ བཞིན་ །

མཇོས་ལྟན་ སྒྲ་ལ་ཀྱ་ན་ན་ ॥ २०

पद्मं बहुरजश्चन्द्रः क्षयी ताम्रान्तवाननम् ।

समानमपि सोत्तेकमिति निन्दोपमा *मता ॥३०॥

པདྨ་ རྒྱལ་ མང་ ལྷོ་པ་ འཇོང་ །

དེ་དག་ ལས་ ཉི་ བྱོད་ཀྱི་བཞིན་ །

མཚུངས་པ་ ལ་ ཡང་ བྱད་པར་བཅས་ །

ཞེས་པ་ ལྷོད་པའི་ དཔེ་བྱ་ འདོད་ ॥ ३०

ब्रह्मणोप्युद्भवः पद्मश्चन्द्रः शम्भुशिरोधृतः ।

तौ तुल्यौ तद्वन्मुखेनेति सा प्रशंसोप*मेप्यते ॥३१॥

བསྐྱེས་ ཚངས་པ་དག་ཀྱང་སྤྱིད།
 རྒྱ་བ་ བདེ་འབྱུང་གཙུག་ན་ འཛིན།
 དེ་དག་ ཁྱོད་གདོང་ མཚུངས་ ཞེས་པ།
 དེ་ རྟི་ བསྐྱེས་པའི་དཔེར་ བཞིན་ རོ། ॥ ३१

चन्द्रेण त्वन्मुखं तुल्यमित्याचिख्यासु मे मनः ।
 सगुणो वास्तु दोषो वेत्याचिख्यासोपमां विदुः ॥३२॥

ཡོན་དན་ལྷན་ རྟི་ སྤྱིན་ འབྱུར་ ཡང་།
 ཁྱོད་གདོང་ རྒྱ་བ་ མཚུངས་ ཞེས་པ།
 བཞིན་འདོད་ བདག་གི་ ཡིད་ལ་ཡོད།
 ཞེས་པ་ བཞིན་འདོད་དཔེ་ ཞེས་ རིག་ ॥ ३२

शतपत्रं शरच्चन्द्रस्त्वदाननमिति त्रयम् ।
 परस्परविरोधीति सा विरोधोपमोदिता ॥३३॥

འདབ་བསྐྱེས་པ་ དང་ སྤྱིན་རྒྱ་ དང་།
 ཁྱོད་ཀྱི་ གདོང་ དང་ གསུམ་པོ་ རྟི།

པན་ཚུན་ རྣམ་པར་ འགལ་ ཞེས་པ།
 དེ་ནི་ འགལ་བའི་དཔེར་ བཟོད་དོ ॥ ༣༢

न जातु शक्तिरिन्द्रोस्ते मुखेन प्रतिगर्जितुम् ।
 कलङ्किनो जडस्येति प्रतिषेधोपमैव सा ॥३४॥

དེ་མ་ལྟན་ ཞིང་ ལྷན་གྱུར་པ།
 རྒྱ་བ་ལ་ རི་ བྱོད་ གདོང་ དང་།
 འགྲན་པའི་ རྣམ་པ་ རྣམ་ཡང་ མེད།
 ཅེས་པ་ དགག་པའི་དཔེ་ ཉིད་དོ ॥ ༣༣

मृगेषणाङ्कुत्त्वद्धकृन्मृगेणैवांकितः शशी ।
 तथापि सम एवासौ नोत्कर्षोति चद्रूपमा ॥३५॥

བྱོད་ གདོང་ རི་དྲགས་མིག་གིས་མཚན།
 རྒྱ་བ་ རི་དྲགས་ཉིད་ཀྱིས་ མཚན།
 དེ་ལྟ་ན་ ཡང་ འདི་ མཚུངས་ཉིད།
 ཁད་འཕགས་ མིན་ ཞེས་ མཛོས་པའི་དཔེ ॥ ༣༤

न पद्मं मुखमेवेदं न भृङ्गौ चक्षुषी[12a] इमे ।
इति विस्पष्टसादृश्यात्तत्त्वाख्यानोपमेव सा ॥३६॥

འདྲི་ནི་ བཞིན་ ཉིད་ བརྒྱ་ མིན་ །
འདྲི་དག་ སྤང་བ་ མ་ཡིན་ མིག་ །
ཅེས་པ་ རྣམ་གསལ་ མཚུངས་པ་ ལས
དེ་ནི་ དེ་ཉིད་བཞིན་པའི་དཔེ ། ३६

चन्द्रारविन्दयोः कान्तिमतिक्रम्य मुखन्तव ।
आत्मनैवाभवत्तुल्यमित्यसाधारणोपमा ॥३७॥

ཐྲེ་བ་ བརྒྱ་ དག་གི་ ཉི །
མཛེས་པ་ ལས་ འདས་ བྱིད་ཀྱི་ གདོང་ །
བདག་རང་ཉིད་ དང་ མཚུངས་པར་གྱུར་ །
ཞེས་པ་ ཐུན་མོང་མིན་པའི་དཔེ ། ३७

सर्वपद्मप्रभासारः समाहृत इव क्वचित् ।
त्वदाननं विभातीति तामभूतोपमां विदुः ॥३८॥

བརྒྱ་མཛེས་པའི་སྤྱིང་པོ་ཀུན།
 འགའ་ཞིག་དག་དུ་བསྐྱུས་པ་བཞིན།
 ཟྱོད་ཀྱི་གདོང་ནི་ནམ་མཛེས་ཞེས།
 དེ་ནི་བྱང་མིན་དཔེ་ཞེས་རིག༥ ༥

इन्द्रविम्बादिव विषं चन्द्रनादिव पावकः ।
 परुषा वागितो वक्त्रादित्यसम्भावितोपमा ॥३६॥

རྒྱ་བའི་གཟུགས་ལས་དུག་བཞིན་དང་།
 ཅན་ལས་ནི་མེ་བཞིན་དུ།
 ཞལ་འདི་ལས་ནི་ཐུབ་མཛེས་ཆོག།
 ཅེས་པ་སྤྱིད་པ་མིན་པའི་དཔེ༥

चन्दनोदकचन्द्रांशुचन्द्रकान्तादिशीतलः ।
 स्पशस्तवेत्यतिशय* प्रथयन्ती बहूपमा ॥३७॥

ཅན་ཅུ་དང་རྒྱ་ལོད་དང་།
 རྒྱ་ཤེལ་སྟགས་བཞིན་ཟྱོད་ཀྱི་ནི།

རེག་བ་ བསིལ་ ཞེས་ བྱེད་བར་ དག །

གསལ་བར་བྱེད་བ་ མང་བའི་དཔེ ལོ

चन्द्रविम्बादिवोत्कीर्णं पद्मगर्भादिवोद्धृतम् ।

तव तन्वङ्गि वदनमित्यसौ विक्रियोपमा ॥४१॥

ལུས་ཕྱ་ བྱེད་ གདོང་ བཞིན་རས་ མི

ཆེ་བའི་ དཀྱིལ་འཁོར་ ལས་ བདོན་ བཞིན །

བདེའི་ ཉང་ནས་ སྤྱང་བ་ བཞིན །

ཞེས་བ་ འདི་ མི་ རྣམ་འགྱུར་དཔེ ॥ ༤༡

पुष्ण्यातप इवाह्नीव पूषा व्योम्नीव वासरः ।

विक्रमस्त्वय्यधाल्लक्ष्मीमिति मालोपमैव सा ॥४२॥

འོད་ཀྱིས་ ཉི་བཞིན་ ཉི་མ་ ཡིས །

ཉིན་བཞིན་ ཉིན་གྱིས་ སམའ་ལ་ བཞིན །

རྣམ་པར་གཞོན་བས་ བྱེད་ལ་ དཔལ །

འཛིན་ ཞེས་ དེ་ནི་ སྤྱང་བའི་དཔེ ॥ ༤༢

वाक्यार्थेनेव वाक्यार्थः [12b]कोपि यद्युपमीयते ।
एकानेकेवशब्दत्वात् सा वाक्यार्थोपमा द्विधा ॥४३॥

གང་ཡང་ ངག་དོན་ ཉིད་ཀྱིས་ བློ་
གཡ་དྲ་ ངག་དོན་ ཉིད་འཇལ་ བློ་
ངག་དོན་དཔེ་ ལྟེ་ བཞིན་སྒྲུ་ བློ་
གཅིག་ དང་ དུ་མས་ དེ་རྣམ་གཉིས་ ॥ ༤༣

त्वदाननमधीराक्षमाविर्दशनदीधिति ।
भ्रमद्भृङ्गमिवालक्ष्यकेसरं भाति पङ्कजं ॥४४॥

བྱིད་ གདོང་ མིག་ བློ་ མི་བདན་ ཞིང་ ।
སོ་ཡི་འོད་ཟེར་ རབ་གསལ་བ་ ।
འདས་སྒྲིས་ སྤང་བ་ གཡོ་ལྷན་ བློ་
གེ་སར་ དག་གིས་ མཆོན་བཞིན་ མཛེས་ ॥ ༤༤

नलिन्या इव तन्वद्भृङ्गास्तस्याः पद्ममिवाननम् ।
मया मधुघ्रतेनेव पायम्पायमरम्यत ॥४५॥

བཟླ་ཅན་ བཞིན་ ལུས་ལྷ་མོ་ །
 བཟླ་ བཞིན་དུ་ རི་ཡི་ གཞོང་ །
 སྤྲོད་ཅི་ སྤྲོད་བས་ བཞིན་དུ་ རི་ །
 བདག་གེས་ འཕྲངས་ཤིང་ འཕྲངས་ཤིང་ཅེས ॥ ༧༥

वस्तु किञ्चिदुपन्यस्य न्यसनात् तत्सधर्मणः ।
 साम्यप्रतीतिरस्तीति प्रतिवस्तूपमा यथा ॥४६॥

དངོས་པོ་ འགའ་ཞིག་ ཉེར་བཞོད་ནས །
 རི་ཡི་ཆོས་ མཐུན་ རབ་བཞོད་བ །
 མཉམ་བ་ཉིད་དུ་ རྟོགས་བ་ཅན །
 ཟླ་བོ་ དངོས་པོའི་དཔེ་ ཡིན་ དཔེར ॥ ༧༦

नैकोपि त्वाद्भूशोद्यापि जायमानेषु राजसु ।
 ननु द्वितीयो नास्त्येव पारिजातस्य पादपः ॥४७॥

སྒྲུལ་པོ་རྣམས་ རྣེ་ སྤྲོས་གུར་ ཀྲང་ །
 ད་ལྟ་ བྱོད་ འདྲ་ གཅིག་ ཀྲང་ མེད །

ཡོངས་འདུ་དག་གི་ཀང་འཐུང་ བློ །

གཉིས་པ་ རེས་པར་ ཡོད་མ་ཡིན ། ༧༧

अधिकेन समाहृत्य हीनमेकक्रियाविधौ ।

यद्वद्भवन्ति स्मृता सेयन्तुल्ययोगोपमा यथा ॥४८॥

ལྷག་པས་ དམན་པ་ བྱ་བ་ཡི །

ཆོག་ གཅིག་ ལ་ རབ་བསྐྱས་ནས །

གང་ ལྷས་ དེ་ནི་ མཚུངས་པ་ དག །

སྦྱར་བའི་དཔེ་ཅུ་ བཤད་དེ་ དཔེར ། ༧༨

दिवो जागति रक्षायै पुलोमारिभुवो भवान् ।

असुरास्तेन हन्यन्ते सावलेपा नृपास्त्वया ॥४९॥

དུ་ལོ་མའི་དགྲ་ མཐོ་རིས་ དང་ །

བྱོད་ནི་ ས་སྤང་ མེལ་ཆེ་བྱེད །

དེ་ཡིས་ རྒྱལ་ས་ལྷན་ ལྷ་མིན་ དང་ །

། ཀྱིས་ མི་ཡི་ བདག་པོ་ འཛིནས ། ༧༩

कान्त्या चन्द्रमसं [13a] धान्ना सूर्यन्धेर्येण चार्णवम् ।

राजन्ननुकरोषीति सैषा हेतूपमा स्मृता ॥५०॥

कुलं चो महेसं वसं ब्रुवन् दन् ।

मन्त्रिं प्रीतिं प्रीतिं किं किं दन् ।

वदन् वसं कुमारे देवस्य सुते ।

उसं चो दन् किं कुदन् ५१ ॥ १०

न लिङ्गवचने मित्रे न होनाधिकतापि वा ।

उपमादूषणायालं यत्रोद्वेगो न धीमतां ॥५१॥

हो हन् किं दन् वसं दन् ।

देवस्य दन् वसं वसं दन् ।

वदन् दन् वसं दन् वसं दन् ।

दन् दन् वसं वसं दन् ॥ १२

स्त्रीव गच्छति षण्ढोयं वक्तव्या स्त्री पुमानिव ।

प्राणा इव प्रियोयम्मे विद्या धनमिवाजिता ॥५२॥

མ་ནིང་ འདི་འགྲོ་ བྱད་མེད་ བཞིན། །
 བྱད་མེད་ འདི་ སྒྲ་ སྒྲིས་པ་ བཞིན། །
 བདག་གི་ གྲོགས་ འདི་ སྒྲོག་རྣམས་ བཞིན། །
 དིག་པ་ རྣམས་ བསྐྱབས་ རྩེ་བཞིན་ནོ། ॥ ༡༥

भवानिव महीपाल देवराजो विराजने ।
 अलमंशुमतः कक्षमारोढुन्तेजसा नृपः ॥५३॥

ས་གཞི་སྒྲོང་པ་ བྱོད་ བཞིན་དུ། །
 ལྷ་ཡི་རྒྱལ་པོ་ རྣམ་པར་མཇེས། །
 འ་ཟེར་ཅན་གྱི་ རྣམ་པ་ལ། །
 མི་བདག་གཟི་ཡིས་ འགོང་བར་རྣམ། ॥ ༡༥

इत्येवमादि सौभाग्यं न जहात्येव जातुचित् ।
 अस्ति च कचिदुद्वेगः प्रयोगे वाग्विदां यथा ॥५४॥

ཞེས་པ་ དེ་ལྷ་བྱ་ ལ་སོགས། །
 སྒྲལ་བཟང་ རྣམ་ཡང་ གཏོང་མིན་ཉིད། །

རི་བ་ འགའ་ལ་ འག་རིག་ རྣམས་ །
 མི་དགེས་པ་ ཡོད་ ཇི་ལྟར་ན་ ॥ ༡༯

हंसीव धवलश्चन्द्रः सरांसीवामलं नमः ।
 भर्तृभक्तो भटः श्वेव खद्योतो भाति भानुवत् ॥५५॥

ངང་མོ་ བཞིན་དུ་ རྒྱ་བ་ དཀར་ །
 མཚོ་ རྣམས་ བཞིན་དུ་ མཁའ་རི་མེད་ །
 བྱི་ བཞིན་ དཔའ་ལོ་ ཇི་ལ་ གས་ །
 ཉི་མ་ བཞིན་དུ་ མེ་བྱིར་ གསལ་ ॥ ༡༧

ईदृशं वर्ज्यते सद्भिः कारणं त्वन्न चिन्त्यताम् ।
 इववद्वायथाशब्दाः समाननिभ[13b]सन्निभाः ॥५६॥

འདི་འདྲ་ སྤངས་ཏི་ མཁའ་རྣམས་ ཀྱིས་ །
 བྱི་ ཡང་ འདིར་ ཉི་ བསམ་པར་བྱེས་ །
 བཞིན་ལྟར་ལྟ་བུ་ཇི་ལྟར་སྤྲོ་ །
 མཐུན་མཚུངས་ཡང་དག་མཚུངས་ དང་ མཉམ་ ॥ ༡༩

तुल्यसंकाशनीकाशप्रकाशप्रतिरूपकाः ।

प्रतिपक्षप्रतिद्वन्द्वप्रत्यनीकविरोधिनः ॥५७॥

ཡང་དག་གསལ་དང་ངེས་པར་གསལ །

རབ་གསལ་གཟུགས་ཀྱི་ཁློ་བོ་དང་ །

གཉིན་པོ་དང་ནི་དག་ཁློ་དང་ །

སོ་སོར་རྟོག་དང་འགལ་དང་འདྲ ॥ ५७

सदृक्सदृशसंवादिसजातीयानुवादिनः ।

प्रतिविम्बप्रतिच्छन्दसरूपसमसम्मिताः ॥५८॥

བཟླ་བཅས་དང་ནི་བསྐྱུ་བ་དང་ །

རིགས་མཐུན་རྗེས་སུ་སྐྱུ་བ་དང་ །

གཟུགས་བརྟན་དང་ནི་སོ་སོར་སྟེན །

གཟུགས་མཚུངས་མཉམ་དང་ཡང་དག་འཇལ ॥ ५८

सलक्षणसदृक्षाभसपक्षोपमितोपमाः ।

कल्पदेशीयदेश्यादिः प्रख्यप्रतिनिधी अपि ॥५९॥

མཚན་ཉིད་མཐུན་འདྲ་མཚུངས་པ་དང་།
 མཐུན་ཕྱོགས་དཔེར་བྱས་དཔེ་དང་རྟོག་།
 དམན་དང་ཅུང་ཟད་དམན་སོགས་དང་།
 རབ་དུ་སྒྲ་དང་སེ་སེར་བརྒྲེག་ ॥ ༡༠

सवर्णतुलितौ शब्दौ ये चान्यूनार्थवाचिनः ।
 समासश्च बहुव्रीहिः शशाङ्कवदनादिषु ॥६०॥

རིགས་མཐུན་མཉམ་བྱས་སྒྲ་དག་དང་།
 གང་ཡང་དམན་མིན་དོན་ཅན་ཆོག་།
 འབྲུ་མང་པོ་ཡི་ཆོག་སྟེད་དང་།
 རི་བོང་མཚན་མའི་གདོང་ཅན་སོགས་ ॥ ༦༠

स्पर्धते जयति द्वेष्टि द्रुह्यति प्रतिगर्जति ।
 आक्रोशत्यवजानाति कदर्थयति निन्दति ॥६१॥

འབྲན་དང་རྒྱལ་དང་སྤང་བ་དང་།
 འཁ་དང་མི་མཐུན་སྒྲོགས་པ་དང་།

འཕྲུ་བ་ ནང་ རི་ འཕྲུ་བ་ ནང་ །

སྤྲ་འཕེབས་བྱེད་ ནང་ སྤོད་བ་ ནང་ ॥ ༩༡

विडम्बयति संलुधे हसतीर्ष्यत्यसूयति ।

तस्य मुष्णाति सौभाग्यं तस्य कान्तिं विलुम्पति ॥६२॥

ཙོ་འདྲི་བ་ ནང་ འགོག་བ་ ནང་ །

གོད་ ནང་ སྤྲག་དོག་ མི་བཟོད་ ནང་ །

དེ་ཡི་ སྤལ་བཟང་ འཕྲོག་བྱེད་ ནང་ །

དེ་ཡི་ མཇོས་བ་ ཟུམ་བྱེད་ ནང་ ॥ ༩༢

तेन सार्धं विगृह्णाति तुलान्तेना]14a]धिरोहति ।

तत्पद्व्यां पदं धत्ते तस्य कक्षां विगाहते ॥६३॥

དེ་དང་ འགྲན་ ལས་ ཚར་གཙོད་ ནང་ །

དེ་དང་མཚུངས་ ལས་ ལྷག་པར་འཇགས་ །

དེ་ཡི་ཇེས་སུ་ ཀང་འཇོག་ ནང་ །

དེ་ཡི་ནས་བ་ ལ་ འཇོག་ ནང་ ॥ ༩༣

तमन्वेत्यनुबध्नाति तच्छीलन्तन्निषेधति ।

तस्य चानुकरोतीति शब्दाः सादृश्यसूचिनः ॥६४॥

དེ་ཡི་ཇེས་འགོ་ཇེས་སུ་འཛིང་།

དེ་ཡི་ངང་ཚུལ་ དེ་འགོག་ དང་།

དེ་ཡི་ཇེས་སུ་བྱེད་ ཅེས་བའི།

སྒྲ་ རྣམས་ མཚུངས་པ་ གསལ་བྱེད་ཡིན། ॥ ༦༥

उपमैव तिरोभूतभेदा रूपकमिष्यते ।

यथा बाहुलता पाणिपद्मञ्चरणपल्लवम् ॥६५॥

ཐ་དད་ སྒྲ་མིན་གྱིང་བ་ཡི།

དཔེ་ཉིད་ དག་ རི་ གཞུགས་ཅན་ འདོད།

དབྱང་པ་ འཁྲི་ཤིང་ལག་པ་ རི།

བསྒྲ་ཀླང་པ་ཡལ་འདབ་པོ། ॥ ༦༦

अंगुल्यः पल्लवान्यासन् कुसुमानि नखाचिषः ।

बाहुलते वसन्तश्रीस्त्वन्नः प्रत्यक्षचारिणी ॥६६॥

ལག་པའི་འབྲི་ཤིང་ སོར་མོ་ རྣམས།
 ཡལ་འདབ་ སེན་མོའི་འོད་ཟེར་ ཅི།
 མེ་དོག་དུ་གུར་ དཔྱིད་ཀྱི་དབའ།
 བྱིད་ནི་ དེད་ལ་ མངོན་སུམ་གྱུ། ॥ ༩༩

इत्येतदसमस्ताख्यं समस्तं पूर्वरूपकं ।
 स्मितम्मुखे दोज्योत्स्नेति समस्तव्यस्तरूपकं ॥ ६ ॥

ཞེས་པ་ འདི་ནི་ མ་བསྐྱུགས་དེ།
 སྤྲ་མ་ བསྐྱུས་པའི་གཟུགས་ཅན་ཙོ།
 བཞིན་ རྩ་ འཇུམ་པའི་རྩ་འོད་ཅེས།
 གཟུགས་ཅན་ བསྐྱུས་ དང་ མ་བསྐྱུས་པའོ། ॥ ༩༩

ताम्राङ्गुलिदलश्रेणि नखदीधितिकेसरं ।
 ध्रियते मूर्ध्नि भूपालैर्भवच्चरणपङ्कजं ॥ ६ ॥

སོར་མོ་དམར་པའི་ འདབ་ཟེང་དང་།
 སེན་མོའི་འོད་ཀྱི་ གེ་སར་ཅན།

ཁྱིེ་ཀྱེ་ འབས་ཀྱི་ ལུ་སྒྲེས་ནི།
ས་སྒྲོང་རྣམས་ཀྱི་ སྤྱི་བོར་ འཛིན། ॥ ༩༤

अंगुल्यादौ दलादित्वं पादे चारोप्य पद्यताम् ।
तद्योग्यस्थानविन्यासादेतत्सकलरूपकम् ॥६६॥

སོར་མོ་ ལ་སོགས་ འདབ་ སོགས་ དང་།
ཀང་བས་ བརྒྱ་ཉིད་ བྱས་ནས།
དེ་འོས་ བཀས་སུ་ རྣམ་བཀོད་བ།
འདི་ནི་ མཐའ་དག་ བཟུགས་ཅན་ཉིད། ॥ ༩༥

[14b] अकस्मादेव ते जण्डि स्फुरिताधरणल्लवम् ।
मूखं मक्ताल्लवो धत्ते घर्मात्मःकणमञ्जरीः ॥७०॥

གཏུས་མོ་ སྒྲོ་བུར་ ཉིད་དུ་ནི།
ཁྱིེ་གདོང་ མཆུ་ཡི་ཡལ་འདབ་ བལོ་
རྒྱལ་གྱི་ཆུ་ཡི་ཐིག་བལྟི།
དོག་བ་ ཟུ་དིག་ འོད་ཅན་ འཛིན། ॥ ༧༠

मञ्जरीकृत्य घर्मांस्तु पल्लवीकृत्य चाधरं ।
नान्यथा कृतमन्त्रास्यमतोवयवरूपकं ।७१॥

འདིར་ནི་ རྩལ་ཆུ་ རོག་པར་ བྱས། །
མཆུ་ཡང་ ཡལ་འདབ་ཉིད་ བྱས་ཀྱི། །
གཤོང་ནི་ རྣམ་པ་ གཞན་ མ་བྱས། །
དེ་ཕྱིར་ ར་གས་ གཟུགས་ཅན་ནོ། ॥ ७१

वह्निनभ्रु गलद्धर्मजलमालोहितेक्षणम् ।
विवृणोति मदावस्थामिदं वदनपङ्कजम् ॥७२॥

གཤོང་པའི་ འདས་སྐྱེས་ སྤྱིན་འཁྱིག་ ཅིང་། །
རྩལ་གྱི་ཆུ་ ཟག་པ་ དང་། །
མིག་དག་ ཀྱན་ཏུ་ དམར་པ་ འདི། །
ཁྱེས་པའི་གནས་སྐབས་ གསལ་བར་བྱེད། ॥ ७२

अधिकृत्य मुखाङ्गानि मुखमेवारविन्दताम् ।
आसीद्गमितमन्त्रेदमतोवयवरूपकम् ॥७३॥

འདིར་ནི་ གདོང་བའི་ཆ་ཤས་དག །
 རྣམ་འགྱུར་ མ་བྱས་ གདོང་བ་ཉིད །
 བརྒྱར་ བཞོད་བྱས་ དེས་ན་ འདི །
 ཆ་ཤས་ཅན་གྱི་ གཟུགས་ཅན་ནོ ༥ ༧༢

मदपाटलगण्डेन रक्तेजोत्पलेन ते ।
 मुखेन मुखे सोप्येष जनो रागमयः कृतः ॥७४॥

མཛེས་མ་ སྟེན་བའི་ འཁྱུར་ཆོས་དམར་ །
 མིག་གི་ ཞུགས་ དམར་པོ་ཅན་ །
 བྱིད་ཀྱི་ གདོང་གིས་ སྐྱེ་བ་ནི །
 འདི་ཡང་ དམར་བའི་ རང་བཞིན་ བྱས་ ॥ ༧༣

एकाङ्गरूपकञ्चैतदेवं द्विप्रभृतीनि च ।
 अङ्गानि रूपयन्त्यत्र योगायोगौ भिदाकरौ ॥७५॥

དེ་ལྟར་ འདིར་ནི་ གཉིས་ སོགས་ཀྱི །
 ཡན་ལག་ རྣམས་ ཀྱང་ གསལ་བྱེད་བ་ །

འདི་ནི་ ཡན་ལག་གཅིག་གཟུགས་ཅན།

ལྷན་དང་མི་ལྷན་ བ་དང་བྱེད། ॥ ८१

स्मितपुष्पोज्ज्वलं लोलनेत्रभृंगमिदं मुखं ।

इति [15a] पुष्पद्विरेफाणां सङ्गत्या युक्तरूपकं ॥७३॥

གདོང་ འདི་ འཇུ་ས་པའི་ མི་དོག་འབར།

གཡོ་བའི་ མིག་གི་ བྱང་བ་ཅན།

ཞེས་པ་ མི་དོག་ བྱང་བ་ དག།

འགྲོགས་པས་ལྷན་པའི་གཟུགས་ཅན་ནོ། ॥ ८२

इदमाद्रस्मितज्योत्स्नं क्षिग्धनेत्रोत्पलं मुखं ।

इति ज्योत्स्नोत्पलायोगादयुक्तनाम रूपकम् ॥७७॥

གདོང་ འདི་ འཇུ་ས་ གཤེར་ རླ་འོད་དང་།

སྒྲུ་ས་པའི་ མིག་གི་ རྩུ་ལ་ཅན།

རླ་འོད་ རྩུ་ལ་ མི་འོས་པས།

འོས་མིན་ཞེས་པའི་ གཟུགས་ཅན་ནོ། ॥ ८३

रूपणादङ्गिनोङ्गानां रूपणारूपणाश्रयात् ।

रूपकं विषमं नाम ललितं जायते यथा ॥७८॥

ཡན་ལག་ཅན་གཟུགས་ ཡན་ལག་ རྣམས་ ।

གཟུགས་བྱས་ གཟུགས་སྤྱུ་མ་བྱས་ལ་ ।

བརྟན་པ་ མི་མཉམ་པ་ ཞེས་བའི་ ।

གཟུགས་ཅན་ མཛེས་པ་ ཡིན་ཏེ་ དཔེར་ ॥ १८

मदरक्तकपोलेन मन्मथस्त्वन्मुखेन्दुना ।

नतिते ध्रूलतेनालं मर्दितुम्भुवनत्रयं ॥७९॥

སྟོས་བའི་ མཁའ་རྩོམ་རབ་ དཔེར་ཞིང་ ।

སྒྲིན་མའི་འཁྲི་ཤིང་ གར་བྱེད་པ་ ।

ཁྱོད་ གདོང་ རྩེ་བས་ ཡིད་སྤུབ་ཀྱིས་ ।

འཛིག་རྟོན་ གསུམ་པོ་ གཞོམ་པར་རུས་ ॥ १९

हरिपादः शिरोलग्नजङ्घुकन्याजलांशुकः ।

जयत्यसुरनिःशंकसुरानन्दोत्सवध्वजः ॥८०॥

ཇ་རྒྱའི་བྱ་མོའི་ཚུ་གོས་ ནི །

འཕྲོག་བྱེད་ ཀང་པའི་རྩེར་ཐུན་པ །

ལྷ་མིན་ རྟོག་མེད་ལྷ་དགའ་བའི །

དགའ་ཕྱོག་རྒྱལ་མཚན་ རྒྱལ་གྱུར་ཅིག

विशेषेणसमग्रस्य रूपं केतोर्यदीदृशं ।

पादे तदर्पणादेतत् सविशेषणरूपकं ॥८१॥

གང་ཞིག་ བྱད་པར་ཚོགས་པ་ཡི །

གཟུགས་ཀྱི་རྒྱལ་མཚན་ འདི་འདྲ་བ །

དེ་ནི་ ཀང་པ་ ལ་ བཞོད་ དེ །

བྱད་པར་དང་བཅས་གཟུགས་ཅན་ནོ ॥ ༮

न मीलयति पद्मानि न नभोप्यवगाहते ।

त्वन्मुखेन्दुर्ममासूनां हरणायैव प [15b] श्यति ॥८२॥

པདྨ་ནམས་ནི་ མི་རྩམ་ ཞིང་ །

ནམ་མཁའ་ལ་ ཡང་ མི་འགྲོ་བ །

ཁྱེད་གདོང་ལྷ་བས་ བདག་གི་ནི །
 སྒོག་ཆས་ས་ འཕྲོག་པ་ ཉིད་དུ་ བཞུ ॥ ~१

अक्रिया चन्द्रकार्याणामन्यकार्यस्य च क्रिया ।
 अत्र सन्दर्श्यते तस्माद्विरुद्धं नाम रूपकं ॥८३॥

ལྷ་བའི་ བྱ་བ་ བྱ་མིན་ དང་ །
 གཞན་ གྱི་བྱ་བའི་ བྱ་བ་ འདྲིར་ །
 ཡང་དག་ བཞུན་ ཉི་ དེ་ ཡི་ སྒྱིར་ །
 འགལ་བ་ ཉེས་བྱའི་ གཞུགས་ཅན་ནོ ॥ ८३

गाम्भीर्येण समुद्रोसि गौरवेणासि पर्वतः ।
 कामदत्त्वाच्च लोकानामसि त्वं कल्पपादपः ॥८४॥

ཁྱེད་ནི་ ཟབ་བས་ཀྱི་མཚོ་དང་ །
 བརྗོང་བ་ ཉིད་ ཀྱིས་ རི་བོ་ ཡིན་ །
 འཇིག་རྟེན་ ཆས་ས་ལ་ འདོད་པ་ནི་ །
 སྒྱུར་ སྒྱིར་ དགག་ བསམ་ཀྱང་འཁྱུང་ངོ་ ॥ ८४

गाम्भीर्यप्रमुखैरत्र हेतुभिः सागरो गिरिः ।

कल्पद्रुमश्च क्रियते तदिदं हेतुरूपकं ॥८५॥

འདིར་ནི་ ཟབ་པ་ལ་སྟོགས་པའི །

སྐུ་ནས་ས་ དག་གིས་ སྐུ་མཆོ་ རི །

དཔག་ བསས་ཤིང་ ཡང་ བྱེད་བས་ན །

འདི་ནི་ སྐུ་ཡི་གཞུགས་ཅན་ནོ ॥ ८५

राजहंसापभोगार्हं भ्रमरप्रार्थ्यसौरभं ।

सखि वक्ताम्बुजमिदन्तवेति श्लिष्टरूपकं ॥८६॥

སྟོགས་མོ་ བྱེད་ཀྱི་ གདོང་ བད་འདི །

རྒྱ་ཚུགས་ས་སས་ ཉེར་སྤྱད་འོས །

རྒྱ་ཞིས་ བྱང་བས་དོན་ གཉེར་འོས །

ཞིས་པ་ སྤྱར་བའི་གཞུགས་ཅན་ནོ ॥ ८६

इष्टं साधर्म्यं वैधर्म्यदर्शनाद्गौणमुख्ययोः ।

उपमान्यतिरेकाख्यं रूपकद्वितयं यथा ॥८७॥

གཙོ་བོ་དང་ནི་ཕལ་པ་ལ །

ཆོས་མཐུན་ ཆོས་མི་མཐུན་ མཐོང་བས །

དཔེ་དང་ རྟོག་པ་ཅན་ ཉེས་པའི །

གཟུགས་ཅན་ རྣམ་པ་གཉིས་ འདོད་ དཔེར ༥ ༥༡

अयमालोहितच्छायो मदेन मुखचन्द्रमाः ।

मग्नद्वोदयरागस्य चन्द्रस्य प्रतिगर्जति ॥८८॥

མྱོས་པས་ ཀྱན་དུ་ དཔར་བ་ ཡོས །

བཀའ་པ་ བཞིན་ གྱི་ རྩ་བ་ འདི །

འཆར་ཀའི་ དཔར་བ་ པན་ཆོགས་པའི །

རྩ་བ་ལ་ནི་ རབ་དུ་འབྱན ༥ ༥༢

चन्द्रमाः पीयते देवैर्मया त्वन्मुखचन्द्रमाः ।

असमप्रोप्यसौ [16a] शश्वदयमापूर्णमण्डलः ॥८९॥

ལྷ་ རྣམས་ ཀྱིས་ ནི་ རྩ་བ་ འཐུངས །

བདག་གིས་ ཁྱོད་གཤོང་རྩ་བ་ འཐུངས །

འདི་ནི་ གང་བ་ མ་ཡིན་ ཡང་ །
 འདི་ནི་ དག་ཏུ་ དཀྱིལ་འཁོར་ རྩོགས། ॥ ༤༠

मुखचन्द्रस्य चन्द्रत्वमित्थमन्योपतापिनः ।
 न ते सुन्दरि संवादीत्येतदाक्षेपरूपकं ॥६०॥

སེམས་མ་ ཁྱོད་ གཤོང་ ཟླ་བ་ནི་ །
 འདི་ལྟར་ གཞན་ དག་ གཏུང་བྱེད་བས། །
 ཟླ་བ་ཉིད་ཏུ་ བརྩོད་མིན་ ཞེས། །
 དེ་ནི་ སྤང་བའི་ གཟུགས་ཅན་ནོ། ॥ ༤༠

मुखेन्दुरपि ते चण्डि मां निदहति निदयं ।
 भाग्यदोषान्ममैवेति तत्समाधानरूपकं ॥६१॥

གཏུམ་མོ་ ཁྱོད་ གཤོང་ ཟླ་བས་ ཀྱང་ །
 བརྩེ་བ་མེད་པར་ བདག་ སྤྲེག་བ། །
 བདག་ཉིད་ སྐལ་བ་ ཉིད་ཀྱི་ སྒྲིན་ །
 ཞེས་འདི་ མཉམ་འཛོག་ གཟུགས་ཅན་ནོ། ॥ ༤༡

मुखपङ्कजर्हस्मिन् भूलतानर्तकी तव ।
लीलानृत्यं करोतीति रम्यं रूपकरूपकं ॥६२॥

ཁྱོད་གདོང་ འདམ་སྒྲེས་ རོར་ འདིར །
སྒྲིན་མའི་ འབྲི་ཡིང་ གར་མཁན་མ །
རོལ་སྒྲེག་ དགའ་བས་ གར་བྱེད་དོ །
ཞེས་པ་ གཟུགས་ཅན་གྱི་གཟུགས་ཅན ༥ ༦༢

नैतन्मुखमिदम्पद्मं न नेत्रे भ्रमराविमौ ।
पतानि केसराण्येव नैता दन्तार्चिस्तव ॥६३॥

འདི་ནི་ གདོང་མིན་ འདི་ བརྒྱ །
འདི་དག་ མིག་མིན་ འདི་ བྱང་བ །
འདི་ རྣམས་ ག་སར་ ཉིད་ ཡིན་ འདི །
ཁྱོད་གྱི་ སོ་ཡི་ འོད་ཟེར་ མིན ༥ ༦༣

मुखादित्वं निवर्त्यैव पद्मादित्वेन रूपणात् ।
उद्भावितागुणोत्कर्षन्तस्त्वापह्वरूपकं ॥६४॥

གདོང་ ལ་སོགས་པ་ཉིད་ བསྐྱོག་སྟེ །
 བུར་ ལ་སོགས་ གཞུགས་བྱས་པས །
 ཡོན་ཏན་ བྱད་འཕགས་ གསལ་བྱད་པ
 དེ་ཉིད་ བསྐྱོན་དོར་ གཞུགས་ཅན་ཙམ་ ॥ ༩༩

न पर्यन्तो विकल्पानां रूपकोपमयोरतः ।
 दिङ्मात्रं दर्शितं धीरैरनुक्तमनुमीयताम् ॥९५॥

གཞུགས་ཅན་དཔེ་ཡི་ རྣམ་དོག་ རྣམས །
 མཐའ་ཡོད་ས་ཡིན་ དེ་ཡི་ལྗོངས་ །
 རྩོད་པར་ རྣམས་ཀྱི་ རྟོགས་ཙམ་ བསྟན །
 མ་བརྗོད་ རྩེས་སུ་དཔག་བར་བྱ ། ༡༠

[16b] जातिक्रियागुणद्रव्यवाचिनैकत्र वर्तिना
 सर्ववाक्योपकारश्चेत् तमाहुर्दीपकं यथा ॥९६॥

རིགས་ དང་ བྱ་བ་ ཡོན་ཏན་ རྩེས །
 རྟོག་ གཞུག་ ལ་ནི་ གནས་པ་ ཡིས །

གལ་དེ་ ངག་ ཀུན་ལ་ གན་ན །
 དེ་ནི་ གསལ་བྱེད་དུ་བརྗོད་ དཔེར ༥ ॥ ७७

पवनो दक्षिणः पणं जीर्णं हरति वीरुधाम् ।
 नवाय च नताङ्गीनाम् मानभङ्गाय कल्पते ॥६७॥

ལྷོ་ཡོ་རྒྱུང་ གོས་ འཁྲི་གིང་གི །
 འདབ་མ་རྗོད་པ་ ལྷགས་པར་བྱད །
 དུད་པའི་ལུས་ཅན་མ་རྣམས་ཀྱི །
 ཁྱེད་མ་པ་ གསར་དུ་ འཛོམས་པར་བྱེད ༥ ॥ ७८

चरन्ति चतुरस्रभोधिबेलोद्यानेषु दन्तिनः ।
 चक्रवालद्रिकुञ्जेषु कुन्दभासो गुणाश्च ते ॥६८॥

གྲོ་འོ་ ལུ་གཏེར་ བཞི་ ངོགས་ཀྱི །
 སྒྱེད་མོས་ཚལ་དུ་ སོ་ཅན་དེ །
 ཁྱེད་ལུག་ རི་བོའི་ ཁྱེད་སུ་ ཡང་ །
 ཁྱེད་ཀྱི་ ཡོན་ཏན་ ཀུན་འོ་ འོད ༥ ॥ ७९

श्यामलाः प्रावृषेण्याभिर्दिशो जीमूतपङ्क्तिभिः ।

भुवश्च सुकुमाराभिर्नवशाब्जवलराजिभिः ॥६६॥

सुवसादसः श्रैदरे सुवसाः कससः के ।

दसुसः सुवसाः सुवसाः सुवसाः वः वः ।

सः वः सुवसाः सुवसाः वः के ।

सुवसाः सुवसाः सुवसाः सुवसाः ॥ ७०

विष्णुना विक्रमस्थेन दानवानां विभूतयः ।

कापि नीना कनोपामसानीना नैननर्भगः ॥७०॥

सुवसाः सुवसाः सुवसाः सुवसाः वः वः ।

सुवसाः सुवसाः सुवसाः सुवसाः वः वः ।

सुवसाः सुवसाः सुवसाः सुवसाः वः वः ।

सुवसाः सुवसाः सुवसाः सुवसाः वः वः ॥ ७०

इत्यादिदीपकान्युक्तान्येवं मध्यान्तयोरपि ।

वाक्ययोर्दर्शयिष्यामः कानिचित्तानि तद्यथा ॥१०१॥

ཞེས་པ་ དང་པོའི་ གསལ་བྱེད་ བསྟན་ །
 དེ་བཞིན་ བར་ དང་ མཐའ་ ཡི་ ཡང་ །
 ཆོག་དག་ བདག་གིས་ བསྟན་པར་བྱ་ །
 དེ་དག་ འགའ་ཞིག་ འདི་ལྟ་སྟེ ॥ ༡༠༡

नृत्यन्ति निचुलोत्सङ्गे गायन्ति च कलापिनः ।
 बध्नन्ति च पयोधेषु द्वशो हर्षाश्रु 17a] गर्भिणी ॥१०२॥

གར་བྱེད་ རི་ཚུ་ལ་ བར་བྱ་ །
 གྲུ་ ཡང་ ལེན་ནོ་ མདོངས་མཐའ་ཅན་ །
 དགའ་བས་ རྒྱས་པའི་ མིག་དག་ ཀྱང་ །
 རུ་འཛིན་ལ་ རི་ གཏོད་པར་བྱེད་ ॥ ༡༠༢

मन्दो गन्धवहः क्षारो वह्निरिन्दुश्च जायते ।
 चर्चाचन्दनपातश्च शल्लपातः प्रवासिनां ॥१०३॥

རི་བཞེན་ དལ་བྱ་ འགྲུ་བྱེད་དེ་ །
 རྒྱ་བ་ དག་ ཀྱང་ མི་ཚུ་འགྲུར་ །

ཅན་གྱི་བ་ལྟ་བ་ ཡང་།

མཆོན་ལྟ་ འབྲས་པ་ རྣམས་ ལའོ། ། ༡༠༢

जलं जलधरोद्ग्रीर्णकुलङ्कहशिखण्डिनां ।

चलञ्च तडितान्दाम बलं कुसुमधन्वनः ॥१०४॥

ཐུ་འཛིན་ གྱིས་ནི་ རབ་གདང་ཐུ།

ཁྲིས་གྱི་ གུའ་པུད་ལྟ་བའི་ ཆོགས།

སློག་གི་ཐག་བ་ གཡོ་བ་ ཡང་།

མེད་ཀྱི་གཞུ་ཅན་དག་གི་ དབྱང་། ། ༡༠༣

त्वया कर्णोत्पलं कर्णे स्मरेणास्त्रं शरासने ।

मयापि मरणे चेतस्त्रयमेतत्समं कृतं ॥१०५॥

ཁྲིད་ཀྱིས་ ཨུའྲལ་ རྩ་བ་ལ།

འདོད་པས་ མདའ་ རི་ མདའ་སྟན་ལ།

ངས་ ཀྱང་ མེས་ནི་ འཆི་བ་ ལ།

གསུམ་པོ་ འདི་ནི་ མཉམ་དུ་བྱས། ། ༡༠༤

शुक्लः श्वेताचिषो वृद्धयै पक्षः पञ्चशरस्य सः ।

स च रागस्य रागोपि यूना रत्युत्सवश्रियः ॥१०६॥

དགར་ཕྱོགས་ཀྱིས་ ཉི་ རོད་དཀར་ཅན་ ।

འཕེལ་བྱེད་ དེ་ཡིས་ མདའ་ལྔ་པ་ ।

དེས་ ཀྱང་ ཆགས་ མདངས་ ཆགས་མདངས་ཀྱིས་ ।

ན་རུང་ དགའ་བའི་ དགའ་སྟོན་དཔལ་ ॥ ༡༠༥

इत्यादिदापकत्वाप पूर्वपूर्वव्यपोंक्षणी ।

वाक्यमाला प्रयुक्तेति तन्मालादीपकं मतं ॥१०७॥

ཞེས་ རོགས་ གསལ་བྱེད་ ཡིན་ རོད་ ཀྱང་ ।

ལྔ་མ་ལྔ་མ་ལ་ ལྟེས་བའི་ ।

རྒྱ་གྱི་ སྟང་བ་ རབ་ལྔ་ སྟིར་ ।

དེ་ནི་ སྟང་བའི་གསལ་བྱེད་དོ ॥ ༡༠༦

मवलेपमनङ्गस्य वर्धयन्ति बलाहकाः ।

लशयन्ति तु धर्मस्य माखतोद्धतशीकराः ॥१०८॥

རྒྱུང་གིས་ གཙུབས་པའི་ཚུ་ཐིགས་ཅན།

སྒྲིན་གྱིས་ ལུས་མེད་དག་གི་ ཉི།

ཨ་བ་ལེ་བ་ འབྲེལ་བར་བྱེད།

རྒྱལ་གྱི་ དག་ནི་ སེལ་བར་བྱེད། ॥ ༡༠༥

अवलेपपदेनात्र बलाहकपदेन च ।

क्रिये विरुद्धे संयुक्ते [176]तद्विरुद्धार्थदीपकं ॥१०६॥

འདིར་ནི་ སྒྲིན་གྱི་ཆིག་དག་ དང་།

ཨ་བ་ལེ་བའི་ ཆིག་དག་གིས།

བྱ་བ་ འགལ་བར་ལྲན་བ་ དེ།

འགལ་བའི་དོན་གྱི་གསལ་བྱེད་དོ། ॥ ༡༠༦

हरत्याभोगमाशानां गृह्णाति ज्योतिषां गणम् ।

आदत्ते चाद्य मे प्राणानसौ जलधरावली ॥११०॥

ཚུ་འཇོན་ དག་གི་ སྤྱེང་བ་ འདིས།

ས་ནསས་ཀྱི་ ཉི་ བོ་སྐབས་ འཕྲོག།

སྐར་མ་ ཡི་ ཉི་ ཚོགས་ རྣམས་ འཛིན་ །
 དེང་ཡང་ བདག་གི་སྟོབ་ རྣམས་ ལེན་ ॥ ११

अनेकशब्दोपादानात् क्रियैवैकाग्र दीप्यते ।
 यतो जलधरावल्यास्तस्मादेकार्थदीपकं ॥१११॥

གང་སྤྱིར་ཅུ་ འཛིན་ སྤང་བ་ཡི་ །
 བྱ་བ་ གཅིག་ ཉིད་ གསལ་བྱེད་ འདིར་ །
 ཏུ་མའི་ སྒྲ་ཡིས་ ཉིར་བླངས་པ་ །
 དེ་སྤྱིར་ དོན་གཅིག་གསལ་བྱེད་པོ་ ॥ १११

हृद्यगन्धवहास्तुङ्गास्तमालश्यामलत्विषः ।
 दिवि भ्रमन्ति जीमूता भुवि चैते मतंगजाः ॥११२॥

དྲི་ཡི་བཞུན་པ་ ཡིད་འོང་ མཐོ་ །
 སྟོ་བསངས་ ཏུ་སྒྲ་ལ་ཡི་འོད་ །
 སྟེན་ ཉི་ མཐའ་ལ་ སྐུ་བྱེད་ དེ་ །
 བླང་ཆེན་ འདི་དག་ ས་ལའོ་ ॥ ११२

अत्र धर्मैरभिज्ञानामध्यानां दन्तिनामपि ।

भ्रमणेनैव सम्बन्ध इति निष्ठार्थदीपकं ॥११३॥

འདིར་ ཅི་ ཆས་དག་ བ་དང་ མིན།

སྒྲིན་དང་ གླང་པོ་ རྣམས་དག་ ཀྱང་།

སྐྱུ་བ་ཉིད་ ཀྱིས་ འབྲེལ་བའི་ སྤྱིར།

སྤྱར་བའི་དོན་གྱི་ གསལ་བྱེད་དོ ॥ ११३

अनेनैव प्रकारेण शेषाणामपि दीपके ।

विकल्पानामनुगतिर्विधातव्या विचक्षणैः ॥११४॥

རྣམ་པ་ འདི་ཉིད་ ཁོ་ན་ཡིས།

གསལ་བྱེད་ལ་ནི་ རྣམ་རྟོག་པ།

སྐྱུ་བ་ས་ རྣམས་ ཀྱང་ རྗེས་འགྲོ་ཡིས།

མཁས་པ་ རྣམས་ ཀྱིས་ རྟོགས་པར་བྱ ॥ ११४

अर्थावृत्तिः पदावृत्तिरुभयावृत्तिरित्यपि ।

दीपकस्थान एवेष्टमलंकारत्रयं यथा ॥११५॥

བསལ་བྱེད་ཀྱི་ བོ་ བཀས་ཉིད་དུ །
 དོན་བསྐྱེད་ དང་ བོ་ ཚོག་བསྐྱེད་ དང་ །
 བཀྲིས་ཀ་ བསྐྱེད་བ་ ཅེས་བ་ ཡི །
 བྱེད་ བསྐྱེད་བ་དག་ འདོད་དེ་ དཔེར ༥ ११४

विकसन्ति कदम्बानि स्फुटन्ति कुटजोद्गमाः ।
 उन्मीलन्ति च [18a] कन्दल्यो दलन्ति ककुभानि च ॥११६॥

ཀ་དམ་ བོ་ བས་བར་བྱས །
 ཀྱ་ཏ་ཇོ་མ་ རབ་བསལ །
 ཀྱ་ལྷ་མོ་ རབ་དུ་ བྱེ །
 ཀྱ་ཀྱ་མོ་ ཡང་ བྱས་བར་བྱུར ༥ ११५

उत्कण्ठयति मेघानां माला वर्गकुलापिनां ।
 यूनां चोत्कण्ठयत्यद्य मानसम्मकरध्वजः ॥११७॥

སྤྱིན་གྱི་ སྤོང་བ་ དག་གིས་ བོ་ །
 མ་བྱེད་ ཚོགས་ བསལ་ མ་སྤྱིན་བྱེད །

ཐུ་སྲིན་ རྒྱལ་མཚན་ཅན་ གྲིས་ དེང་ །
ན་རུང་ རྣམས་ ཡིད་ འདོད་ལྷན་བྱེད ༥ ॥ ११७

जित्वा विश्वम्भवानद्य विहरत्यवरोधनैः ।
विहरत्यप्सरोभिस्ते रिपुवर्गो दिग्धं गतः ॥११८॥

ཀྱན་ལས་ རྒྱལ་ནས་ དེ་རིང་ ཁྱོད་ །
བཅུན་མོ་ རྣམས་ དང་ ཅེ་བར་བྱེད །
ཁྱོད་ཀྱི་དག་སྡེ་ མཐོ་རིས་ སོང་ །
ལྷ་མོ་ རྣམས་ དང་ ཅེ་བར་བྱེད ༥ ॥ ११८

प्रतिषेधोक्तिराक्षेपल्लेकादपेक्षया त्रिधा ।
अथास्य पुनराक्षेप्यभेदानन्त्यादन्तता ॥११९॥

དགག་བ་ བཟློད་བ་ འགོག་བ་ ལྟེ །
དུས་གསུམ་ལ་ལྟོས་ རྣམ་བ་ གསུམ །
ཅི་ལྟེ་ དེ་ཡང་ དགག་བྱ་ཡི །
དབྱེ་བ་ མཐའ་ཡས་ ལྷིང་ མཐའ་ཡས ༥ ॥ ११९

अनङ्गः पञ्चमिः पुण्यैर्विभ्रंजयतेषुमिः ।
इत्यसंभाव्यमथवा विचित्रवस्तुशक्तयः ॥१२०॥

लुस'खेद'ग्री' किं' खेदेण' वी ।
खद'ल'लुस' गृह'लस'कुल'वर'गुरु ।
उस'व' खी'खेद' यद'न' किं ।
ददेस'वेद'न'स'व' न'स'वर'वग्न ॥ १२०

इत्यनङ्गजयायोगबुद्धिर्हेतुबलादिह ।
प्रवृत्तेर्वं यदाक्षिता वृत्ताक्षेपस्तदीकृशः ॥१२१॥

लेस'व' ददेर'किं' सु'खेद'स' ग्रीस ।
लुस'खेद' कुल'वर'खी'खेद'स' खे ।
दे'ल'ल' गुरु' वग्न' वद'वी' खेद ।
गुरु'व' दवेण'व' दे' ददे'द' ॥ १२१

कुतः कुबलयं कर्णे करोषि कलभाषिणि ।
किमपाङ्गमपर्याप्तमस्मिन्कर्मणि मन्यसे ॥१२२॥

སྒྲིག་སྒྲིག་ས་ས་ དག་ ཅི་ཡི་སྒྲིར །

ན་བ་ལ་ནི་ ཡུལ་ འཇུག །

ལས་ འདི་ལ་ ནི་ རྒྱར་མིག་དག །

ཡོངས་རྒྱུགས་ མིན་པར་ སེམས་སམ་ ཅི ༥ ॥ १२३

स वर्तमानाक्षेपोयं कुर्वत्ये [186] वासितोत्पलं ।

कर्णे काचित्प्रियेणैवं चाटुकारेण रुध्यते ॥१२३॥

འགའ་ཞིག་ དཀར་མིན་ ཡུལ་ །

ན་བར་འཇུག་ལ་ མཛོལ་བོ་ཡིས །

དེ་ལྟར་ བསྟོད་པས་ མཛོལ་བྱེད་པ །

འདི་ནི་ མཛོན་གྱར་ འགོག་པ་འོ ༥ ॥ १२३

सत्यं ब्रवीमि न त्वम्मान्द्रष्टुं बल्लभ लप्स्यसे ।

अन्यचुम्बनसंक्रान्तलाक्षारक्तेन चक्षुषा ॥१२४॥

རྒྱ་བོ་ བདེན་པར་ སྒྲ་འོ་ བདག །

གཞན་ དང་ཅུས་ནས་ འཕྲོས་པའི །

ཀྱི་སྒྲིགས་ཀྱིས་དམར་ མིག་གིས་ནི །

ཁྱོད་ཀྱིས་ མཐོང་བར་འགྱུར་ མ་ལགས ༥ १२८

सोयं भविष्यदाक्षेपः प्रागेवातिमनस्विनी ।

कदाचिदपराधोस्य भावीत्येवमरुन्ध यत् ॥१२५॥

སྤར་ཉིད་ ཤེན་དྲ་ཁྱེད་སྤྱན་མས །

ནས་ཞིག་ འདི་ཡིས་ གཞོད་བ་ དག །

འབྱུང་བ་ དེ་ལྟར་ འགོག་བྱེད་བ །

འདི་ནི་ འབྱུང་འགྱུར་ འགོག་བའོ ॥ १२९

तव तन्वङ्गि मिथ्यैव रूढमङ्गेषु मार्दवं ।

यदि सत्यममृदून्येव किमकाण्डे रुजन्ति मां ॥१२६॥

ལུས་སྤྱ་ ཁྱོད་ཀྱི་ ཡན་ལག་ ནམས །

འཇམ་བ་ ཉིད་དུ་ གནས་བ་ བརྩན །

གཡ་དེ་ བདེན་བར་ འཇམ་བ་ན །

སྒྲོ་བྱར་དུ་ བདག་ ཅ་ལ་ གདུང་ ॥ १३०

धर्माक्षेपोयमाक्षितमङ्गनागात्रमार्दवं ।
कामुकेन यदत्रैवं कर्मणा तद्विरोधिना ॥१२७॥

གང་ཕྱིར་ རེ་ལྟར་ འདོད་ལྟན་ གྱིས། །
རེ་ ཅང་ འགལ་བའི་ལས་ གྱིས་ ནི ॥ १२७
བྱད་མེད་ ལུས་ འདི་ འཇམ་བ་ ཅག། །
འགོག་བ་ འདི་ ནི་ ཚོས་ འགོག་བའོ། །

सुन्दरी सा नवेत्येष विवेकः केन जायते ।
प्रभामात्रं हि तरलं दृश्यते तत्र नाश्रयः ॥१२८॥

དེ་ནི་ མཇོས་མ་འས་ ཡིན་ཞེས། །
ནམ་རིག་ འདི་ནི་ ཅེ་ལས་སྟེ། །
དེར་ནི་ འདོ་ཙམ་ གཡོ་བ་ ཉིད། །
མཐོང་བར་གྱར་གྱི་ རེན་མ་ཡིན། ॥ १२८

धर्म्याक्षेपोयमाक्षितो धर्माधर्मं प्रमाद्वयं ।
अनुज्ञायात्र तद्रूपमत्याश्रयं विवक्षता ॥१२९॥

གང་ འདིར་ གཞུགས་ཅན་ས་ རོ་སའོར་ ।
 བརྗོད་པར་ འདོད་པས་ འདྲ་ཅས་པའི་ ।
 ཆོས་ འདི་ ཁས་སྦངས་ ཆོས་ཅན་ དག་ ।
 འགོག་འདི་ ཁས་སྦངས་ ཆོས་ཅན་ དག ॥ 230

चधुषी [19a] तन रज्यते स्फुरत्यधरपल्लवः ।
 ध्रुवौ च भुम्भे न तथाप्यदुष्टस्यास्ति मे भयं ॥१३०॥
 བྱོད་ཀྱི་ མིག་ནི་ དམར་གྱུར་ ཅིང་ ।
 མཚུ་ཡི་ ཡལ་འདབ་ གཡོ་བ་ དང་ ।
 སྒྲིན་ས་ འབྱོག་མྱེ་ དེ་ལྟ་ནའང་ ।
 ཉེས་པ་ མེད་པས་ བདག་ མི་འཇིགས ॥ 230

स एष कारणाक्षेपः प्रधानं कारणं मियः ।
 स्वापराधो निषिद्धोत्र यत्प्रियेण पटीयसा ॥१३१॥
 གང་གྱིར་ མཇེའ་ལོ་ མཁས་པ་ ཡིས་ ।
 འདི་དག་ འདིར་ནི་ གྱུ་ འགོག་པའོ་ ।

འཇིགས་པ་ ཡི་ནི་ ལྷ་ཡི་གཙོ།
རང་གི་ ཉེས་པ་ འགོག་བྱེད་པ་ ॥ ༡༣༡

दूरे प्रियतमः सोयमागतो जलदागमः ।
दृष्ट्वा फुल्ला निचुला न मृता चास्मि किं न्वहं ॥१३२॥

མཇེའ་པོ་ དག་ ནི་ རིང་ན་ གནས།
ཆུ་འཇོན་ བགོད་ལྔ་ འདི་ནི་ འོངས།
ནི་ཚུ་ལ་ ཡང་ ལྷས་པར་ མཐོང་།
བདག་གི་ མིན་པ་ འདི་ ཅི་ག། ॥ ༡༣༢

कार्याक्षेपः स कायस्य मरणस्य निवर्त्तनात् ।
तत्कारणमुपन्यस्य दारुणं जलदागमं ॥१३३॥

དེ་ལྷ་ཆུ་འཇོན་ བགོད་པ་ ནི།
མི་བཟད་པ་ དག་ ཉེར་ བགོད་ བས།
འབྲས་བུ་ འཆི་བ་ བསྐྱོག་པའི་ཕྱིར།
དེ་ནི་ འབྲས་བུ་ འགོག་པ་འོ། ॥ ༡༣༣

न चिरं मम तापाय तव यात्रा भविष्यति ।

यदि यास्यसि यातव्यमलमाशंकयात्र ते ॥१३४॥

གལ་ཏེ་ གཤེགས་ན་ གཤེགས་པར་ མཇོད།

སྲིད་ཀྱི་ བསྐྱོད་པས་ བདག་ལ་ བློ།

གཏུང་བ་ ཡུན་རིང་ འགྲུང་མི་འགྲུང།

འདི་ལ་ སྲིད་ནི་ རོགས་མི་འཚལ། ॥ १३४

इत्यनुस्त्रामुखेनैव कान्तस्याश्लिष्यते गतिः ।

मरणं सूचयन्त्येव सोऽनुस्त्राक्षेप उच्यते ॥१३५॥

ཞེས་པ་ འཆི་བ་ གསལ་བྱེད་པས།

ཇེས་གནང་ ཉིད་ཀྱི་ གློ་ནས་ བློ།

མཇོང་བའི་ བསྐྱོད་པ་ འགོག་བྱེད་པ།

འདི་ནི་ ཇེས་གནང་ འགོག་པར་ བཇོད། ॥ १३५

धनञ्च बहु लभ्यन्ते सुखं क्षेमं च वर्त्मनि ।

न च मे प्राणस्त्व[19b]देहस्तथापि प्रिय मात्स्य गाः ॥१३६॥

རྩོམ་ནི་ མང་པོ་ རྩོད་ འགྱུར་ ཞིང་ །
 ལས་དུ་ ཡང་ནི་ བདེ་ ཞིང་ དག།
 བདག་སྟོན་ལ་ ཡང་ ཐེ་ཚོམ་མེད་ །
 འོན་ཀྱང་ མཇུག་པོ་ འགོ་མི་བྱ། ॥ १३५

प्रत्याक्षभाणः प्रेतः प्रिययात्राविबन्धनः
 प्रभुत्वेनैव रुद्धस्तत्प्रभुत्वाक्षेप ईदृशः ॥१३७॥

མཇུག་པོ་ འགོ་བར་ སྟོར་བ་ ཡི།
 གྱུ་ རྣམས་ དག་ རི་ རབ་བཤད་ནས།
 དབང་ཉིད་ ཀྱིས་ རི་ དེ་ འགོག་བ།
 འདི་འདྲ་ དབང་གིས་ འགོག་བ་འོ། ॥ १३७

जीविताशा बलवती धनाशा दुर्बला मम ।
 गच्छ वा तिष्ठ वा कान्त स्वावस्था तु निवेदिता ॥१३८॥

བདག་ནི་ གསོན་རེ་ སྟོབས་དང་ལྡན།
 རྩོམ་གྱི་ བསམ་བ་ སྟོབས་ལྡན་མིན།

མཛེའ་བོ་གཤེགས་སམ་གཞུགས་ལགས་སམ།
རང་གི་གནས་སྐབས་སྒྲོས་པ་ལགས། ॥ १३८

असावनादराक्षेपो यदनादरवद्वचः ।
प्रियप्रयाणं हन्धत्या प्रयुक्तमिह रक्तया ॥१३९॥

གང་ཕྱིར་འདིར་ནི་ཆགས་ལྡན་སམ།
མཛེའ་བོའི་བགོད་པ་འགོག་བྱེད་ཅིང་།
མ་གུས་བཞིན་དུ་ཆོག་སྒྲུར་བ།
འདི་ནི་མ་གུས་པས་འགོག་པའོ། ॥ १३९

गच्छ गच्छसि चेत्कान्त पन्थानः सन्तु ते शिवाः ।
ममापि जन्म तत्रैव भूयाद्यत्र गतो भवान् ॥१४०॥

མཛེའ་བོ་གལ་དེ་གཤེགས་ན་གཞུང་།
ཁྱོད་གྱི་ལས་ནི་ཤེས་གུར་ཅིག།
གང་དུ་ཁྱོད་ནི་གཤེགས་པ་དེར།
བདག་ཀྱང་སླེ་བ་ཉིད་གུར་ཅིག། ॥ १४०

इत्याशीर्वचनाक्षेपो यदाशीर्वावृत्तर्त्तना ।

स्वावस्थां सूचयन्त्यैव कान्तयात्रा निषिध्यते ॥१४१॥

दे.पु. षी.वहे.द.स. ग्री. व. ।

र.व. व. व. व. व. व. व. व. व. ।

स.द.व.व. व.व.व. व.व.व. व. ।

द.द.दे. षी.वहे.द. ग्री. व.व.व.व. ॥ १८१

यदि सत्यैव यात्रा ते काप्यन्या मृत्यतां त्वया ।

अहमद्यैव रुद्धास्मि रन्ध्रापेक्षेण मृत्युना ॥१४२॥

व.व.द. व.व.व. व.व.व. व. ।

व.व.व. व.व.व. व.व.व. व. ।

व.व.व. व.व.व. व.व.व. व. ।

दे.द.द. व.व.व. व.व.व. व.व.व. ॥ १८२

इत्येष [20a] परुषाक्षेपः परुषाक्षरपूर्वकम् ।

कान्तस्याक्षिप्यते यस्मात्प्रस्थानं प्रेमनिघ्नया ॥१४३॥

གང་ཕྱིར་ མཇཱ་བའི་ དབང་གུར་མས།
 མཇཱ་བའི་ བགོད་པ་འགོག་བྱེད་པ།
 ཆོག་ཅུབ་ ཡི་གེ་ སྟོན་འགོ་ཅན།
 འདི་ནི་ ཅུབ་ མཇཱ་ འགོག་པ་འོ། ॥ १८३

गन्ता चेद्गच्छ तूर्णन्ते कर्णं यान्ति पुरा रवाः ।
 आर्त्तबन्धुमुखोद्गीर्णाः प्रयाणप्रतिबन्धिनः ॥१४४॥

གལ་ཏེ་ གཤེགས་ན་ སྐར་དུ་ བཞུད།
 ཕྱི་ནས་ གཞིན་ འདུན་ བསྐྱགས་པའི་ཁས།
 བསྐྱགས་པའི་ཆོང་ འགོ་བ་ ཡི།
 གཤེགས་གུར་ ཁྱོད་ཀྱི་ རྩ་བར་ འོང་། ॥ १८४

साचिव्याक्षेप एवैष यदत्र प्रतिषिध्यते ।
 प्रियप्रयाणं साचिव्यं कुर्वत्येकान्तरक्तया ॥१४५॥

གང་ཕྱིར་ འདིར་ནི་ མཐའ་གཞིག་དུ།
 ཆགས་མས་ གྲོས་ཞིད་ བྱེད་པ་ ཡིས།

མཇའ་བོའི་བཞུད་པ་ འགོག་པ་ འདི།
གྲོས་ཉིད་ གྲིས་ནི་ འགོག་པ་འོ། ༡༠༥

गच्छति वक्तुमिच्छामि मत्प्रियं त्वत्प्रियैषिणी ।
निर्गच्छति मुखद्व्याणी मा गा इति करोमि किम् ॥१४६॥

བཞུད་ཅེས་ བྲིད་དགེས་ བཛོད་ འདོད་ཀྱང་།
བདག་ཉིད་ དགའ་བར་བྱེད་པའི་ ཚོག།
མ་གཤེགས་ ཅེས་པ་ ཁ་ནས་ནི།
བྱང་བར་ བྱར་ལ་ བདག་ ཅི་ བྱེད། ༡༠༦

यक्षाक्षेपस्त यक्षस्य कृतस्यानिष्टवस्तुनि ।
विपरीतफलोत्पत्तेरानर्थक्योपदर्शनात् ॥१४७॥

མི་འདོད་ དངོས་ལ་ འབད་བྱས་པས།
འབྲས་བྱ་ ལྷན་ཅི་ལོག་ བསྐྱེད་པས།
དོན་མེད་ ཉེ་བར་ བཟུན་པའི་ ལྷིར།
དེ་ནི་ འབད་པས་ འགོག་པ་འོ། ༡༠༧

क्षणदर्शनविघ्नाय पक्ष्मस्पन्दाय कुप्यतः ।

प्रेम्णः प्रयाणन्तं ब्रूहि मया तस्येष्टमिष्यते ॥१४८॥

སྒྲུང་ཅིག་ལྷ་བའི་ བོགས་བྱེད་བའི །

རྩི་མ་ བསྐྱོད་བ་ལ་ ཁྲོ་བ །

ཁྱེད་ཀྱིས་ མཇེའ་བར་ འགྲོ་བ་ སྒྲོས །

བདག་ནི་ དེ་ཡི་ འདོད་བ་ འདོད ॥ १४८

अयं परवशाक्षेपो यत्प्रेमपरतन्त्र[20b]या ।

तया निषिध्यते यात्रेत्यस्यार्थस्योपसूचनात् ॥१४९॥

གང་ཕྱིར་ མཇེའ་བའི་ གཞན་དབང་མ །

དེ་ཡིས་ འགྲོད་བ་ འགྲོག་བྱེད་ཅིང་ །

དོན་ འདི་ ཉེ་བར་གསལ་བྱེད་ ཕྱིར །

འདི་ནི་ གཞན་དབང་ འགྲོག་བ་འོ ॥ १४९

सहिष्ये विरहं नाथ देहादृश्याञ्जनं मम ।

यद्वत्तन्नाङ्गन्दयः ग्रहन्तुं मां न पश्यति ॥१५०॥

མགོན་པོ་ འབྲེལ་བ་ བཞེད་པར་ བགྱི།
 གང་གེས་ མིག་ བསྐྱོས་ བདག་ལ་ནི།
 འདོད་བས་ བསྐྱུན་དུ་ མི་མཐོང་བའི།
 མཐོང་མིན་ མིག་སྒྲན་ བདག་ལ་ ལྷོལ ॥ ༡༣༠

बुष्करं जीवनोपायमुपन्यस्योपरुध्यते ।

पत्यः प्रस्थानमित्याहुरपायाक्षेपमीदृशं ॥१६१॥

འཆོ་བའི་ཐབས་ ཅི་ དཀའ་བ་དག།
 ཉི་བར་བཀོད་ནས་ བདག་པོ་ནི།
 འགྲོ་བ་ འགྲོག་པར་བྱེད་པའི་ སྤྱིར།
 འདི་འདྲ་ ཐབས་ ཀྱིས་ འགྲོག་པར་བཞེད་ ॥ ༡༣༡

प्रवृत्तं च प्रयासीति वाणी बल्लभ ते मुखात् ।

अयतापि त्वयेदानीम् मन्दप्रेम्णा ममास्ति किम् ॥१६२॥

རོ་བོ་ བྱིད་ཀྱི་ ཞལ་ནས་ ཆོག།
 བདག་ འགྲོ་ ཞེས་པ་ ཇེས་པར་བྱང་།

མཛེལ་བ་ རྟམན་བ་ ཁྱོད་ཀྱིས་ ན ।

མ་ཕྱིན་ན་ ཡང་ བདག་ལ་ཅི ॥ ༥༥

रोषाक्षेपोयमुद्रिकस्नेहनिर्वन्धनात्मया ।

संरन्धया प्रियारन्धं प्रयाणं यन्निवार्यते ॥१५३॥

མཛེལ་བ་ ལྷུས་པས་ མ་བསྐྱམས་བའི་ ।

བདག་ཉིད་ ཁྱོ་བས་ མཛེལ་བོ་ཡི་ ।

འགྲོ་བ་ ཅེས་པ་ བསྐྱོག་པ་ གང་ ।

འདི་ནི་ ཁྱོ་བས་ འགྲོག་པ་འོ ॥ ༥༦

नाम्रातं न कृतं कर्णे स्त्रीभिर्मधुनि नापितं ।

त्वद्दिषां दीर्घिकास्वेव विशीर्णजीर्णमुत्पलं ॥१५४॥

མ་བསྐྱམས་ བུ་མའི་ན་བ་ལ་ ।

མ་བུས་ ཆང་ལ་ མ་བདབ་བར་ ।

ཁྱོད་ཀྱི་ རྟག་ཡི་ རྒྱང་ ཉིད་དུ་ ।

ཡུལ་ སྒོན་པ་ ཟེགས་པར་གྱུར་ ॥ ༥༧

असावनुक्रोशाक्षेपः सानुक्रोशमिषोत्पले ।

व्यावर्त्य कर्म तद्योग्यं शोच्यावस्थोपदर्शनात् ॥१५५॥

श्लो० ॥ १५५ ॥ व० ॥ व० ॥ व० ॥ व० ॥

१० ॥ १५५ ॥ व० ॥ व० ॥ व० ॥ व० ॥

१० ॥ १५५ ॥ व० ॥ व० ॥ व० ॥ व० ॥

१० ॥ १५५ ॥ व० ॥ व० ॥ व० ॥ व० ॥

अर्थो न संभृतः कश्चिन्न वि[21a]द्या काचिदर्जिता ।

न तपः संचितं किंचिद्रतश्च सकलं वयः ॥१५६॥

१० ॥ १५६ ॥ व० ॥ व० ॥ व० ॥ व० ॥

१० ॥ १५६ ॥ व० ॥ व० ॥ व० ॥ व० ॥

१० ॥ १५६ ॥ व० ॥ व० ॥ व० ॥ व० ॥

१० ॥ १५६ ॥ व० ॥ व० ॥ व० ॥ व० ॥

असावनुशयाक्षेपो यस्मादनुशयोत्तरं ।

अर्थाऽर्जुनादेव्यावृत्तिर्दृशितीह गतायुषा ॥१५७॥

གང་ཕྱིར་ འདིར་ནི་ ཆོ་སོང་བས།
 དོན་སྐྱབ་ ལ་སོགས་ འགོག་བ་ནི།
 འགྱོད་བ་ གཙོ་བོར་ སྙོན་བྱེད་བ།
 འདི་ནི་ འགྱོད་བས་ འགོག་བ་འོ། ॥ ३१७

किमयं शरदंभोदः किं वा हंसकदम्बकम् ।
 कृतस्त्रूपुरसंवादि श्रूयते तन्न तोयदः ॥१५८॥

ཅི་འདི་ སྙོན་གྱི་རུ་འཛོན་ བས།
 ཡང་ན་ ངང་བའི་ཆོགས་སམ་ཅི།
 སྐྱ་ནི་ ཀང་གདུབ་ཀྱི་ འདྲ་བ།
 བྲོས་བས་ དེ་ནི་ རུ་འཛོན་ མིན། ॥ १५८

इत्ययं संशयाक्षेपः संशयो यन्निवर्त्यते ।
 धर्मेण हंससुलभेनास्पृष्टमनजातिना ॥१५९॥

ཆོས་འདི་ ངང་བ་ལ་ ཡོད་ཅིང་།
 སྐྱ་ནི་ རིགས་ལ་ མ་རིག་བས།

གང་ཞིག་ བེ་ཚོས་ རྫོག་བྱེད་པ།

འདི་ནི་ བེ་ཚོས་ འགོག་པ་འོ། ॥ ༡༥༦

अमृतात्मनि पद्मानां द्वेष्टरि क्षिप्रतारके ।

मुखेन्दौ तव सत्यस्मिन्नपरेण किमिन्दुना ॥१६०॥

བདུད་རྩི་འི་ བདག་ ཉིད་ བསྐྱེད།

སྤང་ ཞིང་ སྤྲུམ་པའི་ ཏུ་ར་གེ།

ཁྱིལ་ གཞོང་ རྫོག་པ་ འདི་ ཡོད་ བཞིན།

རྫོག་པ་ གཞན་གྱིས་ ཅི་ཞིག་ བྱ། ॥ ༡༥༠

इति मुख्येन्दुराक्षितो गुणान्गौणेन्दुवर्तिनः ।

तत्समानदर्शयित्वेति स्थित्याक्षेपस्तथाविधः ॥१६१॥

ཕལ་པའི་རྫོག་པ་ལ་ བདེན་པ།

དེ་ མཚུངས་ ཡོན་ཏན་ བཟུན་བྱས་ནས།

གཙོ་བོའི་རྫོག་པ་ འགོག་བྱེད་པ།

ནུས་པ་ དེ་ལྟར་ སྤང་བས་ འགོག། ॥ ༡༥༡

चित्रमाक्रान्तविश्वोपि विक्रमस्ते न लुप्यति ।

कदा वा दृश्यते तृप्तिरुदीर्णस्य हविर्मु[21b]जः ॥१६२॥

ཐམས་ཅད་མནན་ ཡང་ ཁྱོད་ཀྱི་ནི་ ॥

ནམ་གཞོན་ ཆོས་པ་ མེད་པ་ མཚར་ ।

ཡང་ན་ བསྐྱེག་ཟ་ འབར་བ་ལ་ ।

ཆོས་པ་དག་ ནི་ ནམ་ཞིག་ མཐོང་ ॥ १६३

अयमर्थान्तराक्षेपः प्रक्रान्तोऽयं निवर्त्यते ।

विस्मयोऽर्थान्तरस्येह दर्शनात्तत्सधर्मणः ॥१६३॥

གང་ཕྱིར་ འདྲིར་ནི་ རོན་ གཞན་དག་ ।

དེ་ཡི་ ཆོས་ མཚུངས་ བསྐྱེན་བྱས་ནས་ ।

ཡ་མཚན་ ཆོས་པ་ འགོག་བྱེད་པ་ ॥

འདྲི་ནི་ རོན་ གཞན་ འགོག་པ་འོ་ ॥ १६४

न स्तूयसे नरेन्द्र त्वं वदासीति कदाचन ।

स्वमेव मत्वा गृह्णन्ति यतस्त्वञ्जनमर्थिनः ॥१६४॥

སྒྲིན་པ་པོ་ ཞེས་ འཇམ་ཡང་ ཅི།
 མི་དབང་ ཁྱོད་ལ་ མི་བསྟོད་དེ།
 གང་ཕྱིར་ སྒྲོང་བས་ ཁྱོད་ཀྱི་ཉེར།
 རང་གི་ ཉིད་དུ་ བསམས་ནས་ ལེན། ॥ ༡༩༮

इत्येवमादिराक्षेपो हेत्वाक्षेप इति स्मृतः ।
 अनयैव दिशान्येपि विकल्पाः शक्यमूहितुं ॥१६५॥

ཅེས་པ་ ལ་སོགས་ འགོག་པ་ནི།
 སྒྲིན་ འགོག་པ་ ཞེས་ བཤད་པ་སྟེ།
 ཕྱོགས་ འདི་ཉིད་ཀྱིས་ འཇམ་པར་དྲོག།
 གཞན་པ་ དག་ ཀྱང་ དཔག་པར་བྱས། ॥ ༡༩༩

शेषः सोर्थान्तरन्यासो वस्तु प्रस्तुत्य किञ्चन ।
 तत्सामानसमर्थस्य न्यासो योन्यस्य वस्तुनः ॥१६६॥

གང་ཞིག་ དངོས་ འགའ་ རབ་བཞོད་ནས།
 དེ་ཡི་ སྒྲུབ་བྱེད་ འཇམ་པ་ཅན།

དངོས་པོ་ གཞན་དག་ འགོད་བ་དེ །

དོན་གཞན་ བཞོད་པར་ ཤེས་པར་བྱ ། ༡༩༩

विश्वव्यापी विशेषस्थः श्रेषाविद्धो विरोधवान् ।

अयुक्तकारी युक्तात्मा युक्तायुक्तो विपर्ययः ॥१६७॥

ཀུན་ཁྱབ་ ཁྱད་པར་ལ་ གནས་ དང་ །

སྦྱར་བ་ཅན་ དང་ འགལ་བ་ཅན །

མི་འོས་བྱེད་ དང་ འོས་བའི་བདག །

འོས་དང་ མི་འོས་ བཞྌོག་པ་འོ ། ༡༩༠

इत्येवमादयो भेदाः प्रयोगेष्वस्य लक्षिताः ।

उदाहरणमालैषां रूपव्यक्तये निदर्शयते ॥१६८॥

འདི་ཡི་ དབྱེ་བ་ དེ་ལྟ་ སྟགས །

སྦྱོར་བ་ རྣམས་ལ་ རབ་དུ་མཚོན །

འདི་རྣམས་ རང་བཞིན་ གསལ་བྱའི་སྦྱིར །

དཔེར་ བཞྌོད་ སྟངས་ བསྟན་པར་བྱ ། ༡༩༡

भगवन्तौ जगन्नेत्रे सूर्यचन्द्रमसावपि ।

पश्य गच्छत ए[22a]वास्तं नियतिः केन लङ्घ्यते ॥१६६॥

ལེགས་ལྡན་ འགྲོ་བ་རྣམས་ཀྱི་སྐལ། །

ཉི་མ་ དང་ནི་ རྒྱ་བ་ ཡང་། །

རྒྱ་བ་པར་གུར་བ་ ཉིད་ལ་ ལྟེན། །

ངེས་བ་ལ་ རྟི་ སུ་ཡིས་ འགོངས། ॥ १७०

पयोमुचः परीतापं हरन्त्येते शरीरिणां ।

नन्वात्मलामो महतां परदुःखोपशान्तये ॥१७०॥

ཐུ་འཛོན་ འདི་དག་ ལུས་ཅན་ གྱི། །

ཡོངས་སུ་གདུང་བ་ འཕྲོག་པར་བྱེད། །

ཆེན་པོ་རྣམས་ ཀྱིས་ བདག་ ཐོབ་ གྲགས། །

གཞན་ གྱི་ སྐྱལ་བསྐལ་ ཞི་ སྐད་དུ་འོ། ॥ १७०

उत्पादयति लोफस्य प्रीतिं मलयमारुतः ।

ननु दाक्षिण्यसम्पन्नः सर्वस्य भवति प्रियः ॥१७१॥

ན་བར་ ཅུབ་བ་ ཉིད་ འགུར་བ།
 འདོད་ལྷན་ རྣམས་ཀྱི་ སྒྲིག་ འདི་འདྲ་ ॥ ༡༡༢

अयं मम दहत्यङ्गमम्मोजदलसंस्तरः ।
 हुताशनप्रतिनिधिर्दाहात्मा ननु युज्यते ॥१७४॥

ཅུ་སྒྲིམ་འདབ་མའི་མལ་སྟན་ འདིས།
 བདག་གི་ ལུས་ འདི་ གཏུང་བར་བྱེད།
 སྒྲིག་པའི་ བདག་ ཉིད་ བསྒྲིག་ཟ་ དང་།
 འདྲ་བས་ རིགས་པ་ མ་ཡིན་ རྣམ་ ॥ ༡༡༣

क्षिणोतु कामं शीतांशुः किं वसन्तो दुनोति मां ।
 मलिनाचरितं कर्म सुरमेनन्वसाम्प्रतम् ॥१७५॥

བསེལ་ཟེར་ཅན་གྱིས་ ཉམས་བྱེད་ མེད།
 དབྱིད་ ཀྱིས་ བདག་ནི་ ཅི་ལ་ གཏུང་།
 རི་མ་ཅན་གྱིས་ སྒྲོད་པའི་ ལས།
 དག་བས་ མི་འོས་པ་མིན་ནས་ ॥ ༡༡༤

कु[22b]मुदान्यपि दाहाय किमङ्ग कमलाकरः ।

न हीन्दुगृहेषूपेषु स्यंगृह्यो मृदुर्भवेत् ॥१७६॥

गुं'सु'द'भ'क' य'द' श्रे'ण'सु'द'न' ।

स'द'ले'द'सु'द'न'क'स' उ'स'स'ि'सु'द' ।

सु'द'स' न'सु'द'न'क'स' उ'द'स'स' ।

श्रे'स'स' न'सु'द'न' द'स'स'i'द'सु'द' ॥ १७७

शब्दोपास्ते प्रतीते वा सादृश्ये वस्तुनोर्द्वयोः ।

तत्र यद्भेदकथनं व्यतिरेकः स कथ्यते ॥७७॥

सु'द'सु'द'न'क'स' द'स'स'i'स' ।

द'स'स'i' न'सु'द'न'क'स' सु'द'न' ।

द'स'i' द'स'स'i' व'द'स' ।

द'स'i' सु'द'न'क'स' व'द'स' ॥ १७८

धैर्यमाहात्म्यलावण्यप्रमुखैस्त्वमुदन्वतः ।

गुणैस्तुल्योसि मेवस्तु वपुषैवेदरोन ते ॥१७८॥

བདན་ དང་ ཆེ་བའི་ བདག་ཉིད་དང་ ।
 ལུ་བ་རྒྱ་ སྐུ་ལྔ་ ཡོན་དན་གྱིས་ ।
 ཁྱེད་དང་ རྒྱ་མཚོ་ མཚུངས་ བ་དད་ ।
 ཁྱེད་ལུས་ འདི་འདྲ་ ཉིད་ ཀྱིས་སོ ॥ ༡༡༥

इत्येकव्यतिरेकोयं धर्मेणैकत्र वर्तिना ।
 प्रतीतिविषयप्राप्तेर्मेदस्योभयवर्त्तिनः ॥१७६॥

བཅེག་ལ་ བནས་པའི་ཆོས་ ཀྱིས་ནི་ ।
 བཅི་ག་ལ་ བནས་ བ་དད་ དག་ ।
 ཉོགས་པའི་ ལུལ་དུ་གུར་པའི་ སྤྱིར་ ।
 འདི་ནི་ བཅེག་གི་ རྫོག་པ་ཅན་ ॥ ༡༡༦

अभिज्ञवेलौ गम्भीरावम्बराशिर्मवानपि ।
 असावञ्जनसङ्काशस्त्वन्तु चामीकरच्छविः ॥१८०॥

རྒྱ་ཡི་ཡུང་པོ་དག་ དང་ ཁྱེད་ ।
 མཚམས་ ལས་ མི་འདྲ་ ཟབ་བ་སྟེ་ ।

འདི་ནི་ མིག་སྒྲུབ་ དང་ མཚུངས་ལ །
 ཁྱིད་ནི་ གསེར་གྱི་ མདོག་ཅན་ནོ ༥ ༡༥

उभयव्यतिरेकोयमुभयोर्भेदकौ गुणौ ।
 काण्यं पिशंगता चोभौ यत्पृथग्दर्शिताविह ॥१८१॥

གང་གྱིར་ འདིར་ནི་ གཉི་ག་ཡི །
 འབྱེད་བྱེད་ ཡོན་ཏན་ རྒྱ་པོ་ དང་ །
 སེར་པོ་དག་ནི་ བ་དད་ བསྟན །
 འདི་ནི་ གཉི་གའི་ རྩོག་པ་ཅན ༥ ༡༦

त्वं समुद्रश्च दुर्बारी महासत्त्वमतेजसौ ।
 इयता युवयोर्भेदः स ज[23a]लात्मा पटुर्भवान् ॥१८२॥

ཁྱིད་དང་ གྱ་མཚོ་ ཏུ་བླ་རོ །
 མཁུ་སྐྱུ་ ཏེ་ཇ་ བཅས །
 འདི་ཡིས་ ཁྱིད་ གཉིས་ བ་དད་དེ །
 དེ་ནི་ ཚུ་བདག་ ཁྱིད་མཁས་སོ ༥ ༡༧

स एष श्लेषरूपत्वात् सश्लेष इति गृह्यतां ।
साक्षेपश्च सहेतुश्च दृश्यते तदपि द्वयं ॥१८३॥

འདི་ནི་སྐྱར་བའི་ཚུལ་ལྡན་གྱིར།
སྐྱར་བ་ཅན་ ཞེས་ གཟུང་བར་མཛོད།
འགོག་བ་ཅན་ དང་ གཏན་ཚིགས་ཅན།
གཉིས་པོ་ དེ་ཡང་ བསྟན་བར་བྱ། ॥ १८३

स्थितिमानपि धीरोपि रत्नानामाकरोपि सन् ।
तव कक्षां न यात्येव मलिनो मकरालयः ॥१८४॥

ལུགས་དང་ལྡན་ ཞིང་ བདན་བ་ དང་།
རིན་ཆེན་འབྱུང་གནས་ ཡིན་ མོད་ ཀྱང་།
དེ་མ་ལྡན་བ་ ཚུ་སྟོན་གནས།
ཁྱོད་ཀྱི་འབྲན་རྒྱར་འབྱར་མ་ཡིན། ॥ १८४

बह्वपि महीं कृत्स्नां सशैलद्वीपसागराम् ।
भर्तृमावाद्भजंगानां शेषस्त्वत्तो निरूप्यते ॥१८५॥

རི་སྒྲིང་གྱ་མཚོར་ བཅས་པ་ཡི།
 ས་གཞི་ མཐའ་དག་ འཛིན་ མཛད་ཀྱང་།
 ལག་འགྲོ་རྣམས་ ཀྱི་ རྩར་ གྱུར་ སྤྱིར།
 ལྷག་མ་ཅན་ནི་ ཁྱོད་པས་དམན། ॥ ༡༥

शब्दोपादानसादृश्यो व्यतिरेकोयमीदृशः ।
 प्रतीयमानसादृश्योप्यस्ति सोऽनुविधीयते ॥१८६॥

སྒྲ་དག་ འཇུག་པར་ མཚུངས་པ་ཡི།
 རྩོག་པ་ཅན་ནི་ འདི་འདྲ་ལྟེ།
 རྟོགས་པར་གྱུར་པ་ མཚུངས་པ་ ཡང་།
 ཡོད་པ་ དེ་ནི་ རྩེས་སུ་སྒྲབ། ॥ ༡༨༦

त्वन्मुखकुमलं चेति द्वयोरप्यनयोभिदा ।
 कमलं जलसंरोहि त्वन्मुखं त्वदुपाश्रयं ॥१८७॥

ཁྱོད་ཀྱི་ གཤོང་དང་ པརྒྱ་ལྟེ།
 འདི་ གཉིས་ཀྱི་ ནི་ ཁྱད་པར་ ཡང་།

བསྐྱོ་མུ་ལས་ སྐྱིས་པ་ དང་ །

ཁྱིད་ གཞོང་ ཁྱིད་ལ་ བརྟེན་པ་ལོ ༥ ༡༥༡

अभ्रविलासमस्पृष्टमदरागम् मृगेक्षणं ।

इदन्तु नयनद्वंद्वं तव तद्गुणभूषितम् ॥१८८॥

རི་དྲགས་ མིག་ལ་ སྐྱིན་ སྐྱེག་ དང་ །

སྐྱིས་པའི་དམར་བས་ རིག་པ་མེད །

ཁྱིད་ཀྱི་ མིག་ནི་ གཉིས་པ་ འདི །

ཡོན་ཏན་ དེ་དག་ ཉིད་ཀྱིས་ བརྟེན ༥ ༡༥༢

पूर्वस्मिन्भेदमात्रोक्तिरस्मिन्नाधिक्यदर्श[23b]नं ।

सादृश्यव्यतिरेकश्च पुनरन्यः प्रदर्श्यते ॥१८९॥

སྐྱ་མར་ དབྱེ་བ་ཙམ་ ཞིག་ བསྟན །

འདིར་ནི་ ལྷག་པ་ ཉིད་ བསྟན་ཏི །

སྐྱར་ཡང་ མཚུངས་པའི་ རྟོག་པ་ཙན །

གཞན་དག་ རབ་ཏུ་བསྟན་པར་བྱ ༥ ༡༥༣

त्वन्मुखमुण्डरीकञ्च फुल्ले सुरभिगन्धिनी ।

भ्रमद्भ्रमरमम्भोजं लोलदृष्टिं मुखन्तु ते ॥१६०॥

सिंदुः शिखरे रं रं वदन् रं रं ।

कुशं शिखरे रं वदन् रं रं वदन् ।

वदन् रं रं वदन् रं रं वदन् ।

सिंदुः शिखरे रं रं वदन् रं रं वदन् ॥ १००

चन्द्रोयमम्बरोत्तंसो हंसोयन्तोयभूषणं ।

नभो नक्षत्रमालीदमिदमुत्कुमुदम्पयः ॥१६१॥

वदन् रं रं वदन् रं रं वदन् ।

वदन् रं रं वदन् रं रं वदन् ।

वदन् रं रं वदन् रं रं वदन् ।

वदन् रं रं वदन् रं रं वदन् ॥ १०१

प्रतीयमानशैक्यादिसाम्ययोर्विद्यदम्भसोः ।

कृतः प्रतीतशुद्धयोश्च भेदोस्मिन्मन्त्रहंसयोः ॥१६२॥

འདིར་ བི་ རྒྱ་བ་ ངང་བ་ དག །
 དཀར་བ་ཉིད་ རོགས་ རོགས་བ་ དང་ །
 མཁའ་དང་ རྩ་ བི་དག་པར་ ཡང་ །
 རོགས་པར་ མཚུངས་པའི་ དབྱེ་བ་ གུས ༥ ༡༦

पूर्वत्र शब्दवत्साम्यमुभयत्रापि भेदकम् ।
 भृङ्गनेत्रादि तुल्यन्तत्सादृशव्यतिरेकता ॥१९३॥

རྒྱ་མ་ལ་ བི་ རྒྱ་ལྟ་ མཚུངས །
 བཉི་ག་ ལ་ ཡང་ ཐ་དད་ དབྱེ །
 གུང་བ་ རོགས་ལ་ རོགས་པ་ མཚུངས །
 རེ་མིར་ མཚུངས་པའི་ རོགས་པ་ཅན ༥ ༡༦༣

अरलालोकसंहार्यमघार्यं सूर्यरश्मिभिः ।
 दृष्टिरोधकरं यूनां यौवनप्रभवन्तमः ॥१९४॥

རིན་ཆེན་ རྒྱང་བས་མི་འཕྲོག་ ཅིང་ །
 ཉི་མའི་འོད་ཀྱིས་ མི་རྒྱུག་པ་ །

ལང་ཚོ་ ལས་ གུང་ ན་ རྒྱང་གི།
 མུན་པས་ ལྷ་བ་འགོག་པར་བྱེད། ॥ ༡༩༩

सजातिव्यतिरेकोयन्तमोजातेरिदन्तमः ।
 दृष्टिरोधितया तुल्यं मिश्रमन्यैरदर्शयत् ॥१९५॥

མུན་པའི་རིགས་ལས་ མུན་པ་ འདི།
 ལྷ་བ་འགོག་པ་ ཉིད་ ཀྲིས་ སུའངས།
 གཞན་དག་གིས་ ཉི་ བ་དད་ བལྟན།
 འདི་ནི་ རིགས་སྐུན་ལྷ་བ་པ་ཅན། ॥ ༡༩༩

प्रसिद्धहेतुव्यावृत्त्या यत्किञ्चित्कारणान्त[24a]रं ।
 यत्र स्वाभाविकत्वं वा विभाव्यं सा विभावना ॥१९६॥

རབ་དུ་གྲགས་པའི་ རྒྱ་བརྒྱུག་ནས།
 གང་ཞིག་ རྒྱ་ གཞན་ རྒྱང་ཟད་དམ།
 གང་དུ་ རང་གི་ རོ་བོ་ ཉིད།
 མུན་པ་ དེ་ནི་ སྲིད་པ་ཅན། ॥ ༡༩༩

अपीतक्षीवकादम्बमसंसृष्टामलाम्बरं ।

अप्रसादितसूक्ष्माम्बु जगदासीन्मनोहरम् ॥१९७॥

མ་འབྲུངས་ མྱོས་པའི་ ༡་དཔྱེ།

མ་སྤྱེས་རྩི་མ་མེད་པའི་ མཁའ།

གྲུངས་པར་ མ་བྱས་ རྒྱངས་པའི་རུ།

འགྲོ་བའི་ ཡིད་ནི་ འཕྲོག་པར་བྱེད། ॥ ༡༩༧

अनञ्जितासिता दृष्टिर्भूतनावर्जिता नता ।

अरञ्जितारुणश्चायमधरस्तव सुन्दरि ॥१९८॥

སྒྲུན་མ་བསྐྱས་པར་ དཀར་མེན་ མེག།

མནན་པ་ མེད་པར་ སྒྲེན་མ་ དམའ།

ཆོན་ མ་བསྐྱས་པར་ དམར་པ་ ནི།

མཛེས་མ་ ཁྱིད་ཀྱི་ མཆུ་ འདི་འོ། ॥ ༡༩༨

यदपीतादिजन्यं स्यात् क्षीवत्वाद्यन्यहेतुकं ।

अहेतुकञ्च तस्येह विवक्षेत्यविरुद्धता ॥१९९॥

གང་ཕྱིར་ མ་འཕྲངས་ ལ་སོགས་ སྒྲིམ
 སྒྲིམ་པ་ཉིད་ སོགས་ ལྷ་གཞན་ཅན་ ।
 ལྷ་མེད་ དག་ཀྱང་ བཟློད་ འདོད་པ་ ।
 དེ་ལ་ འདིར་ནི་ འགལ་བ་མེད་ ॥ ༡༠༠

वक्तुं निसर्गसुरभि वपुरव्याजसुन्दरं ।
 अकारणरिपुधन्द्रो निर्निमित्तसुहृत्स्मरः ॥२००॥

རང་བཞིན་ ལྷ་མེད་ ཁ་ རི་ཞིས་ ।
 རྩེ་ལ་མེད་པར་ཡང་ ལྷ་མེད་ བཟློད་པ་ ।
 ལྷ་མེད་ དག་ཏུ་ ལྷ་མེད་ དག་ ।
 ལྷ་མེད་མེད་པར་ འདོད་པ་ ལྷ་མེད་ ॥ ༡༠༠

निसर्गादिपदैरत्र हेतुः साक्षान्निवर्तितः ।
 उक्तञ्च सुरभित्वादिफलं तत्सा विभावना ॥२०१॥

རང་བཞིན་ལྷ་སོགས་ ཆོག་གིས་ འདིར་ ।
 ལྷ་ནི་ དངོས་སུ་ རབ་བཞུགས་ ཅིང་ ।

རི་ཞིས་ ཉིད་ སོགས་ འབྲས་བུ་ བཟོད་ །

དེ་ལྟེང་ དེ་ནི་ སྤྱིད་པ་ཅན་ ॥ ༤༠

वस्तु किञ्चिदभिप्रेत्य तत्तुल्यस्यान्यवस्तुनः ।

उक्तिसंक्षिप्तरूपत्वात् सा समासोक्तिरिष्यते ॥२०२॥

དངོས་པོ་ འགའ་ལ་ བསམས་བྱས་ནས་ །

དེ་དང་ མཚུངས་པའི་དངོས་པོ་གཞན་ །

བསྐྲུས་པའི་ཚུལ་གྱིས་ བཟོད་བྱེད་པ་ །

དེ་ནི་ བསྐྲུས་པ་ བཟོད་པར་ འདོད་ ॥ ༤༠

[24b]पिबन्मधु यथाकामं भ्रमरः फुल्लपङ्कजे ।

अप्यसन्नद्धसौरभ्यं पश्य चुम्बति कुङ्कुलं ॥२०३॥

བྱང་པ་ ཇི་ལྟར་འདོད་པ་བཞིན་ །

པདྨ་ བྱས་ལ་ སྤྲང་ཅི་ འབྲངས་ །

རི་ཞིས་ བྱས་པ་ས་ཡིན་ ཡང་ །

མེ་དྲོག་ཁ་ས་བྱེ་ སྤྲོར་ ཉེས་ ॥ ༤༡

इति प्रौढाङ्गनाभस्वरतिलोलस्य रागिणः ।

कस्याश्चिद्विह बालायामिच्छाः ष्टुत्तिर्विभाव्यते ॥२०४॥

ऊर्णसंभूतं सुदंभैर्दंभं स'स'य ।

दंभ'द'वर्त' हे'दंभ'स' व'ते'स'व' दंभ ।

सु'स' दंभ'द'वि'द' दंभ'य' य'द' ।

द'द'द'व' द'व'य'व' सु'द'व'द'सु'द ॥ १०८

विशेष्यमात्रमिहोपि तुल्याकारविशेषणा ।

अस्त्यसावपराप्यस्ति भिन्नाभिन्नविशेषणा ॥२०५॥

सु'द'व'द'उ'द' उ'स' स'द'द' उ'द' ।

सु'द'व'द' उ'स'व' स'सु'द'स'व'द'द' य'द' ।

सु'द'व'द' स'द'द' स'द'द' स'द' ।

द'द'द' स'स'द'व' दंभ' सु'द' य'द' ॥ १०९

रुढमूलः फलभरैः पुष्पाञ्जनिशमर्थिनः ।

सान्द्रच्छायो महावृक्षः सायमासादितो मया ॥२०६॥

ཚ་བདན་ འབྲས་བུའི་ ཁྲ་གྱིས་ བློ་
 སྒྲོང་ནས་སྒྲོང་ དཔལ་ལྷན་ སྒྲོང་བར་བྱེད་
 གྱིབ་མ་ སྒྲོང་བའི་ སྒྲོང་བ་ཆེ་
 འདི་ནི་ བདག་གིས་ ཡང་དག་ ཐོབ་ ॥ ༥༩

अनल्पविटपाभोगः फलपुष्पसमृद्धिमान् ।
 सच्छायः स्थैर्यवान्दैवादिष लब्धो मया द्रुमः ॥२०७॥

ཡལ་གའི་ བྱོན་ནི་ མི་རུང་ཞང་
 མི་དོག་ འབྲས་བུ་ སྒྲོང་སྒྲོང་འགྲུ་
 དཔལ་ལྷན་ གྱིབ་བསིལ་ བདན་ལྷན་བའི་
 ཤིང་འདི་ བདག་གིས་ སྒྲོང་བས་ རྒྱད་ ॥ ༥༩

उभयत्र पुमान्कश्चिद्भक्षत्वेनोपवर्णितः ।
 सर्वे साधारणा धर्माः पूर्वत्रान्यत्र तु द्वयं ॥२०८॥

གཉི་ག་ ལ་ ཡང་ སྒྲོང་བུ་འགྲུ་
 སྒྲོང་བ་ཉིད་ གྱིས་ ཉི་བར་བསྒྲུགས་

ཆོས་རྣམས་ བསམས་ཅད་ སྤྲོ་མ་ལ།

ཕུན་མོང་ གཞན་ལ་ རྣམ་པ་ གཉིས་ ॥ १०༥

निवृत्तव्यालसंसर्गो निसर्गमधुराशयः ।

अयमम्भोनिधिः कष्टङ्कालेन परिशोष्यते ॥२०६॥

སྤྱལ་ངན་ འགྲོགས་པ་ དང་ བལ་ནིང་།

རང་བཞིན་གྱིས་ རི་ མངར་བའི་གནི།

ཀྲེ་མ་ ཅུ་ ཡི་ གཏེར་ འདི་ རི།

དུས་ཀྱིས་ ཡོངས་སུ་བསྐྱམ་པར་འགྱུར་ ॥ १०६

इत्यपूर्वसमासोक्तिः[25a] पूर्वधर्मनिवर्तनात् ।

समुद्रे तत्समानस्य पुंसो व्यावृत्तिसूचने ॥२१०॥

ཀྲེ་མཚོ་ ལ་ རི་ རི་ མཚུངས་པ།

སྐྱིས་བུའི་ རྒྱུག་པ་ གསལ་བྱེད་ཅིང་།

སྤྲོ་མའི་ཆོས་ རི་ བསྐྱོག་པའི་ ཕྱིར།

འདི་རི་ སྤྲོ་མེད་ བསྐྱམ་པར་ བརྗོད་ ॥ ११०

विवक्षा या विशेषस्य लोकसीमातिवर्त्तनी ।

असावतिशयोक्तिः स्यादलंकारोत्तमा यथा ॥२११॥

सुद-पद- श्रु- र्- वहे- र- र- र- र- र- र- ।

र- र- र- र- र- र- र- र- र- र- र- र- ।

सु- र- र- र- र- र- र- र- र- र- र- ।

सु- र- र- र- र- र- र- र- र- र- र- ॥ २११ ॥

मल्लिकामालभारिण्यः सर्वार्ङ्गीनार्द्रचन्दनाः ।

क्षोमवत्यो न लक्ष्यन्ते ज्योत्स्नायामभिसारिकाः ॥२१२॥

स- र- र- र- र- र- र- र- र- र- र- ।

स- र- र- र- र- र- र- र- र- र- र- ।

र- र- र- र- र- र- र- र- र- र- ।

स- र- र- र- र- र- र- र- र- र- र- ॥ २१२ ॥

चन्द्रातपस्य बाहुल्यमुत्तमुत्कर्षवत्तथा ।

संशयातिशयादीनां व्यक्त्य किञ्चिद्विश्यते ॥२१३॥

ལྷ་བའི་ འོད་ནི་ ལྷག་པ་ ཉིད།
 བྱད་འཕགས་ལྷན་ བཟོད་ དེ་བཞིན་དུ།
 བེ་ཆོས་ སུལ་བྱུང་ ལ་སོགས་ ཀྱང་།
 གསལ་ སྤྱིར་ ཟུང་བྱད་ བལྷན་པར་བྱ། ॥ ४२३

स्तनयोर्जघनस्यापि मध्ये मर्ध्यं प्रिये तव ।
 अस्ति नास्तीति संदेहो न मेघापि निवर्त्तते ॥२१४॥

དགའ་མ་ བྱོད་ཀྱི་ རྩ་མ་ དང་།
 དཔྱི་ཡི་ བར་ན་ སླེད་པ་ ནི།
 ཡོད་ དང་ སླེད་ ཅེས་ བདག་གི་ ནི།
 བེ་ཆོས་ ད་དུང་ ལྷག་མ་གྱུར། ॥ ४२ॣ

निर्णेतुं मध्यमस्तीति शक्यन्तव नितम्बिनि ।
 अन्यथानुपपत्त्यैव पयोधरभरणितेः ॥२१५॥

ནི་དཔྱི་ནི་ བྱོད་ ལ་ ནི།
 སླེད་པ་ ཡོད་ ཅེས་ ཇེས་པར་ནས་

འོ་མ་འཛིན་པའི་བྱུང་བ་གནས་པ།
 རྣམ་པ་གཞན་དུ་སྤྱིད་མ་ཡིན། ॥ ४१४

अहो विशालम्भूपालभुवनत्रितयोद्वरं ।
 माति मानुमशक्योपि यशोराशिर्यदत्र ते ॥२१६॥

ཁྱིེད་ཀྱི་གྲགས་པའི་སྤང་པོ་ནི།
 དབག་ནས་མིན་ཡང་འདིར་གོང་བ།
 ས་སྤྱིང་སྤྱིད་པ་གསུམ་གྱི་ནི།
 ཁོངས་དག་ཅེ་མ་གྱིན་དུ་ཡངས། ॥ ४१५

अलंकारान्तराणा[25b]मप्याहुरेकं परायणं ।
 वागीशमहितामुक्तिमिमामतिशयाह्वयाम् ॥२१७॥

ངག་གི་དབང་པོས་སེལ་བྱུང་བ།
 སྤུང་བྱུང་ཞེས་བྱ་བའི་དེ་འདི།
 རྒྱན་ནི་གཞན་པ་རྣམས་ཀྱི་ཡང་།
 གཅིག་ཕུ་དབྱང་གཉེན་ཉིད་ད་བའི་དེ། ॥ ४१६

अन्यथैव स्थिता वृत्तिश्चेतनस्येतरस्य वा ।

अन्यथोत्प्रेक्ष्यते यत्र तामुत्प्रेक्षां विदुर्यथा ॥२१८॥

सोमसः॒भू॒तः॒ द॒वा॒ना॒मः॒ उ॒वा॒चः॒ श्रु॒तः॒ ।

क॒सः॒ च॒ वा॒च॒नः॒ द॒वा॒ना॒मः॒ च॒रु॒तः॒ ।

वा॒च॒नः॒ क॒सः॒ वा॒च॒नः॒ च॒रु॒तः॒ च॒ ।

दे॒वि॒ च॒रु॒तः॒ द॒वा॒ना॒मः॒ च॒रु॒तः॒ ॥ ११८

मध्यन्दिनार्कसन्तप्तः सरसीं गाहते गजः ।

मन्ये मार्तण्डगृहाणि पद्मान्युद्धर्तुमुत्सुकः ॥२१९॥

श्रे॒तः॒ वा॒च॒नः॒ श्रे॒तः॒ वा॒च॒नः॒ च॒रु॒तः॒ च॒ ।

वा॒च॒नः॒ च॒रु॒तः॒ च॒रु॒तः॒ च॒रु॒तः॒ च॒ ।

श्रे॒तः॒ वा॒च॒नः॒ वा॒च॒नः॒ च॒रु॒तः॒ च॒ ।

वा॒च॒नः॒ च॒रु॒तः॒ च॒रु॒तः॒ च॒रु॒तः॒ च॒ ॥ ११९

स्नानं पातुं विसान्यतुं करिणो जलगाहनम् ।

तद्वैरनिष्क्रयायेति कविनोत्प्रेक्ष्य वर्णयते ॥२२०॥

ཁྲམ་ནང་ བདུང་དང་ བད་ཚུ་ དག །

བཟུང་ སྤྱིར་ ལག་ལུན་ ལུང་འཇུག་པ།

དེ་ནི་ ཁོན་ལན་ ལྷན་ སྤྱིར་ཞེས།

སྒྲན་ངག་སྐུན་ གྱིས་ རབ་བརྟགས་ བཛྲོད ༥ ५५

कर्णस्य भूषणमिदं मदायतिनिगोधिनः ।

इति कर्णोत्पलं प्रायस्तत्र दृष्ट्या विलङ्घ्यते ॥२२१॥

འདི་ནི་ བདག་གི་རིང་བ་དག །

འགོག་བྱེད་ རྟ་བའི་ལྷན་ ཞེས་ དེ།

ཁྱོད་ཀྱི་ མིག་གིས་ རྟ་བ་ཡི།

ཡུལ་ དག་ལ་ འགོངས་པ་ འདྲ ༥ ५५

अपाङ्गमागपातिन्या दृष्टेरंशुभिरुत्पलं ।

रूपश्यते वा नचैवन्त कविनोत्प्रेक्ष्य कथ्यते ॥२२२॥

ཁྲུང་ ལུང་ བེ་ ལྷང་གུར་པ།

མིག་གི་འོད་ཀྱིས་ ཡུལ་ལ།

རེག་གས་ མིན་ ཡང་ ལྷན་ངག་མཁན ། ༤

དེ་ལྟར་ རབ་དྲ་བདགས་དེ་ བཟློན ། ༥

लिम्पतीव तमोङ्गानि वषंतीवांजनं नभः ।

इतीदमपि भूयिष्ठमुत्प्रेक्षालक्षणां न्वितं ॥२२३॥

མན་བ་ ལུས་ ལ་ འབྲུག་བ་ བཞིན །

མཁའ་ནི་ སིག་སྒྲན་ ཆར་འབབས་ བཞིན །

ཞེས་འདི་ ཡང་ རོ་ རབ་དྲོག་གི །

མཚན་ཉིད་ལྟར་བ་ ཤིན་དུ་ མང་ ། ༥

केषांचिदुपमाभ्रान्ति[26a]खिञ्चुत्येह जन्यते ।

नोपमानं तिङन्तेनेत्यतिव्रम्यासमाश्रितं ॥२२४॥

འདིར་ནི་ བཞིན་གྱི་སྒྲ་ཡིས་ འགའ །

དིང་ ཡི་ མཐའ་ ཡིས་ དབེ་ མ་ ཡིན །

ཞེས་བ་ ཡིད་ཆེས་ གསུངས་ འདས་ནས །

དབེ་ཉིད་དུ་ མི་ འབྲུལ་བ་ སྒྲི ། ༦

उपमानोपमेयत्वं तुल्यधर्मव्यपेक्षया ।

लिम्पतेस्तमसश्चासौ धर्मः को नु समीक्ष्यते ॥२२५॥

दघे दद दघेदुग्रीद दघेदि ।

मकुदसददिहस द कुसदस न ।

दुगुगद द न कि मरुद द ।

हस ददि मदिदददगुद दस उ ॥ २२५

यदि लेपनमेवेष्टं लिम्पतिर्नाम कोपरः ।

स एव धर्मो धर्मो चेत्यनुन्मत्तो न भाषते ॥२२६॥

गददि दुगुगदग्रीद ददिद न ।

दुगुग उददुगद गदरुद उ ।

दिग्रीद हस द हसउर दद ।

रुसद मकुस दद म दिद ॥ २२६

कर्ता यद्युपमानं स्यान्न्यभूतोसौ क्रियापदे ।

स्वक्रियासाधनव्यग्रे नालमन्यद्वयपेक्षितुं ॥२२७॥

གལ་ཏེ་ བྱེད་པ་ དཔེ་ ཡིན་ ན །
 བྱ་ཚིག་ ལ་ འདི་ དབང་བྲལ་ འགྱུར་ །
 རང་གི་ བྱ་ སྐྱུ་པ་ མི་ནུས་པ་ །
 གཞན་གྱི་ ལྷོས་བྱར་ མི་འགྱུར་རོ ༥ ༢༢༥

यो लिम्पत्यमुना तुल्यं तम इत्यपि शंसतः ।
 अङ्गानीति न सम्बद्धं सोपि मृग्यः समो गुणः ॥२२८॥

གང་གིས་ འབྱུག་པ་ འདི་ དང་ ནི །
 བྱ་ན་པ་ མཚུངས་ ཞེས་ སྐྱ་ ན་ ཡང་ །
 ལུས་ལ་ ཞེས་པ་ མ་འབྲེལ་ ཏེ །
 དེ་ ཡང་ ཡོན་ཏན་ མཚུངས་པ་ བཟུ ༥ ༢༢༦

यथेन्द्रुरिव ते वक्त्रमिति कान्तिः प्रतीयते ।
 न तथा लिम्पतौ लेपादन्यदत्र प्रतीयते ॥२२९॥

དཔེར་ན་ ཁྱེད་ གཞིང་ རྒྱ་པ་ བཞིན་ །
 ཅེས་པས་ མཛོས་པ་ རྟོགས་འགྱུར་ ཏེ །

དེ་བཞིན་ འབྲུག་པ་ འདི་ ལ་ ནི །

འབྲུག་པ་ ལས་ གཞན་ རྟོགས་ ས་ཡིན ། ॥ २३०

तदुपश्लेषणार्थीयं लिम्पतिर्द्धान्तकर्तृकः ।

अङ्गकर्मा च पुंसैवमुत्प्रेक्षित इतीष्यते ॥२३०॥

དེ་ཤིར་ འབྲུག་པ་ འདི་ དང་ ནི །

སྟན་པ་ བྱེད་པ་ ལུས་ ཀྱང་ ལས །

ཉི་བར་སྦྱར་དོན་ སྐྱེས་བྱ་ ཡིས །

དེ་ལྟར་ རབ་བརྟགས་ ཞེས་ འདོད་བྱ ། ॥ २३०

मन्ये श[26b]ङ्के ध्रुवं प्रायो नूनमित्येवमादिभिः ।

उत्प्रेक्षा व्यज्यते शब्दैरिवशब्दोपि तादृशः ॥२३१॥

སྐྱེས་ དང་ རྟོགས་ དང་ ཇེས་ དང་ འདྲ །

མིན་ནས་ ཞེས་པ་ ལ་སོགས་པའི །

སྐྱ་ ཡིས་ རབ་བརྟགས་ གསལ་བར་བྱེད །

བཞིན་ གྱི་ སྐྱ་ ཡང་ དེ་དང་འདྲ ། ॥ २३१

हेतुश्च सूक्ष्मलेशौ च वाचामुत्तमभूषणं ।

कारकज्ञापकौ हेतू तौ च नैकविधौ यथा ॥२३२॥

कुं दं घृत्तं कं दणं रे ।

कैणं कृत्तं दणं गीं कुं गीं कर्त्तं ।

कुं रे सुदं गेणं सुदं ।

देदणं कृत्तं दं दुत्तं दवे ॥ ४३४

अयमान्दोलितप्रौढचन्दनद्रुमपल्लवः ।

उत्पादयति सर्वस्य प्रीतिं मलयमारुतः ॥२३३॥

संलंलं लं कृत्तं गीत्तं रे ।

कृत्तं कृत्तं दं गीत्तं दं लं ।

लंलंलंलं कृत्तं दं सुदं दं लं ।

कुं गीं दणं दं कृत्तं दं सुदं ॥ ४३५

प्रीत्युत्पादनयोगस्य रूपस्यात्रोपबृंहणं ।

अलंकारतयोद्घष्टं निवृत्तावपि तत्समं ॥२३४॥

དགའ་བ་ སྐྱེད་པར་ བཅོས་པ་ ཡི །
 རང་བཞིན་ ཉེ་བར་སྦྱར་བ་ འདི །
 གྱུན་ ཉིད་ ཀྱིས་ རི་ རབ་བཅས་ཏེ །
 རྫོགས་པ་ དག་ ཀྱང་ དེ་དང་མཚུངས ། ॥ २३

चन्दनारण्यमाधूय स्पृष्ट्वा मलयनिर्झरान् ।
 पथिकानामभावाय पवनोयमुपस्थितः ॥२३५॥

མ་ལ་ཡ་ ཡི་ རུ་གྱུན་ ལ །
 དག་ ཅིང་ ཚུན་ བགས་ བསྐྱེད་ནས །
 རྒྱང་ འདི་ འགྲོན་པོ་ རྣམས་ དག་ རི །
 ཉམས་པར་བྱ་སྤྱིར་ ཉེ་བར་གནས ། ॥ २३५

अभावसाधनायालमेवम्भूतो हि मारुतः ।
 विरहज्वरसंभूतमनोऽकारोचके जने ॥२३६॥

དེ་ལྟར་ བྱང་བའི་ རྒྱང་ གིས་ རི །
 འབྲེལ་བའི་ རིམས་ ལས་ བྱང་བྱར་བ །

སྒྲིབ་ ཡིད་འོང་ ལ་ སྒྲིབ་ བ །

ཉམས་པ་ སྒྲིབ་པ་བྱེད་པར་ནུས ། ॡ३७

निर्वर्त्य च विकाय च हेतुत्वन्तदपेक्षया ।

प्राप्ये तु कर्मणि प्रायः क्रियापेक्षैव हेतुता ॥२३७॥

འགྲུབ་པར་བྱ་ དང་ རྣམ་འགྲུར་ ལ །

རེ་ཉིད་ ལ་ ལྷོས་ གྱུ་ཉིད་དེ །

འཁོབ་པའི་ ལས་ ལ་ པལ་ཆེར་ ཞི །

བྱ་བ་ ལ་ ལྷོས་ གྱུ་ཉིད་དོ ॥ ॡ३८

हेतुनिर्वर्त्तनीयस्य दर्शितः शेषयोर्द्वयोः ।

वत्सो[27a]दाहरणद्वन्द्वं ज्ञापको वर्णयिष्यते ॥२३८॥

འགྲུབ་པར་བྱེད་པའི་ གྱུ་ དག་ ཞི །

བསྐྱེད་ ལྷག་ས་ གཉིས་པོ་ ཡེ །

དཔེར་ བཟོད་ གཉིས་ ཞི་ བཞེད་བྱས་ནས །

ཤེས་པར་བྱེད་པ་ བསྐྱེད་པར་བྱ ། ॡ३९

उत्प्रबालान्यरण्यानि वाप्यः संकुलपङ्कजाः ।

चन्द्रः पूर्णश्च कामेन पान्थदृष्टिविषकृतं ॥२३६॥

ལོ་འདབ་ གསར་འབྲུངས་ བླ་ས་ཚལ་ ནང་

འདབ་བརྒྱ་ རབ་དུ་རྒྱས་བའི་ རྫོང་ ।

ཟླ་བ་ རྒྱས་བ་ འདོད་བ་ ཡིས།

འགྲོན་པོ་ ལྷ་བའི་ དུག་ད་ བྱས། ॥ २३७

मानयोग्यां करोमीति प्रियस्थाने कृतां सखीम् ।

बाला भ्रूभङ्गजिह्वाक्षी पश्यति स्फुरिताधरं ॥२४०॥

ཁངས་བ་ གོས་ས་བར་བྱའི་ ཞེས།

གྲོགས་མོ་ མཇའ་བོའི་ གནས་བཞེད་ལ།

བུ་མོ་ སློན་འབྲོག་ མིག་ཡོན་ བྱིས།

མཆུ་ བོ་ གཡོ་ ཞིང་ ལྷ་བར་བྱེད། ॥ २४०

गतोत्तमर्को भातीन्दुर्यान्ति वासाय पक्षिणः ।

इतीदमपि साध्वेव कालाघस्थानिवेदने ॥२४१॥

ཉི་མ་ རྒྱུ་གྲུ་ ལྷ་བ་ མཛོམ་ །
 འདབ་ཆགས་ རྣམས་ ཉི་ གནས་སུ་ མོང་ །
 ཞེས་པ་ འདི་ ཡོང་ ཏུས་ གྱི་ སྐབས་ །
 གོ་བར་བྱེད་པ་ ལེགས་པ་ ཉིད་ ॥ ༢༠།

*अबभ्यैरिन्दुपादानामसाध्यैश्चन्दनाभिसाम् ।

देहोष्मभिः सुबोधं ते सखि कामातुरं मनः ॥२४२॥

གོ་གས་མོ་ འདོད་པས་ གཟིར་བའི་ ཡིད་ །
 ལྷ་བའི་ ཟེར་ གྱིས་ མི་ལྷོག་ ཅིང་ །
 ཅ་རྒྱ་ རྩ་ ཡིས་ མི་བཟོད་པ་ །
 ལུས་ གྱི་ རྩོད་ གྱིས་ ལེགས་པར་རྟོགས་ ॥ ༢༠༢

इति लक्ष्याः प्रयोगेषु रम्या ज्ञापकहेतवः ।

अभावहेतवः केचिद्व्याक्रियन्ते मनोहराः ॥२४३॥

ཞེས་པའི་ སྦྱོར་བ་ རྣམས་ ལ་ ཉི་ །
 ཡིད་འོང་ ཤེས་བྱེད་ རྩ་ ཏག་ མཚོན་ །

དངོས་མེད་ ལྷ་ ཉི་ ཡིད་ འཕྲོག་པ།

འགའ་ཞིག་ རབ་དྲུ་བསྟན་པར་བྱ། ॥ ३༣

अनभ्यासेन विद्यानामसंसर्गेण धीमतां ।

अनिग्रहेण चाक्षाणां जाय[27b]ति व्यसनं नृणां ॥२४४॥

རིག་པ་ རྣམས་ ཉི་ མ་གཤམས་ དང་།

སློ་ལྟ་ རྣམས་ དང་ མ་འགྲོགས་ དང་།

དབང་པོ་ རྣམས་ ཉི་ མ་བསྐྱམས་པས།

མི་ རྣམས་ རབ་དྲུ་གདུང་བར་ ལྱུར། ॥ ३༣

गतः कामकथोन्मादो गलितो यौवनज्वरः ।

क्षतो मोहश्च्युता तृष्णा कृतं पुण्याश्रये मनः ॥२४५॥

དྲ་བའི་ གདམ་ ལྱིས་ ལྷོས་པ་ མོང་།

ལང་ཚོ་ཡི་ ཉི་ རིམས་ དག་ རྣམས་།

སློངས་པ་ ཟད་ ཅིང་ སྤེད་པ་ འཕོས།

བསོད་ནམས་གནས་ ལ་ ཡིད་ དག་ ལྱས། ॥ ३༣

वनान्यमूनि न गृहाण्येता नद्यो न योषितः ।

मृगा इमे न दायादास्तन्मे नन्दति मानसं ॥२४६॥

ནགས་ཚལ་ འདི་དག་ ཁྱིམ་ མ་ཡིན།

རྒྱ་ཁྱོད་ འདི་དག་ བྱད་མེད་ མིན།

དི་དགས་ འདི་དག་ བྱ་ཚ་ མིན།

དེ་ཕྱིར་ བདག་ གི་ ཡིད་དགའ་འོ ॥ २८६

अत्यन्तमसदार्याणामनालोचितचेष्टितं ।

अतस्तेषां विवर्धन्ते सततं सर्वसंपदः ॥२४७॥

ལྷན་དུ་ མ་བདགས་ སྤྱོད་པ་ རི།

འདགས་པ་ རྣམས་ ལ་ ཡོད་ མ་ཡིན།

དེ་ཕྱིར་ དེ་དག་ རྣམས་ གྱི་ རི།

སྤུང་ཚོགས་ གྲམས་ཅད་ དག་དུ་ འཕེལ་ ॥ २८७

उद्यानसहकाराणामलुम्बिष्ठा न मञ्जरी ।

देयः पथिकनारीणां सतिलः सलिलाञ्जलिः ॥२४८॥

སྒྲིང་ཚལ་ ས་ཏ་ཀླ་ར་ རྣམས་ །
 སྒྲིང་མ་ མ་འབྲུངས་པ་ མིན་ ན་ །
 འགྲོན་པ་ རྣམས་ ཀྱི་ བྱད་མེད་ རི་ །
 དེལ་བཅས་ཁྱོར་ཚུ་ སྒྲིན་བྱར་འགྱུར་ ॥ ༢༧

प्रागभावादिरूपस्य हेतुत्वमिह वस्तुनः ।
 भावामावस्वरूपस्य कार्यस्योत्पादनमिति ॥२४६॥

ཡོད་ དང་ མེད་པའི་ རང་བཞིན་ ཀྱི་ །
 འབྲས་བྱ་ སྒྲིང་པ་ དག་ ལ་ འདིར་ །
 སྒྲིན་མེད་ ལ་སོགས་ རང་བཞིན་ ཀྱི་ །
 དངོས་པོ་ ཡི་ རི་ ཀྱི་ ཉིད་དོ་ ॥ ༢༨

दूरकार्यस्तत्सहजः कार्यान्तरजस्तथा ।
 अयुक्तयुक्तकारी चेत्यसंख्याभिन्नहेतवः ॥२५०॥

རིང་འབྲས་ དེ་དང་ལྷན་ཅིག་སྒྲིས་ །
 དེ་བཞིན་ འབྲས་ མ་ཐག་ སྒྲིས་དང་ །

རིགས་ མིན་ རིགས་པ་བྱེད་ ཅེས་པ།

མཚར་བའི་ བྱ་ རྣམས་ བྲངས་མེད་དོ། ॥ २१०

तेमी प्रयोगमार्गेषु गौण[28a]वृत्तिव्यपाश्रयाः ।

अत्यन्तसुन्दरा दृष्टास्तदुदाहृतयो यथा ॥२५१॥

འདྲ་ དག་ སྟོར་བའི་ ལམ་ རྣམས་ ལ།

བལ་བའི་ འཇུག་པ་ ལ་ བརྟེན་པ།

གིན་དུ་ མཛེས་པ་ དག་ མཐོང་སྟེ།

དེ་ཡི་ དཔེར་བཞིན་ ཇི་ལྟར་ན། ॥ २११

त्वदपाङ्गाङ्ग्यं जैत्रमङ्गजात्वं यदंगने ।

मुक्तन्तदन्यतस्तेन सोप्यहं मनसि क्षतः ॥२५२॥

ལྷས་ཅན་ བྱིན་ མིག་རྒྱར་ ཅས་པ།

བྱལ་བྱེད་ ལྷས་སྟེས་ དག་ གི་ མཚོན།

གང་ དེ་ གཞན་ ལ་ རབ་འཕངས་པ།

དེ་ ཡིས་ བདག་ གི་ ཡིད་ཀྱང་ བཅོམ། ॥ २१२

आविर्भवति नारीणां वयः पर्यस्तशैशवं ।

सहेव विविधैः पुंसामङ्गजोन्मादविभ्रमैः ॥२५३॥

श्लेस'सु' लुस'श्लेस' गृस' कुँस'पदि ।

कस'लसुल' लू'कैणस' लू'र'तेण' छिद ।

सुद'तेद' कसस' ल' सु'स' के ।

यै'स'सु'कव'पदि' क'कै' श्लेस ॥ २५३

पञ्चात्पर्यस्य किरणानुदीर्णञ्चन्द्रमण्डलं ।

प्रागेव हरिणाक्षीणामुदीर्णो रागसागरः ॥२५४॥

सुद'छिद' रै'द'णस' खिण'तव' सु ।

कणस'पदि' सु'स'कै' सु'स'पद'सु ।

सु'स'कस' रै'द'त्रे'द' रव'ल'सु'स'पस ।

लू'व' यै' के' द'गृ'ल'ल'सि'द' ए'द ॥ २५४

राज्ञां हस्तारविन्दानि कुण्डलीकुण्डले कुतः ।

दैव त्वच्चरणद्वन्द्वरागबालातपः स्पृशन् ॥२५५॥

ལྷ་ཅིག་ བྱིད་ཀྱི་ ཞབས་ གཉིས་པོ་ ।
 དམར་བ་ ཉི་ གཞོན་ ལ་ རེག་པས་ ।
 རྒྱལ་པོ་ རྣམས་ ཀྱི་ ལག་པ་ ཡི་ ।
 བདྲོ་ རྒྱས་པར་བྱེད་པ་ ཅི ॥ ༢༥༣

पाणिपद्मानि भूपानं संकोचयितुमोशते ।
 त्वत्पादनखचन्द्राणामर्चिषः कुन्दनिर्मलाः ॥२५६॥

བྱིད་ ཀྱི་ ཞབས་ སེན་ལྷ་བ་ ཡི་ ।
 འེད་ཟེར་ ཀྱུན་ད་ སྒྱི་མེད་ རྣམས་ ।
 ས་སྦྱོང་རྣམས་ཀྱི་ ལག་པ་ ཡི་ ।
 བདྲོ་ རྒྱས་པར་བྱེད་ ལ་ དབང་ ॥ ༢༥༤

इति हेतुविकल्पस्य दर्शिता गतिरीदृशी ।
 इक्षिताकारलक्ष्योर्थः सौक्ष्म्यात्सूक्ष्म इति स्मृतः ॥२५७॥

ཞེས་པ་ རྒྱ་ ཡི་ རྣམ་ཏོག་ གི་ ।
 ལྷགས་ བློ་ འདི་འདྲ་ དག་ད་ བསྟན་ ।

ཟུར་དང་ རྣམ་པས་ མཚན་པའི་ རོན།

ཕྱ་ཕྱིར་ ཕྱ་མོ་ ཞེས་པར་ བཤད ༥ ༢༧

कदा नौ[28b]सङ्गमो भावीत्याकीर्णे वक्तुमक्षमः ।

अवेत्य कान्तमबला लीलापद्मं न्यमीलयत् ॥२५८॥

ནམ་ ཞིག་ འུ་ཅག་ འགྲོགས་འགྱུར་ ཞེས།

ཚོགས་སུ་ བཟོད་པ་ མ་བཟོད་པའི།

མཇའ་བོ་ རིག་ནས་ བྱད་མེད་ ཀྱིས།

ཅེ་ དགའི་ པདྨ་ ཟུམ་པར་བྱས ༥ ༢༨

पद्मसंमिलनादत्र सूचितो निशि सङ्गमः ।

आश्वासयितुमिच्छन्त्या प्रियमंगजपीडितम् ॥२५९॥

ལུས་སྐྱེས་ དག་ གིས་ གཟིར་པ་ ཡི།

མཇའ་བོ་ དབྱགས་ དབྱང་ འདོད་པ་ ཡིས།

པདྨ་ ཟུམ་པར་བྱས་པ་ ལས།

འདིར་ ཅི་ མཚན་མོ་ འགྲོགས་པར་ བསྟན ༥ ༢༩

त्वदर्पितद्रुशस्तस्या गीतगोष्ठ्यामवर्धत ।

उद्दामरागतरला च्छाया कापि मुखाम्बुजे ॥२६०॥

ह्युं यीं खदुक् खरं त्रिं लं मीमा ।

गदं वसं गदं वीं कुञ्जेशं देव ।

कमलं वं रमं जितं कृतं वं यी ।

महेशं वं उं यं वृं वं वृं ॥ २६०

इत्यनुद्भिन्नरूपत्वादत्युत्सवमनोरथः ।

अनुलङ्घ्यैव सूक्ष्मत्वमभूदत्राप्यवस्थितः ॥२६१॥

रदं यं रं वं वं मं वं वं वं ।

दं वं वं दं वं वं वं वं वं ।

दं वं वं वं वं वं वं वं ।

दं वं वं वं वं वं वं वं ॥ २६१

लेशो लेशेन निर्भिन्नवस्तुरूपनिगूहनं ।

उदाहरण एवास्य रूपमाविर्भाव्यति ॥२६२॥

ཆ་ནི་ཆ་ ཡིས་ དངོས་བོ་ ཡི །
 རང་བཞིན་ ཇེས་བར་གསལ་བ་སྒྲེབ །
 དཔེར་བརྗོད་ཉིད་ ཀྱིས་ འདི་ ཡི་ ནི །
 རང་བཞིན་ ཇེས་བར་གསལ་བར་བྱ ༥ २५२

राजकन्यानुरक्तं मां रोमोद्धेदेन रक्षकाः ।
 अवगच्छेयुरा स्नातमहो शीतानिलं वनम् ॥२६३॥

ཀྱལ་བོའི་ བྱ་མོ་ ལ་ ཆགས་ བདག །
 སྐྱུ་ལོང་ ཀྱས་བ་ སྐྱུང་བ་བོས །
 རིག་བར་གྱུར་ལ་ ཀྱེ་མ་ ཚལ །
 བསིལ་བའི་སྐྱུང་ལྗན་ ཡིན་བར་ ཤེས ༥ २६३

आनन्दाश्रु प्रवृत्तं मे कथं हृष्टैव कन्यकाम् ।
 अक्षि [29a] मे पुष्परजसा वातोद्धूतेन दूषितं ॥२६॥

ཅི་ལྟར་ བྱ་མོ་ མཐོང་ ཉིད་ ན །
 བདག་ ལ་ དགའ་བའི་ མཆི་ མ་བྱུང་ །

རྒྱུང་གིས་གཙུག་པའི་མེ་དོག་གི།
 དུལ་གྱིས་བདག་མིག་སྤྲོ་ཕྱང་ངོ་ ॥ १७८

इत्येवमादौ स्थानेऽयमलंकारोतिशोभते ।
 लेशमेकेन्द्रिन्द्रिन्दां स्तुतिं वा लेशतः कृतां ॥ २६५ ॥

ཞེས་པ་ལ་སོགས་སྐབས་སུ་ནི།
 གྱུ་ལ་དེ་གི་དུ་མཛོས་པ་ཡིན།
 ཁ་ཅེག་ཆ་ལས་སྤང་པ་ལས།
 བཟློད་པ་བྱས་པ་ཆ་ཞེས་བཞེད་ ॥ १७९

युर्वेव गुणवान् राजा योग्यस्ते पतिरूर्जितः ।
 रणोत्सवे मनः सक्तं यस्य कामोत्सवादिपि ॥ २६६ ॥

གང་ཡིན་གཡུལ་གྱི་དགའ་སྟོན་ལ།
 འཛད་པའི་དགའ་སྟོན་པས་ཀྱང་ཆགས།
 གཟི་ལྷན་ལང་རྩོ་ཡོན་དན་ཅན།
 གུལ་འདི་ཁྱོད་གྱི་བདག་པོར་ཁོས་ ॥ १८०

वीर्योत्कर्षस्तुतिर्निन्दैवास्मिन् भावनिवृत्तये ।

कन्थायाः कल्पते भोगान्निर्विविक्षोर्निर्न्नरान् ॥

བཀོན་འགྲུས་ ཁུད་འཕགས་ བསྟོད་པ་ འདྲར་ ।

སྒྲུང་པ་ ཉིད་དེ་ ལོངས་སྟོད་ལ་ ।

གྲུག་དུ་ སྟོད་འདྲོད་ བུ་མོ་ཡི་ ।

བསམ་པ་ དག་ནི་ བརྒྱུག་པར་རྟེན་ ॥ ४९॥

चपलो निदंयश्चासौ जनः किन्तेन मे सखि ।

आगःप्रमार्जनायैव चाटवो येन शिक्षिताः ॥ २६८

གཤོད་པ་ རབ་ བཞིལ་ ཉིད་ ཀྱི་ སྟུར་ ।

གང་གིས་ སྒྲུག་པར་ སྒྲུ་བ་ བསྐྱབས་ ।

སྟེ་ལོ་ འདྲོ་ནི་ བཅེ་མེད་ བཤོ་ ।

གྲོགས་མོ་ དེ་ཡིས་ བདག་ལ་ ཅི་ ॥ ४९८

दोषाभासो गुणः कोपि दर्शितश्चादुकारिता ।

मानं सखीजनोद्दिष्टं कर्तुं रागादशक्त्या ॥ २६९ ॥

སྒྲེ་བོ་ བྲོགས་མོས་ རབ་བཟུན་ ཁིངས།
 ཆགས་ སྒྲིར་ བྲེད་པ་ མ་ནས་ནས།
 སྒྲོན་ ལྷར་ སྒྲང་ཡང་ ཡོན་དན་ བང་།
 སྒྲན་པར་ སྒྲ་བ་ ཉིད་ ཀྱང་ བཟུན། ॥ २७०

उद्दिष्टानां पदार्थानामनुदेशो यथाक्रमं ।
 यथासंख्यमिति प्रोक्तं संख्यानङ्कस इत्यपि ॥ २७०

དངོས་པོ་ རབ་དུ་བཟུན་པ་ རྣམས།
 རིས་པ་ བཞིན་དུ་ རྩེས་སྒྲོན་པ།
 བྱངས་ ནང་ རིས་པ་ བཞིན་ ཅེས་པ།
 བྱངས་ བཞིན་ ཅེས་པར་ རབ་དུ་བཟུང་། ॥ २७०

[29b] भ्रूवन्ते चोरिता तन्वि स्मितेक्षणमुखद्युतिः ।
 क्षातुमग्भःप्रविष्टायाः कुमुदोत्पलपङ्कजैः ॥ २७१ ॥

བྲུས་ལ་ ལུར་ནི་ རབ་བྲུགས་མ།
 བྲིད་ཀྱི་ འཇུས་ མིག་བཞིང་ མཛེས་ནི།

ཀུ་མུད་ ཨུའལ་ བུ་ལས།

བཀུས་པར་ ངེས་སོ་ བཀུགས་ཅན་ས། ॥ २११

प्रेयः प्रियतराख्यानं रसवत् रसपेशलं ।

ऊर्जस्वि रुढाहंकारं युक्तोत्कर्षं च तन्नयं ॥ २७२ ॥

དགའ་བ་ མཆོག་ཏུ་ དགའ་བར་ བཛོད།

ཉམས་ལྡན་ ཡིད་འོང་ ཉམས་དང་ལྡན།

བཟི་བཛིད་ ང་ཀུལ་ སྐྱེས་པ་ལྟེ།

དེ་བཀུས་ བྱད་འཕགས་དག་དང་ལྡན། ॥ २१२

अथ या मम गोविन्द जाता त्वयि गृहागते ।

कालेनैषा भवेत्प्रीतिस्तवैवागमनात्पुनः ॥ २७३ ॥

གོ་བོན་ ཁྱིད་ ཁྱིམ་ འོངས་པ།

དེང་ བདག་ དགའ་བ་ སྐྱེས་པ་ བཅང་།

དགའ་བ་ འདི་ནི་ སྐར་ཡང་ ཁྱིད།

དུས་ཀྱིས་ འོངས་ན་ འབྱང་བར་ འབྱུང་ ॥ २१३

इत्याह युक्तं विदुरो नान्यतस्तादृशी धृतिः ।

भक्तिमात्रसमाराध्यः सुप्रीतश्च ततो हरिः ॥ २७४ ॥

दे० अ० दे० द० म० व० वी० ५० र० स० ।

म० ७० र० स० म० ७० र० स० म० ७० र० स० ।

दे० अ० म० ७० र० स० म० ७० र० स० ।

र० व० म० ७० र० स० म० ७० र० स० ॥ २७५ ॥

सोमः सूर्यो मरुद्भूमिव्योम होतानलो जलं ।

इति रुपाण्यतिक्रम्य त्वां द्रष्टुं देव के वयम् ॥ २७६ ॥

ह० व० ७० र० स० म० ७० र० स० ।

म० ७० र० स० म० ७० र० स० म० ७० र० स० ।

दे० अ० म० ७० र० स० म० ७० र० स० म० ७० र० स० ।

ह० म० ७० र० स० म० ७० र० स० ॥ २७७ ॥

इति साक्षात्कृते देवे राज्ञो यद्राजवर्मणः ।

प्रीतिप्रकाशनं तच्च प्रेय इत्यनुगम्यतां ॥ २७८ ॥

མངོན་སུམ་ བྱས་པའི་ ལྷ་ལ་ནི །
 གྱལ་པོ་ དགའ་བའི་གོ་ཆ་ ཡིས །
 དགའ་བ་ རབ་དུ་གསལ་བྱས་ གང་ །
 དེ་ ཡང་ དགའ་བར་ རྗེས་རྟོགས་བྱ ༥ ५७५

मृतेति प्रेत्य संगंतुं यया मे मरणम्मतम् ।
 सैवान्वन्ती मया[30a]लब्धा कथमत्रैव जन्मनि ॥१७७॥

གི་བ་ ཞེས་བྱ་ པ་རེལ་དུ །
 གང་ དང་ འགྲོགས་སྤྱིར་ བདག་ འཆི་འདོད །
 ཡ་བརྟེ་དེ་ བདག་ གིས་ ནི །
 སྤྱི་ འདི་ཉིད་ལ་ ཇི་ལྟར་ ཐོབ ༥ ५७७

प्राक्प्रोतिर्दर्शिता सेयं रतिः शृंगारतां गता ।
 रूपबाहुल्ययोगेन तदिदं रसवद्भक्षः ॥२७८॥

དགའ་བ་ ཉིད་དུ་ སྤྱིར་ བསྟན་ འདིར །
 དགའ་བ་ སྤྱིག་པ་ ཉིད་ བྱར་པའི །

རང་བཞིན་ གྱུས་དང་ལྡན་བས་ན །
འདི་ནི་ ཉམས་དང་ལྡན་བའི་ ཚོག ༥ ༥༧

निगृह्य केरोष्वाकृष्टा कृष्णा येनाग्रतो मम ।
सोयं दुःशासनः पापो लब्धः किं जीवति क्षणं ॥२७६॥

གང་གིས་ ནག་མོ་ བདག་ བདུན་ནས །
སྒྲ་ནས་ བརྒྱང་སྟེ་ དངས་གྱུར་བ །
བལྟན་དཀའ་ སྒྲིག་ཅན་ ཐོབ་བ་ འདི །
སྒྲ་ཅིག་ འཆོ་བར་ གྱུར་རམ་ ཅི ༥ ༥༧

इत्याल्लह्य परां कोटीं क्रोधो रौद्रात्मतां गतः
भीमस्य पश्यतः शत्रुमित्येतद् रसवद्भवः ॥२८०॥

ཅེས་བ་ འཛིགས་ སྟེ་ དག་དག་ལ །
ལྟ་བའི་ ཁྲོ་བ་ མཆོག་གི་ མཐར །
འཛིགས་བ་ དག་པོའི་བདག་ཉིད་ གྱུར །
འདི་ ནི་ རོ་དང་ལྡན་བའི་ ཚོག ༥ ༥༨

अजित्वा सार्णवामुर्वीमनिष्ठा विविधैर्मलैः ।

अदत्त्वा चार्थमर्थिभ्यो भवेयं पार्थिवः कथम् ॥२८१॥

मर्कटं वत्सं स्यात् स्यात् क्रुत्वा त्वं ।

कृतं मत्तं मर्कटं वत्सं स्यात् क्रुत्वा ।

स्त्रीं वत्सं वत्सं कृतं स्यात् क्रुत्वा ।

स्यात् स्त्रीं वत्सं वत्सं वत्सं वत्सं ॥ २८२ ॥

इत्युत्साहः प्रकृष्टात्मा तिष्ठन्वीररसात्मना ।

रसस्त्ववङ्गिरामासां समर्थयितुमीश्वरः ॥२८२॥

उत्सवं स्त्रीं वत्सं वत्सं वत्सं वत्सं ।

वत्सं वत्सं वत्सं वत्सं वत्सं वत्सं ।

वत्सं वत्सं वत्सं वत्सं वत्सं वत्सं ।

वत्सं वत्सं वत्सं वत्सं वत्सं वत्सं ॥ २८३ ॥

यस्याः कुसुमशय्यापि कोमलाङ्ग्या रुजाकरो ।

साधिहोने कथं देवी हुताशनवतीं चिताम् ॥ २८३ ॥

ལུས་འཇམ་གང་ལ་བརྒྱ་ཡི།
 མལ་ལྷན་དག་ཀྱང་ཅུབ་བྱེད་ས།
 ལྷ་མོ་དེ་ནི་རོ་ཁང་དག།
 སྲིབ་ཟ་ལྷན་པར་ཇི་ལྟར་ཉལ། ॥ ༥༤༣

इति कारुण्यमुद्रिकमलं [30b] कारतया स्मृतम् ।
 तथा परेषु ब्रीभत्सहास्याद्भुतभयानकाः ॥ २८४ ॥

ཅེས་པ་སྒྲིང་ཇི་སྲིས་པ་ཡི།
 སྲིན་ཉིད་དུ་ནི་རབ་དུ་བཤད།
 དེ་བཞིན་གཞན་ཡང་སི་སྲུག་དང་།
 བཞད་གད་མེད་བྱང་འཇིགས་རྩང་ངོ་ ॥ ༥༤༣

पायं पायं तवारीणां शोणितं करसंपुटैः ।
 कौणपाः सह नृत्यन्ति कबन्धेरन्त्रभूषणाः ॥ १८५ ॥

སྲུ་སས་བསྲུན་པའི་སྲིན་པོ་རྣམས།
 མགོ་མེད་རོ་དང་ལྷན་ཅིག་ད།

ལག་པ་ སྤང་བས་ ཁྱིད་ དགའི་ ཁྲག་ ।
 འཕྱང་ཞིང་ འཕྱང་ཞིང་ གར་བྱེད་དོ ॥ ༢༥༥

इदमम्लानमालाया लम्बं स्तनतटे तत्र ।
 छाद्यतामुत्तरीयेण नवम्रखपदं सखि ॥ २८६ ॥

གོགས་མོ་ མེ་དོག་ མ་རྒྱུངས་མ་ ।
 ཁྱིད་ཀྱི་ ལུ་མའི་ ངོས་ལ་ནི་ ।
 སེན་རྩེས་ སར་པ་ ཆགས་པ་ རདི་ ।
 སྤྱིད་གཡོགས་ ཀྱིས་ ནི་ སྤྱིབ་པར་མཛོད་ । ༢༥༦

अंशुकानि प्रबालानि पुष्पं हारादिभूषणं ।
 शास्त्राश्च मन्दिराण्येषां चित्रमन्दनशाखिनां ॥ २८७ ॥

དགའ་ཚལ་ སྤྱོན་པ་ འདི་རྣམས་ ཀྱི་ ।
 འདབ་མ་ གསར་པ་ གོས་ བཟང་ དང་ ।
 མེ་དོག་ དོ་གལ་ ལ་ སོགས་ཅན་ ।
 ཡལ་འདབ་ ཁང་པར་གྱར་པ་ མཛར་ ॥ ༢༥༧

इदं मघोनः कुलिशं धारासंनिहितानलं ।

स्मरणं यस्य दैत्यस्त्रीगर्भपाताय कल्पते ॥ २८८ ॥

ཨེ་མོ་ དག་ལ་ མོ་གནས་པ།

བརྟུ་བྱེན་གྱི་ བོ་ དེ་རྩེ་ གང་།

འདི་ནི་ དན་ན་ ལྷ་མིན་ གྱི།

བུད་མེད་ མང་ལ་ བོ་ ལྷ་ང་བར་བྱེད་ ॥ २८८

वाच्यस्याग्राभ्यता योनिर्माधुर्ये दशितो रसः ।

इह त्वष्टरसायत्ता रसवत्ता स्मृता गिरां ॥ २८९ ॥

སྟན་པ་ བྲོང་པ་ ཉིད་མིན་ ལྷེས།

བརྩོད་བྱ་ཡི་ནི་ ཉམས་ དག་ བསྟན།

འདིར་ནི་ ཉམས་ བརྟུད་ དབང་བྱས་ཏི།

ཚོག་ཉམས་ ཉམས་དང་ལྷན་པར་ བཤད་ ॥ २८९

अपकर्त्ताहमस्मीति हृदि ते मा स्म भूद्वयम् ।

विमुखेषु न मे खङ्गः प्रहर्तुं जानु वाञ्छति ॥ २९० ॥

བདག་ནི་ གཞོད་བ་བྱེད་པོ་ ཞེས །
 ཁྱོད་ཀྱི་ སྒྲིང་ལ་ འཛིགས་ མ་བྱུང་ །
 བདག་གི་ རལ་གྱེ་ཕྱིར་ ཕྱོགས་ནསས །
 རྣམ་ཡང་ འཛོམས་པར་ འདོད་ མ་ཡིན ॥ १००

[31a] इति मुक्तः परो युद्धं निरुद्धो दर्पशालिना ।
 पुंसा केनापि तज्जङ्गयमूर्जस्वीत्येवमादिकं ॥ २९१ ॥

ཞེས་བ་ སྒྲིས་བྱ་ རྟོགས་ལྡན་ འགས །
 བཤུལ་དུ་ བཞན་ནི་ བཀལ་བྱས་ནས །
 གཏོང་བ་ དེ་ལྟ་བུ་ ལ་སོགས །
 བཟེ་བཞིན་ལྡན་པར་ ཤེས་པར་བྱ ॥ १०१

अर्थमिष्टप्रनाख्याय साक्षात्तस्यैव सिद्धये ।
 यत्प्रकारान्तराख्यानं पर्यायोक्तन्तद्विष्यते ॥ २९२ ॥

འདོད་དོན་ དངོས་སུ་ མ་བཞིན་པར །
 དེ་ཉིད་ འབྲུག་པར་བྱ་བའི་ ཕྱིར །

མ་པ་ གཞན་དག་ བཟོད་པ་ གང་ ।

དེ་ནི་ མ་གངས་ བཟོད་པར་ འདོད ॥ १०१

दशत्यसौ परभृतः सहकारस्य मञ्जरीम् ।

तमहं वारयिष्यामि युवाभ्यां म्वेरमास्यताम् ॥ २६३ ॥

ས་དྲ་ཀླ་རའི་ མྱི་མ་མས་ ।

གཞན་གྱིས་གསོལ་ འདིས་ ཟ་བར་བྱེད་ ।

དེ་ནི་ བདག་གིས་ བཟོག་པར་བགྱི་ ।

ཁྱེད་ གཉིས་ དལ་གྱིས་ འདུག་པར་མཛོད ॥ १०२

संगमय्य सखीं यूना संकेने तद्रतोत्सवम् ।

निर्वर्त्तयितुमिच्छन्त्या कयाप्यपसृतं ततः ॥ २६४ ॥

གོགས་མོ་ མྱིས་ཐུན་ ཐུན་བྱས་ནས་ ।

དེ་དག་འདུས་པར་ དགའ་བ་ཡི་ ।

དགའ་མྱོན་ སྐབ་དུ་ གཞུག་ འདོད་པས་ ।

འགའ་ཞིག་ དེ་ནས་ མཛོད་པར་གྱུར ॥ १०ॢ

किंचिदारभमाणस्य कार्यं देवबलात्पुनः ।

तत्साधनसमापत्तिर्या तदाहुः समाहितम् ॥ २९५

བྱ་བ་ འགའ་ཞིག་ ཚུམ་བ་ལ །

སྐལ་བ་ཡི་ ནི་ ལྷོབས་ལས་ ཀྱང་ །

དེ་ཡི་ སྐབ་བྱེད་ ལུན་ཚོགས་ གང་ །

དེ་ ནི་ ཀྱན་ད་པན་པར་བརྗེད ༥ २९५

मानन्तस्या निराकतुं पादयोर्मै नमस्यतः ।

उपकाराय दिष्ट्येदमुदीर्णं घनगर्जितं ॥ २९६ ॥

ཁངས་བ་ གཞིས་ལྷུར་ དེ་ཡི་ ནི །

ཀང་བ་དག་ལ་ ལུག་འཚལ་བ །

བདག་ལ་ པན་ལྷུར་ སྐལ་བ་ཡི །

འབྲུག་གི་ སྐྱ་ འདི་ གྲགས་པར་ སྐྱར ༥ २९६

आशयस्य विभूतेर्वा यन्महत्त्वमनुत्त[31b]रं ।

उदात्तं नाम तम्प्राहुरलंकारं मनीषिणः ॥ २९७ ॥

བསམ་པ་ འམ་ ཉི་ འབྱོར་པ་ ཡི།

ཆེན་པོ་ ཉིད་ནི་ སྤྲ་མེད་ གང་།

དེ་ནི་ གྲུ་ཆེ་ ཞེས་པ་ཡི།

གྲུ་དུ་ མཁས་པ་ནམས་ཀྱིས་ བཟོད་ ॥ ༢༩༡

गुरोः शासनमत्येनं न शशाक स राघवः ।

यो राघणशिरच्छेदकार्यभारप्यविक्रवः ॥ २९८ ॥

རྒྱ་བ་ཆ་ཡི་ མགོ་གཙོད་པའི།

བྱ་བའི་ ཁུར་ ཡང་ བཟོད་པ་ཡི།

ར་སྒྲུའི་བྱ་ དེས་ སྤྲ་མ་ཡི།

བཀའ་ལས་ འདྲ་བར་ ནས་མ་ གྲར་ ॥ ༢༩༢

रजमिसिषु संक्रान्तेः प्रतिबिम्बशतैर्बृतः ।

झातो लङ्घेभरः कृच्छ्रादाब्जनेयेन तत्पतः ॥ २९९ ॥

རིན་ཆེན་ ཕྱིག་པ་ ལ་ འཕྲོས་པའི།

གཟུགས་བརྒྱན་ བརྒྱ་ཡིས་ བསྐྱོར་གྲུར་པ།

ལྟོན་དབང་ཕྱག་ རེ་ ཁོན་ །

ཨུན་ བྱས་ དཀའ་བས་ ཤེས་ ॥ ༤༠༠

पूर्वप्राशयमाहात्म्यमत्रान्युदयगारव ।

सुव्यञ्जितमतिव्यक्तमुदात्तद्वयमप्यदः ॥ ३००

སྤྲ་མར་ བསམ་བའི་ བདག་ཉིད་ཆེ་ །

འདིར་ནི་ མངོན་པར་ འབྱོར་བས་ བསྐྱིང་ །

ཀྱུ་ཆེ་ གཉིས་པོ་ འདི་དག་ ཀྱང་ །

རབ་བ་ གསལ་བར་ མཆོན་པ་ ཡིན་ ॥ ༣༠༠

अपहृतिरपहृत्य किञ्चिदन्यार्थदर्शनं ।

न पञ्चेषुः स्मरस्तस्य सहस्रं पत्रिणामिति ॥३०१॥

བསྐྱིན་དོར་དག་ མོ་ བསྐྱིན་བྱས་ནས་ །

དོན་གཞན་ ཟུང་ཟད་ བཟོད་པ་ ལྟེ་ །

འདོད་པ་དག་ནི་ མདའ་ལྔ་པ་ །

མ་ཡིན་ གློ་ལྡན་ ལྟོང་ཕྱག་ ཡོད་ ॥ ༣༠༡

चन्दनं चन्द्रिका मन्दो गन्धवाही च दक्षिणः ।
सेयमग्निमयी सृष्टिश्रीता किल परान्प्रति ॥३०२॥

ཅ་རྩྱན་ ལྷ་འོད་ དཔ་བྱ་ ཡི །
ལྷོ་ སྤྱེགས་ ཅི་ཡི་ བཞེན་པ་ འདི །
མེ་ཡི་ རང་བཞིན་ ལྷོ་པ་ ལྷེ །
གཞན་གྱི་ རོང་ནི་ བསིལ་ ཞེས་ བྲགས ॥ ३०२

शैशिर्यमभ्युपेत्यैवं परेष्व्वात्मनि कामिना ।
औष्णप्रदर्शनात्तस्य संपा विषयनिहृतिः ॥३०३॥

འདོད་ལྡན་གྱིས་ ཉི་ གཞན་ ལ་ རེ །
བསིལ་བར་ ཁས་ལྷངས་ བདག་ཉིད་ལ །
རྩ་བ་ ཉིད་དུ་ རབ་བསྐྱན་ སྤིར །
འདི་ནི་ ཡུལ་ལ་ བསྐྱོན་དོར་རོ ॥ ३०३

अमृतस्यन्दि[32a]किरणञ्चन्द्रमा नाम नो मतः ।
अन्य एवायमर्थात्मा विषनिष्यन्दिदीधितिः ॥३०४॥

བདུད་ཅི་ ཟག་པའི་ འོད་ཟེར་ཅན།
 ལྷ་བ་ ཞེས་པར་ བདག་ཅག་ འདོད།
 རོན་གྱི་ བདག་ཉིད་ འདི་ནི་ གཞན།
 ཏུག་ཟག་ ཟེ་དང་ ལྷན་པ་ ཉིད། ॥ ༣༠༥

इति चन्द्रत्वमेवेन्दोरनिवर्त्यार्थान्तरात्मना ।
 उक्तं स्मरात्तनेत्येषा स्वरूपापह्नुतिर्मता ॥३०५॥

ཅེས་པ་ ལྷ་བའི་ ལྷ་ དངོས་ ཉིད།
 བལྟེག་ནས་ རོན་ གཞན་ བདག་ཉིད་ ཅི།
 འདོད་པས་ གཟེར་བ་ བཟློད་པའི་ སྤྱིར།
 འདི་ནི་ རང་བཞིན་ བསྟོན་དོར་ འདོད། ॥ ༣༠༥

उपमापह्नुतिः पूर्वमुपमास्त्वेव दशिता ।
 इत्यपह्नुतिभेदानां लक्ष्यो लक्ष्येषु विस्तरः ॥३०६॥

དབེ་ཡི་ བསྟོན་དོར་ ལྷར་ ཉིད་ཏུ།
 དབེ་ནས་ལ་ ཅི་ རབ་བསྟན་དོ།

འདི་ཡིས་ བསྟོན་ རྟོག་ དབྱེ་བ་ རྣམས་ །
མཚོན་བྱ་དག་ ལ་ རྒྱ་ཆེར་ མཚོན་ ॥ ༣༠༩

श्लिष्टमिष्टमनेकार्थमेकरूपान्वितं वचः ।
तदभिन्नपदं भिन्नपदप्रायमिति द्विधा ॥३०७॥

སྤྱར་བ་ གཟུགས་གཅིག་ལྟ་བུའི་ ཚིག་ །
དུ་མའི་ རོན་ཅན་ ཉིད་དུ་ འདོད་ །
དེ་ཚིག་ བ་དད་ མེན་བ་ དང་ །
བ་དད་ ཚིག་ འདྲ་ རྣམ་བ་གཉིས་ ॥ ༣༡༠

असावुव्यमारूढः कान्तिमान् रक्तमण्डलः ।
राजा हरति लोकस्य हृदयं मृदुमिः करैः ॥३०८॥

ཡུ་ད་ཡ་ གནས་ མཛོས་བ་ཅན་ །
དཀྱིལ་འཁྱེར་ ལ་ ཆགས་ རྒྱལ་པོ་ འདི་ །
མི་དུ་ཀ་རས་ འཛིག་དེན་ གྱི་ །
ཡིད་ནི་ རབ་དུ་འཕྲོག་བར་བྱེད་ ॥ ༣༡༡

दोषाकरेण सम्बद्धनक्षत्रपथवर्तिना ।
राज्ञा प्रदोषो मामित्थमप्रियं किञ्च बाधते ॥३०६॥

सुःसुः लसः लः रसःगःसः ।
सःसःसःसुःसः रः रःसुःसः ।
सुःसः लसःसुः सःसुः रःसुः ।
रःसुःसः सःसुः सः सः सःसुः ॥ ३०७

उपमारूपकाक्षे[32b]पन्थतिरेकादिगोचराः ।
प्रागेव दर्शिताः श्लेषा दृश्यन्ते केचनपरे ॥३१०॥

रःसुः रः सःसुःसःसुः रःसुःसः रः ।
सुःसुःसःसुः सःसुःसुःसुःसुःसुः ।
सुःसुःसुः सःसुःसुः सःसुःसुःसुः ।
सुःसुःसुः रःसुःसुः सःसुःसुःसुः ॥ ३१०

अस्त्यभिन्नक्रियः कश्चिद्विरुद्धक्रियोपरः ।
विरुद्धकर्मा वास्त्यन्यः श्लेषो नियमवानपि ॥३११॥

འགའ་ཞིག་ བྱ་བ་ བྲ་དད་མིན། །
 གཞན་པ་ བྱ་བ་ འགའ་མིན་ ཡོད། །
 འགའ་བའི་ ལས་ཅན་དག་ ཀྱང་ གཞན། །
 སྤར་བ་ དེས་པ་ཅན་ ཡང་ ཡོད། ॥ ༣༡

नियमाक्षेपरूपोक्तिरविरोधी विरोध्यपि ।
 तेषां निदर्शनेष्वेव रूपमाविर्भविव्यति ॥३१२॥

དེས་པ་ འགོག་པ་ གཟུགས་ བཟོད་ དང་། །
 འགའ་མིན་ འགའ་བ་ཅན་ ཡང་སྟེ། །
 དེ་དག་ རྣམས་ཀྱི་ རང་བཞིན་ ཡང་། །
 དཔེབར་ཚོད་ དག་ལ་ གསལ་བར་འགྱུར། ॥ ༣༢

वक्रस्वभावमधुराः शंसन्त्यो रागमुत्त्वणम् ।
 दृशो हृत्यश्च कर्षन्ति कान्ताभिः प्रेषिताः प्रियान् ॥३१३॥

འབྲོག་ཅིང་ ཡོད་ཁོང་ རང་བཞིན་ཅན། །
 རྒྱགས་པ་ གསལ་བ་སྟོན་བྱེད་མ། །

མཛེས་མས་ བསྐྱལ་བའི་ མིག་ དང་ ཉི །
 གོ་ཉ་མེས་ ཀྱང་ མཛེས་བོ་ འགྲགས ॥ ३१३

मधुरा रागवर्धिन्यः कोमलाः कोकिलागिरः ।
 आकर्ष्यन्ते मदकलाः श्लिष्यन्ते चासितेक्षणाः ॥३१४॥

ཡིད་འོང་ རྒྱས་བ་འཕེལ་བར་བྱེད །
 འཇམ་ཞེང་ མེས་བའི་ གདངས་སྒྲིན་ཅན །
 ཁུ་བྱག་སྒྲ་ ཉི་ བོས་གྱུར་དེ །
 དཀར་མིན་མིག་ཅན་དག་ལ་ འབྱད ॥ ३१४

रागमादर्शयन्नेष वारुणोयोगवर्धितः ।
 पराभवति घर्मांशुरक्लजस्तु विजृम्भते ॥३१५॥

རྒྱ་མ་ དང་ སྒྱར་ འཕེལ་བ་ཡི །
 དམར་བ་ རབ་དུ་སྒྲིན་བྱེད་ ཅིང་ །
 ར་ཟེར་ཅན་ འདི་ རྒྱབ་གྱུར་དེ །
 ལུས་སྒྲིས་ དག་ ཉི་ རྒྱས་བར་བྱས ॥ ३१५

निर्लिशत्वमसावेव धनुष्येवास्य वक्रता ।
शरेष्वेव नरेन्द्रस्य [33a] मार्गणत्वञ्च वर्त्तते ॥३१६॥

रल'सौ'श्रि'द'ल'के' ह्रीं'मं ।
म'ल'श्रि'द'ल' के' र'मि'ग'सौ'श्रि'द' ।
सौ'द'व'द' र'द'यि' म'ल'क' ।
म'द'र'क'म'स'श्रि'द'ल' म'क'स'व' यि'क ॥ ३१७

पद्मानामेव दण्डेषु करटकस्त्वयि रक्षति ।
अथवा दृश्यते रागिमिथुनालिंगनेष्वपि ॥३१७॥

म'ल'स' व'सु'द'स'ल'क'र'स' के' ।
म'द'र' य'व' श्रि'द'ल'दे' ।
दे'क'गु'द' क'म'स'क' र'मि'ग'व'ल' ।
र'म'द'व'द' ग'र'v'क'म'स'ल'द' स'वे'द' ॥ ३१८

महीभृद्भूरिकटकस्तेजस्वी नियतोदयः ।
दक्षः प्रजापतिश्चासीत् स्वामी शक्तिधरश्च सः ॥३१८॥

ས་འཛིན་ ཀ་ཏ་ཀ་ མང་ཞིང་ །
 གཟི་བཞིན་ལྷན་པ་ ཅེས་པར་དར་ །
 ཟྱེ་དགའི་བདག་ བྱང་ ཟུར་བ་ལྟེ །
 རི་བོ་ནས་པ་ འཛིན་ ཡང་དེ ॥ ༣༡༤

अच्युतोप्यवृषोच्छेदी राजाप्यविदितक्षयः ।
 देवोप्यविबुधो जह्मे शंकरोप्यभुजंगवान् ॥३१६॥

ཉམས་མེད་ ཡིན་ ཡང་ ཚེས་གཙོད་མིན་ །
 རྒྱལ་བོ་ ཡིན་ ཡང་ ཟད་མི་ཤེས་ །
 བདེ་བྱེད་ཡིན་ ཡང་ ལག་འགྲོ་མེད་ །
 ལྷ་ཡང་ བེ་བྱ་དྲ་ མིན་ཤེས་ ॥ ༣༡༥

गुणजातिक्रियादीनां यद्वैकल्यदर्शनं ।
 विशेषदर्शनायैव सा विशेषोक्तिरिष्यते ॥३२०॥

ཁྱད་པར་ རབ་དུ་ བསྐྱན་བའི་ཕྱིར་ །
 ཡོན་དན་ རིགས་ དང་ བྱ་བ་ མོགས་ །

གང་དུ་ མ་ཚང་ཉིད་ བསྟན་པ།

དེ་ནི་ བྱད་པར་ བཞིན་པར་ འདོད། ॥ ३१०

न कठोरं न चातीक्ष्णमायुधं पुष्पधन्वनः ।

तथापि जितमेवासीदमुना भुवनत्रयं ॥३२१॥

མེ་དོག་ གཞུ་ཅན་ དག་གི་ མཚོན།

རྩལ་པ་མ་ཡིན་ རྣེ་བའང་མིན།

དེ་ལྟ་ན་ ཡང་ འདི་ཡིས་ནི།

ས་གསུམ་དག་ལས་ རྒྱལ་བར་བྱུང་ ॥ ३२१

न देवकन्यका नापि गन्धर्वकुलसंभवा ।

तथाप्येषा तपोभङ्गं विधातुं वेधसोप्यलं ॥३२२॥

འདི་དག་ ལྷ་ཡི་ བྱ་མོ་ མིན།

དྲི་ཟའི་ རིགས་ལས་ བྱང་བའང་ མིན།

དེ་ལྟ་ མཛད་ཀྱི་ ཚངས་པའི་ ཡང་།

དགའ་བྱུང་ གཞིམ་པ་ རྒྱལ་བར་ རྒྱས་ ॥ ३२२

न बद्धा भुक्नु[33b]दिर्नापि स्फुरितो दशनच्छदः ।
न च रक्ताभवदृष्टिर्वस्तञ्च द्विषतां कुलं ॥३२३॥

ཁྲི་གཉེར་ དག་ནི་ མ་བསྐྱུས་ ཤིང་ །
སོ་ཡི་ གཡོགས་ ཀྱང་ མ་བསྐྱོད་ལ །
མིག་ཀྱང་ དམར་པོར་ མ་གྱུར་བར །
དགྲ་ཡི་ རིགས་ ནི་ ཉམས་པར་བྱས ॥ ३२३

न रथा न च मातंगा न हया न च पत्तयः ।
स्त्रीणामपाङ्गदृष्ट्यैव जीयते जगतां त्रयं ॥३२४॥

ཤིང་དྲ་ མེད་ ཅིང་ སྤང་པོའང་ མེད །
དྲ་མེད་ ཀྱང་ཐང་མེད་པར་ ཡང་ །
རྒྱར་མིག་ཉེད་ ཀྱིས་ བྱད་མེད་ནྦམས །
འགྲོ་བ་ གསུམ་པོ་ དག་ལས་ རྒྱལ ॥ ३२४

एकचक्रो रथो यन्ता विकलो विषमा हयाः ।
आक्रामत्येव तेजस्वी तथाप्यर्को जगन्नयं ॥३२५॥

ཤིང་དྲ་ འཁོར་ལོ་གཅིག་པ་དང་ །
 ཁ་ལོ་པ་ ཉམས་ དྲ་མི་མཉམ་ །
 དེ་ལྟ་ན་ ཡང་ གཞི་བྱིན་ཅན་ །
 ཉི་མས་ འགྲོ་བ་ གསུམ་པོ་ མནན་ ॥ ३२४

सैषा हेतुविशेषोक्तिस्तेजस्वीतिविशेषणात् ।
 अयमेव क्रमोन्येषां भेदानामपि कल्प्यते ॥३२६॥

གཞི་བྱིན་ཅན་ སྒྲིགས་ བྱད་པར་ལས་ །
 འདི་ནི་ གྲུ་ཡི་ བྱད་པར་ བཟོད་ །
 རིམ་པ་ འདི་ཡིས་ གཞན་གྱི་ ནི་ །
 དབྱེ་བ་རྣམས་ གྲུང་ བདག་པར་བྱ་ ॥ ३२५

विवक्षितगुणोत्कटैर्यत्समीकृत्य कस्यचित् ।
 कीर्त्तनं स्तुतिनिन्दार्थं सा स्मृता तुल्ययोगिता ॥३२७॥

བཟོད་ འདོད་ ཡོན་དྲན་ བྱད་འཕགས་ དང་ །
 མཚུངས་པར་ བྱས་ནས་ འགའ་ཞིག་ནི་ །

བཟློང་ མེད་ རོན་དུ་ བསྐྱགས་པ་ བང་ ।

དེ་ནི་ མཚུངས་པར་ ཟློང་བར་ བཤད ॥ ३२७

यमः कुबेरो वरुणः सहस्राक्षो भवानपि ।

बिभ्रत्यनन्यविषयां लोकपाला इति श्रुतिम् ॥३२८॥

གཤེན་ཇི་ ལུས་ངན་ ཅུ་ལྟ་དང་ ।

མིག་ཟློང་པ་ དང་ ཟློང་ཉིད་ ཀྱང་ ।

འཇིག་རྟེན་ ཟློང་བ་ ཞེས་བའི་ མྱ །

ལུལ་གཞན་མེད་པར་ རྣམ་པར་འཇིན ॥ ३२८

संगतानि मृगाक्षीणां तडिद्विलसितन्यपि ।

क्षणद्वयञ्च तिष्ठ[34a]ति घनरुधान्यपि स्वयं ॥३२९॥

རི་དགས་ མིག་ དང་ འགྲོགས་པ་ དང་ ।

སྒོག་གི་ ཅེ་དགའ་དག་ དང་ ནི་ ।

སྒྲིན་གྱི་ རྩོམ་པའང་ རང་བཞིན་གྱིས་ ।

སྐད་ཅིག་ གཉིས་པར་ མི་ གནས་སོ ॥ ३२९

विरुद्धानाम्प्रार्थानां यत्र संसर्गदर्शनं ।
विरोधसाधनायैव स विरोधः स्मृतो यथा ॥३३०॥

འགལ་ལྷོ་སྐྱབ་བྱེད་སྒྲིབ་དུ་ནི།
གང་དུ་དངོས་པོ་འགལ་བ་རྣམས།
ཡང་དག་འགྲོགས་པར་རབ་བསྐྱེད་པ།
དེ་ནི་འགལ་བ་བཤད་དེ་དཔེར། ॥ ३३०

कूजितं राजहंसानां वर्द्धते मदमञ्जुलं ।
क्षीयते च मयूराणां रुतमुत्क्रान्तसौष्ठवं ॥३३१॥

ངང་པའི་རྒྱལ་པོ་རྣམས་དག་ནི།
སྒྲིམ་པའི་གདངས་སྒྲན་ཅ་ཅོ་འཕྲེལ།
མ་བྱ་རྣམས་ཀྱི་སྒྲིབ་དག་ནི།
ཡིད་འོང་ཉིད་དང་བྲལ་བས་ཉམས། ॥ ३३१

प्रावृषेण्यैर्जलधरैरम्बरं दुर्दिनायते ।
रागेण पुनराक्रान्तं जायते जगतां मनः ॥३३२॥

དབྱར་སྒྲིམ་ ཅུ་འཛིན་དག་གིས་ནི །
 བས་མཁའ་ ཡུལ་ངན་ ལྷ་བྱར་ སྒྲོད་ །
 ཆགས་པ་ ཡིས་ ཀྱང་ འགྲོ་བ་ཡི །
 ཡིད་ནི་ ཀྱན་ད་ ཆགས་པར་གྱར ༥ ३३५

तनुमध्यं पृथुधोनि रक्तौष्ठमसितेक्षणं ।
 नतनाभि वपुः स्त्रीणां कं न हन्त्युन्नतस्तनं ॥३३३॥

སྒྲིད་པ་ ཐུ་ ཞིང་ རོ་སྒྲོད་ སྒྲོམ་ །
 མཆུ་དམར་ མིག་ནི་ དཀར་པ་ མིན་ །
 རྩེ་བ་ དམར་ ཞིང་ རྩ་མ་ མཐོ་ །
 བྱད་མེད་ ལུས་ ཀྱིས་ སྒྱ་ མ་ བཅོམ་ ॥ ३३३

मृणालबाहु रम्भोर पद्मोत्पलमुखेक्षणं ।
 अपि ते रूपमस्माकं तन्वि तापाय कल्पते ॥३३४॥

བད་རྩའི་ ལག་པ་ ཅུ་ཤིང་ བརྒྱ །
 བརྒྱའི་གཞིང་ དང་ ལྷ་ལྷུལ་ མིག །

ཁྱོད་ཀྱི་གཞུགས་ཀྱིས་ བདག་ཅག་ནམས།
གདུང་ནས་ མིན་ནས་ ལུས་ཅན་མ། ॥ ३३८

उद्यानमारुतोद्धूताश्चूताश्चम्यकरेणवः ।
उदश्रयन्ति पान्यानामस्पृशन्तोपि लोचनम् ॥३३५॥

སྐྱེད་ཚལ་ རླུང་གིས་ རབ་བསྐྱེད་བ།
ཕྱུ་དྭ་ཅ་སྤྲ་ཀ་ཡི་དུལ།
རིག་བ་མིན་ ཡང་ འགྲོན་པོ་ཡི།
མིག་ལ་ མཆི་མ་ཟག་པར་བྱེད། ॥ ३३५

कृष्णार्जुनानुरक्तापि दृष्टिः कर्णा[34b]वलम्बिनी ।
याति विश्वसनीयत्वं कस्य त कलभाषिणि ॥३३६॥

སྐྱ་ན་པར་སྒྲོགས་མ་ ཁྱོད་ཀྱི་མིག།
ནག་དཀར་རྩིས་སྤྲ་དམར་བ་ ཡང་།
ན་བ་དག་ལ་ བརྟེན་བ་ ནི།
སྤྲ་ཡི་ ཡིད་བདན་ཉིད་ཏུ་འགྱུར། ॥ ३३६

इत्यनेकप्रकारोयमलंकारः प्रतीयते ।

अप्रस्तुतप्रशंसा स्यादप्रक्रान्तेप्सितास्तुतिः ॥३३७॥

दे'बु'र'गु'न'द'र'क'स'प' री' ।

दु'स'श्रि'द'दु' र'व'ह'ग'स'गु ।

स'व'स' स'र' द'र'द'प'स' व'ह'र'प' री' ।

स'व'स'सु' स'प'प' व'ह'र'प' यी' ॥ ३३८ ॥

सुखं जीवन्ति हरिणा वनेष्वपरसेविनः ।

अयैर्यत्नसुलभैर्जलदर्भाङ्कुरादिभिः ॥३३८॥

ग'ल'र'स'व'ह'र'प' री'द'ग'स'क'स'स' ।

द'व'द'स'र' ह'र'द'प'स'सु'व'र'र' ।

ह'र'द'द'य'सु'ग'स'ग'स'गु'स' ।

द'ग'स'क'स'स'सु' री' व'र'द'प'स' द'ह' ॥ ३३९ ॥

सेयमप्रस्तुतैवात्र मृगवृत्तिः प्रशस्यते ।

राजानुवर्त्तनह्ये शनिर्विष्णेन मनस्विना ॥३३९॥

གྲུལ་པོ་འི་རྩིས་འབྲངས་ ཉོན་མོངས་པ།
 འཁོར་དུ་སྒྲིབ་པའི་ ཡིད་ཅན་གྱིས།
 སྐབས་སུ་ མ་བབ་ཉིད་དུ་ འདིར།
 དེ་དུགས་ སྒྲོད་ཚུལ་ འདི་དག་ བསྐྱུགས། ॥ ३३७

यदि निन्दन्निव स्तौति व्याजस्तुतिरसौ स्मृता ।
 दोषाभासा गुणा एव लभन्ते ह्यत्र सन्निधिं ॥३४०॥

གཤམ་ཏེ་ སྐྱད་པ་ བཞིན་ བསྐྱོད་ནས།
 སྒྲོན་ ལྟར་ སྐྱང་བའི་ཡིན་ཏན་ཉིད།
 གང་དུ་ ཉི་བར་ཐོབ་གྱུར་པ།
 འདི་ནི་ རྩོལ་གྱིས་བསྐྱོད་པར་ བཤད། ॥ ३ॣ

तापसेनापि रामेण जितेयं भूतधारिणी ।
 त्वया राक्षापि सैवेयं जिता मा भून्मदस्तव ॥३४१॥

རྩ་མ་དགའ་ཐུབ་པ་ཡིས་ གྲུང་།
 འབྲང་པོ་ འཛོན་མ་ འདི་ལས་གྲུལ།

དེ་ཉིད་ རྒྱལ་པོ་ བྱོད་ཀྱིས་ ཀྱང་ །

འདི་ལ་ བྱོད་ནི་ རྒྱགས་ མ་ མཛོད་ ॥ ༣༧

पुंसः पुराणादाच्छ्रियं श्रीस्त्वया परिभुज्यते ।

राजभिद्वान्कुवंशस्य किमिदं तव युज्य[35a]ते ॥३४२॥

སྤྱོད་ཀྱི་སྤྱེས་བྱ་ ལས་ བཅད་ནས་ །

དབལ་འདི་བྱོད་ཀྱིས་ ཡོངས་སུ་སྤྱོད་ །

རྒྱལ་པོ་ བྱ་རམ་ཤིང་བའི་རྒྱད་ །

བྱོད་ཀྱི་ འདི་ནི་ རིགས་སམ་ཅི་ ॥ ༣༧

भुजंगभोगसंसक्ता कलत्रं तव मेदिनी ।

अहंकारः पराङ्मुगेदिमारोहति कुतस्तव ॥३४३॥

བྱོད་ཀྱི་ བཅུན་མོས་ ལཞི་ནི་ །

ལག་འགྲོའི་སྤྱོད་ག་དག་ལ་ཆགས་ །

ཅི་སྤྱད་ བྱོད་ཀྱི་ང་རྒྱལ་ནི་ །

མཆོག་གི་མཐའ་ཅ་ འཛགས་བར་གྱར་ ॥ ༣༨



इति श्लेषानुविद्धानामन्येषां चोपलक्ष्यताम् ।
व्याजस्तुतिप्रकाराणामपर्यन्तः प्रविस्तरः ॥३४४॥

दे'ङ्ग'र' ठे'वर' स'के'र'व'ल'स ।
सु'र'व'उ'र'द'म'ग'र'र'द'ग'गै ।
वे'ल'गु'र'व'सु'र'द'र'र'र'र'र' ।
र'व'र'गु'र'र'र'र'र'र'र' ॥ ३४४ ॥

अर्थान्तरप्रवृत्तेन किञ्चित्तत्सदृशं फलं ।
सदसद्वा निदर्शयते यदि स्यात्तन्निदर्शनं ॥३४५॥

ग'ल'र' र'र'ग'र'र'र'र'र' ।
दे'द'र'र'र'र'र'r'r' ।
स'के'र'ग'र' स'के'र'र'र' ।
दे'र' र'र'र'r'r' ॥ ३४५ ॥

उदयन्नेव सविता पक्षेष्पर्ययति श्रियं ।
विभावयितुमृद्धीनां फलं सुहृदनुग्रहं ॥३४६॥

ཉི་མ་ འཆར་བ་ཉིད་ཀྱིས་ བྱི །

པདྨ་ནམས་ལ་ དཔལ་སྟེར་བྱེད །

ཡན་ཚེགས་ནམས་ཀྱི་ འབྲས་བྱ་དག །

གྲོགས་པོ་རྗེས་འཇོག་ བཟུན་པའི་སྤྱིར ༥ ༣༥

याति चन्द्रांशुभिः स्पृष्टा ध्वान्तराजी परामर्ष ।

सद्योराजविरुद्धानां सूचयन्ती दुरन्ततां ॥३४७॥

ཆེ་བའི་ཟེར་གྱིས་ རེག་པ་ན །

ཐུན་པའི་སྟེང་བ་ རྒྱབ་པར་འགྱུར །

འབྲལ་ལ་ཀྱལ་པོ་ དང་ འགལ་ནམས །

ངན་པའི་མཐར་འགྱུར་ གསལ་བར་བྱེད ༥ ༣༦

सहोक्तिः सहभावस्य कथनं गुणकर्मणां ।

अर्थानां यो विनिमयः परिवृत्तिस्तु सा यथा ॥३४८॥

ཡོན་ཏན་ལས་ནམས་ ལྷན་ཅིག་གི །

དངོས་པོ་བརྗོད་པ་ ལྷན་ཅིག་བརྗོད །

དོན་རྣམས་ བསྐྱེལ་བ་ གང་ ཡིན་པ་ ।

ཡོངས་བརྗེས་ཡིན་ཏེ་ དེ་དག་ དཔེར ॥ ༣༧

सह दीर्घा मम[35b] श्वासैरिमाः संप्रति रात्रयः ।

पाण्डुराश्च ममैवाङ्गैः सह ताम्रन्द्रभूषणाः ॥३४६॥

དེ་ནི་ མཚན་མོ་ འདི་དག་རྣམས་ ।

བདག་གི་དབུགས་དང་ ལྷན་ཅིག་རིང་ ।

ཁློ་བའི་གུན་ལྷན་མ་རྣམས་ ཀྱང་ ।

བདག་ལུས་ཉིད་ དང་ ལྷན་ཅིག་ ལྷ ॥ ༣༧

वर्द्धते सह पान्थानां मूर्च्छया चूतमञ्जरी ।

पतन्ति च समन्तेषामधुभिर्मलयानिलाः ॥३५०॥

འགྲོན་པོ་རྣམས་ཀྱི་ མྱོངས་པ་ དང་ ।

ལྷན་ཅིག་ ལྷ་ཏའི་དོག་པ་གུས་ ।

དེ་དག་ མཆི་མ་ དང་ མཉམ་དུ་ ।

མ་ལ་ཡ་ཡི་རྒྱང་དག་ འབབ ॥ ༣༨

कोकिलालापसुभगाः सुगन्धिवनवायवः ।
यान्ति सार्धं जनानन्दैर्वृद्धिं सुरमिवासराः ॥३५१॥

ཁ་བྱུག་ སྒྲོགས་པའི་སྐལ་བཟང་ དང་ ।
ནགས་ཀྱི་རྒྱང་ ཅི་ རི་བཟང་ དང་ ।
དབྱིད་ཉིན་ ཟླ་བོ་འི་ ཀྱན་དགའ་ནསས།
ལྷན་ཅིག་དག་ཏུ་ འཕེལ་བར་འགྱུར། ॥ ३५१

इत्युदाहृतयो दत्ताः सहोक्तेरत्र काश्चन ।
क्रियते परिवृत्तेऽपि किञ्चिद्रूपनिरूपणं ॥३५२॥

དེ་ལྟར་ ལྷན་ཅིག་བཟོད་པ་ཡི།
དཔེར་བཟོད་ འགའ་ཞིག་ འདིར་ བྱས་དེ།
ཡོངས་སུ་བཟུངས་པའི་ རང་བཞིན་ ཡང་།
ངེས་པར་བསྟན་པ་ ཟུང་བྱེད་བྱ། ॥ ३५२

शस्त्रप्रहारान्ददता भुजेन तव भूभुजां ।
चिरार्जितं हतं तेषां यशः कुमुदपाण्डुरं ॥३५३॥

ས་སྒྲོད་ནསས་ལ་ བཟོད་ བསྟན་པ།
སྟར་བྱེད་ ཁྱོད་ཀྱི་ལག་པ་ཡིས།

དེ་དག་ གྲགས་བ་ ཀྱ་མུད་ དཀར་ ।
 ཡུན་རིང་དག་ཏུ་ བསྐྱབས་བ་ རྩོགས་ ॥ ३५३

आशीर्नामामिलषिते वस्तुन्याशंसनं यथा ।
 पातु वः परमज्योतिरवाङ्मनसगोचरम् ३५४॥

མངོན་བར་འདོད་བའི་དངོས་བོ་ལ་ ।
 སྒྲོན་བ་ ཤེས་བཞེད་ ཅེས་བྱ་ དབེར་ ।
 ངག་ཡིད་ སྒྲིད་ཡུལ་ མ་ཡིན་བའི་ ।
 སྒྲུང་བ་ དམ་བས་ བྱིད་ལ་ སྒྲངས་ ॥ ३५८

अनन्वयसंसर्गहावुपमास्त्वेव दर्शितौ ।
 उपमा रूपक[36a]चापि रूपकेष्वेव कीर्तितम् ॥३५५॥

ཇེས་འགྲོ་མེད་དང་ཐེ་ཚོས་ཅན་ ।
 དག་ནི་ དཔེ་རྣམས་ཉིད་ལ་ བསྟན་ ।
 དཔེ་ཡི་གཞུགས་ཅན་ དག་ ཀྱང་ འདིར་ ।
 གཞུགས་ཅན་རྣམས་ལ་ ཇེས་བར་བསྐྱབས་ ॥ ३५५

उत्प्रेक्षाभेद एवासावुत्प्रेक्षावयवोपि च ।

गानालंकारसंसृष्टिः संसृष्टिः कथ्यते पुनः ॥३५६॥

རབ་རྟེན་ཆ་ཤས་ འདི་ ཡང་ ཅི།

འབ་རྟོག་དག་གི་དབྱེ་བ་ཉིད །

ཐ་དད་རྒྱན་རྣམས་བསྐྱེས་པ་ནི།

ཐལ་མ་དག་ད་ བཞེད་པ་ལྟེ ॥ ༣༥

अङ्गाङ्गिभावसंस्थानं सर्वेषां समकक्षता ।

इत्यलङ्कारसंसृष्टौ लक्षणीया द्वयी गतिः ॥३५७॥

ཡན་ལག་ཡན་ལག་ཅན་དངོས་ཀྱི །

སྐུ་བཅའ་ རང་ དམངས་ཅད་ ལྟོ་བས་མཚུངས་ཉིད།

ཅེས་པའི་ལུགས་ བཅིས་ སྤེལ་མ་ཡི།

གྲུག་དག་ལ་ རི་ མཆོན་པར་བྱ ༥ ༣༥༧

आक्षिपन्त्यरविन्दानि तव मुग्धे मुखश्चियं ।

कोषदण्डसमप्राणां किमेषामस्ति दुष्करं ॥३५८॥

མཇོས་མ་ ཁྱོད་ཀྱི་ བཞིན་གྱི་ དབལ།
 བརྒྱ་དག་གིས་ འགོག་པར་བྱེད།
 མཇོད་དང་ ཡུ་བ་ ཡན་ཆོགས་པ།
 འདི་ལ་ བྱ་ དཀའ་ ཅི་ ཞིག་ ཡོད། ॥ ༣༥༤

श्लेषः सर्वासु पुण्याति प्रायो वक्रोक्तिषु ध्रियं ।
 भिन्नं द्विधा स्वभावोक्तिर्वक्रोक्तिश्चेति वाङ्मयं ॥३५६॥

རང་བཞིན་ བཇོད་དང་ འཁྱོག་ བཇོད་ཅེས།
 འག་གི་ རང་བཞིན་ བྲ་དད་ གཉིས།
 འཁྱོག་པོར་ བཇོད་པ་ ཐམས་ཅད་ལ།
 བལ་ཆེར་ སྦྱར་བས་ དབལ་བྱས་བྱེད། ॥ ༣༥༥

भाविकत्वमिति प्राहुः प्रबन्धविषयं गुणः ।
 भावः कवेरभिप्रायः कान्येष्वसिद्धि यः स्थितः ॥३६०॥

སྦྱན་འག་མཁའ་ བསམ་དགོངས་པ་ ལྟེ།
 སྦྱན་འག་ བྲུབ་པར་ གང་ གནས་པ།

རབ་སྒྲོར་ ཡུལ་གྱི་ཡོན་ཏན་ཅན །

དེ་ནི་ དགོངས་པ་ཅན་ ཞེས་ བཛྲོད ༥ ༣༩༠

परस्पररोपकारित्वं सर्वेषां वस्तुपर्वणाम् ।

विशेषणानां व्यर्थानामक्रिया [36b] स्थानवर्णनं ॥ ३६१

དངོས་པོ་ཡི་ ནི་ ཆོགས་ནམས་ཀྱན །

པན་ཚུན་ པན་པར་བྱེད་པ་ ཉིད །

དོན་དང་ བྲལ་བའི་ བྱད་པར་ ནམས །

མ་བྱས་ གནས་སྤྱོད་ བསྐྱུགས་པ་ དང་ ॥ ༣༩༡

व्यक्तिरुक्तिक्रमबलाद्गम्भीरस्यापि वस्तुनः ।

भावायत्तमिदं सर्वमिति तं भाविकं विदुः । ३६२

བཛྲོད་རིམ་ སྒྲོབས་ ལས་ དངོས་པོ་ ནི །

ཟབ་མོ་དག་ ཀྱང་ གསལ་བ་སྟེ །

དེ་ཀྱན་ དགོངས་པའི་དབང་གྱུར་ ལྟེན །

དེ་དག་ དགོངས་པ་ཅན་ ཞེས་ རིག ॥ ༣༩༢

यच्च सन्ध्यङ्गवृत्त्यङ्गलक्षणाद्यागमान्तरे ।
व्यावर्णितमिदं चेष्टमलङ्कारतयैव नः ॥ ३६३

གང་ཡང་ མཚམས་ སྟོར་ ཡན་ལག་ དང་ ।
འཇུག་པའི་ཡན་ལག་ མཚན་ ཉིད་ སྟོགས་ ।
ལུང་ གཞན་ དག་ཏུ་ བཟློད་ འདི་ ཡང་ ।
སྟན་ཉིད་ཏུ་ བློ་ བདག་ཅག་ འདོད་ ॥ ३६३

पन्था स एष विवृतः परिमाणवृत्त्या संहृत्य विस्तरमनन्तमलंक्रियाणः ।
वाचामतीत्य विषयं परिवर्त्तमानानभ्यास एव विवरीतुमलं विशेषान् ॥ ३६४

གྲུ་ཆེ་ མཐའ་ཡས་ རབ་བསྐྱུས་ཚད་ཏུ་ གྱུར་བ་ཡི་ ।
སྟན་མཚམས་ དག་གི་ལས་ འདི་ཉིད་ བློ་མཚམས་པར་སྟེ་ ।
བཟློད་པའི་ལུང་ལས་ འདས་པར་ ཡོངས་སུ་གཞན་བ་ཡི་ ।
ཁྱད་པར་མཚམས་མི་ གོམས་བ་ཉིད་ཀྱིས་ དབྱེ་བར་ནུས་ ॥ ३६४

इत्याचार्यवृण्डिनः कृतौ काव्यादर्शोऽर्थालङ्कारो नाम द्वितीयः परिच्छेदः ॥

ཞེས་ སྟོབ་དཔོན་ དབྱུག་བ་ཅན་གྱིས་ མཛད་པ་ སྟན་ལག་ མེ་
ཡོང་ལས་ དོན་གྱི་སྟན་ ཅས་བྱ་བ་ ཡོངས་སུ་བཅད་པ་ གཉིས་པའོ་ ॥

CHAPTER III

अव्यपेतव्यपेतात्मा व्यावृत्तिर्वर्णसंहतेः ।
यमकं तच्च पादानामादिमध्यान्तगोचरं ॥१॥

བར་མ་ཚོད་དང་ བར་ཚོད་ བདག །
ཡི་གེ་ ཚོགས་པ་ བསྐྱར་བ་ནི །
ཟུང་ལྷན་ དེ་ཡང་ ཀྱང་བ་ཡི །
དང་པོ་ བར་ མཐའ་ སྟོད་ལྷལ་ཅན ༥ ༡

एकद्वित्रिचतुष्पादयमकानां विकल्पनाः ।
आदिमध्यान्तमध्यान्तमध्याद्याद्यन्तसर्वतः ॥२॥

གཅིག་ གཉིས་ གསུམ་ བཞི་ ཀྱང་བ་ཡི །
ཟུང་ལྷན་རྣམས་ཀྱི་ རྣམ་རྟོག་ནི །
ཐོག་མ་ བར་ མཐའ་ བར་ དང་ མཐའ་ །
བར་དང་ ཐོག་མ་ ཐོག་མཐའ་ ཀུན ༥ ༢

[37a] अत्यन्तब्रह्मस्तेषां भेदाः संभेदयोनयः ।

सुकरा दुष्कराश्चैव दृश्यन्ते तत्र केचन ॥३॥

गुणं दुः सुप्रवः अंशः श्लेषः च ।

देवताः सुप्रवः शैवः दुः श्वः ।

देवः सुप्रवः सुदत्तः अंशः ।

दत्तः शैवः दत्तः शैवः वस्तुनः च ॥ ३

मानेन मानेन सखि प्रणयोभूत्प्रिये जने ।

खण्डिता कण्ठमाश्लिष्य तमेव कुरु सन्नपम् ॥४॥

मृगाशः श्वः श्वः श्वः श्वः श्वः ।

मृगाशः च श्वः श्वः श्वः श्वः श्वः ।

वस्तुनः च श्वः श्वः श्वः श्वः श्वः ।

देवः श्वः श्वः श्वः श्वः श्वः ॥ ८

मेघानादेन हंसानां मदनोमदनोदिना ।

नुजमानं मनः स्त्रीणां सह रत्या विगाहते ॥५॥

ངང་བ་ནས་ས་ཀྱི་ རྒྱལ་ས་ འཛིན་ས་བ །
 སྒྲིན་གྱི་སྒྲ་ ཡིས་ རྒྱུ་ས་བྱེད་ནི །
 དགའ་ས་ དང་ བཅས་ བྱད་མེད་ཀྱི །
 ཁངས་བྲལ་ཡིད་ལ་ འཇུག་པར་བྱེད ॥ १

राजन्त्यः प्रजा जाना भवन्तं प्राप्य साम्प्रतं ।
 अतुरं अतुर्भोधिस्सनोर्वीकरग्रहे ॥६॥

རྒྱ་གཉེར་བཞི་ཡི་ སྒྲ་རགས་ཅན །
 ས་ཡི་ལག་ དབྱ་འཛིན་ལ་ བཤས །
 བྱོད་ཉིད་ ཐོབ་ནས་ ད་ལྟ་ནི །
 སྒྲི་དགུ་ རྒྱལ་པོ་ བཟང་ལྡན་གྱར ॥ ७

अरण्यं कौञ्चवाक्रान्तमन्यैः सद्य द्विषीकसां
 पदातिरथनागाभ्ररहितैरहितैस्तव ॥७॥

ཀླང་ཐང་ ཤིང་དྲ་ སྒྲང་པོ་དང་ །
 ཏ་དང་ བྲལ་བ་ བྱོད་ཀྱི་ དག །

འགའ་ ཞིག་ རྣམས་དང་། གཞན་དག་ནི །
 རྩ་ རྣམས་དག་གི་ གཞན་སུ་ མེད་ ॥ ༧

मधुरं मधुरम्भोजवदने वद नेत्रयोः ।
 विभ्रमम्भ्रमरम्रान्त्या विडम्बयति किञ्चिदं ॥८॥

ཐུ་སྦྱེས་གཤོང་ལྷན་ མིག་དག་གི །
 རྣམ་འབྲུལ་ ཡིད་འོང་ འདི་ལ་ ནི །
 དབྱིད་ཀྱི་ བྱང་བའ་རྣམ་འབྲུལ་གྱིས །
 ཅོ་འདི་བྱེད་པ་ ཅི་ ཡིན་ སྦྱོས་ ॥ ༨

वारुणो वा रणोद्दामो हयो वा स्मरदुर्धरः ।
 न यतो नयतोऽन्तं नस्तदहो वि[37b]क्रमस्तव ॥९॥

འདོད་པ་ གཡུལ་དུ་ དཔའ་བ་ཡི །
 སྤང་པོའས་ གཟུང་དཀའ་ ན་མེད་ཀྱིས །
 གང་ལྟེན་ བདག་ཅག་ མཐར་བུས་པ། །
 དེ་ལྟེན་ ཁྱོད་ཀྱི་ རྣམ་གཞིན་ མཚར་ ॥ ༩

राजितैराजितैरुपेन जीयते स्वाद्दृशैर्नृपैः ।
नीयते च पुनस्तृप्तिं वस्तुधा वस्तुधारया ॥१०॥

वायुवाऽनुं क्वं वसः खड्गैः वः यी ।
खी वदवाः सुदः अदसः क्वं अद्वैतं क्वं ।
कुल वरः सुदः क्वं कुल वीरः ।
खड्गैः वः दवाः गुदः सुवः वरः सुदः ॥ १० ॥

करोति सहकारस्य कलिकोत्कलिकोत्तरं ।
मन्मनोमन्मनोव्येष मत्तकोकिलनिस्वनः ॥११॥

सः दः गुदः दिः खेदः वः वासः ।
वदवाः यीदः खड्गैः वः सुदः अद्वैतः सुदः ।
सुदः वः सुदः सुदः वः दवाः यी ।
यीदः वः अदः वः अदः वः गुदः ॥ ११ ॥

कथं त्वदुपलम्भाया विहताविह तादृशीं ।
अथवा नालमारोदुमङ्गनामङ्गनाशिनी ॥१२॥

ཁྱིད་ལ་ དམིགས་ བའི་རེ་བ་ དང་ །
 མ་བྲལ་ འདི་ལ་ དེ་འདྲ་ ཡི །
 བཀྲས་སྐབས་ ལྷས་ནི་ འཇིག་བྱེད་བས །
 བྱད་མེད་ འཇོགས་ རྣས་ ཅི་ལྟར་མིན ༥ ༡༢

निगृह्य नेत्रे कर्षन्ति बालपल्लवशोभिना ।
 तरुणा तरुणान्कृष्टानलिनो नलिनोन्मुखाः ॥१३॥

ཡལ་འདབ་ བསའ་བས་ མཇོས་བ་ཡི །
 ལྷོན་བས་ དྲངས་བའི་ བཞེན་ལྷ་རྣམས །
 བརྒྱར་ མངོན་ བྱོགས་ བྱང་བ་ཡིས །
 མིག་ནས་ བརྒྱང་མྱེ་ འགྲུགས་བར་བྱེད ༥ ༡༣

विशदा विशदामत्तसारसे सारसे जले ।
 कुरुते कुरुतेनेयं हंसो मामन्तकामिषं ॥१४॥

མྱོས་བའི་ བཞེན་ནི་ རབ་འཇུག་བ །
 རྩང་གི་ཚུ་ལ་ དཀར་བ་ཡི །

ངང་མོ་ འདི་ཡི་ ཅ་ཅོ་ ཡིས།

བདག་ནི་ མཐར་བྱེད་ཟུ་མུ་བྱེད། ॥ १८

विषमं विषमन्वेति मदनं मदनन्दनः ।

सहेन्दुकलयापोढमलया मलयानिलः ॥१५॥

དི་བྲལ་ རྒྱ་བའི་ཆ་དག་ དང་།

ལྷན་ཅིག་ མ་ལ་ཡ་ཡི་རྒྱང་།

བདག་ དགའ་མི་ བྱེད་འདོད་པ་ ནི།

མི་བཟད་དུག་གི་ རྒྱུ་མུ་འགྲོ། ॥ १८

मानिनी मानिनीषुस्ते निषङ्गत्वमनङ्ग मे ।

हारिणी हारिणी[38a]शर्म तनुतां तनुतां यतः ॥१६॥

བདག་ སྟེན་མི་འདོད་ ཁེངས་པ་ཅན།

དོ་ཤལ་དང་ལྷན་ འཕྲིག་བྱེད་མ།

ལུས་མེད་ ཁྱོད་ཀྱི་ དང་པ་ ཉིད།

ཕྱ་གུར་ བདག་ འགྲོགས་ བདེ་རྒྱས་ མཛོད། ॥ १७

जयता त्वन्मुखेनास्मानकथं न कथं जितं ।

कमलं कमलंकुर्वदलिमहलिमत्प्रिये ॥१७॥

ཁུང་གི་གདོང་གིས་བདག་ལས་བྱེད།

ཆུ་ཡི་གྲན་ གྲར་ བྱང་བ་ཅན།

འདབ་ལྷན་ བདུ་ བཏམ་ མེད་ལས།

ཅི་ལྟར་ མི་གྲུ་ བདག་ དགའ་མ ॥ ༡༧

रमणी रमणीया मे पाटलापाटलांशुका ।

वारुणीवारुणीभूतसौग्भा सौरभास्पदं ॥१८॥

ཉི་མའི་འོད་གྱིས་ དམར་གྱར་པའི།

ཏུ་ལྷ་མོ་བཞིན་པ་ཅ་ལ།

དཀར་དམར་ གོས་ཅན་ རི་བཟངས་ གནས་

བདག་གི་ དགའ་མ་ དགའ་བར་བྱ ༥ ༢༤

इति पादादियमकमव्यपेतं विकल्पितं ।

व्यपेतस्यापि वर्णयन्ते विकल्पास्तत्र केचन ॥१६॥

རི་ལྷ་ར་ ཀང་པའི་ ཐོག་མ་ཡི།
 ཟུང་ལྷན་ བར་ཚོད་མེད་ ལྷ་རྟོག།
 ད་ནི་ བར་དུ་ཚོད་པ་ ཡི།
 ལྷ་རྟོག་ འགའ་ཡང་ བསྟན་པར་བྱ། ॥ ༡༩

मधुरेणदृशां मानं मधुरेण सुगन्धिना ।
 सहकारोद्गमेनैव शब्दशेषं करिष्यति ॥२०॥

ས་ཏ་ཀླ་ར་ ལས་ འབྲུངས་ ཉིད།
 ཡིད་འོང་ སྤི་བཟངས་ལྷན་པ་ ཡིས།
 དབྱེད་གྱི་ ཨེ་ཤའི་ མིག་ཅན་གྱི།
 ཁེངས་པ་ སྒྲ་ཡི་ ལྷག་མར་བྱེད། ॥ ༢༠

करोऽतिताम्रो रामाणान्तन्त्रीताडनविभ्रमं ।
 करोति सेव्यं कान्ते वा भ्रवणोत्पलताडनं ॥२१॥

དགའ་མའི་ ལག་པ་ ཡིན་དུ་ དམར།
 གྱུད་མངས་ལ་ བསྟན་ ལྷ་འབྲུལ་ལ།

ཕྱག་དྲག་ ལྷན་ནས་ མཛེལ་བོ་ལའང་ ।

ན་བའི་ཨུཊལ་གྱིས་ བསྐྱུན་བྱེད་ ॥ ४०

सकलापोल्लसनया कलापिन्याऽनुनृत्यते ।

मेघाली नर्त्तिता वातैः सकलापो विमुञ्चति ॥२२॥

རྒྱུང་གྱིས་ གར་ བསྐྱུར་ སྤྱིན་གྱི་ཕྱེང་ ।

མཐའ་དག་ ཏུ་ནི་ འཕྲོར་བར་བྱེད་ ।

དེ་ཆེས་ མཆུག་ མ་རབ་བསྐྱུང་བའི་ ।

མཆུག་སྒྲོ་ལྷན་པ་ གར་དག་བྱེད་ ॥ ४१

स्वयमेव गलन्मानकलि कामिनि[38b]ते मनः ।

कलिकामथ नीपस्य दृष्ट्वा कां नु स्पृहशेषां ॥२३॥

འདོད་ལྷན་ས་ དག་ ཁྱོད་ཀྱི་ ཡིད་ ।

ཁེངས་ཚེད་ རང་ཉིད་ ཉམས་འགྱུར་དེ་ ।

ནི་བའི་ཀ་ལི་ཀླ་ མཐོང་ན་ ।

གནས་སྐབས་ ཅི་ལ་ དེག་འགྱུར་རམ་ ॥ ४२

आरुह्याक्रीडशैलस्य चन्द्रकान्तखलीमिमां ।

नृत्यत्येष लसन्सारुचन्द्रकान्तः शिखावलः ॥२४॥

छेदयति रंयिञ्चरेदं ।

सदरंयिञ्चरेदंयस्य सुतं नृप ।

सदरंयिञ्चरेदंयस्य सुतं नृप ।

सुतंयिञ्चरेदंयस्य सुतं नृप ॥ २८

उद्धृता राजकादुर्वी ध्रियतेय भुजेन ते ।

वराहेणोद्धृता यासौ वराहेरुपरि स्थिता ॥२५॥

सदरंयिञ्चरेदंयस्य सुतं नृप ।

सदरंयिञ्चरेदंयस्य सुतं नृप ।

सदरंयिञ्चरेदंयस्य सुतं नृप ।

सदरंयिञ्चरेदंयस्य सुतं नृप ॥ ३०

करेण ते रणेऽप्यन्तकरेण द्विषतां हताः ।

करेणैवः क्षरद्गता भान्ति सन्ध्याघना इव ॥२६॥

གཡུལ་དུ་ དག་ཡི་ གླང་པོ་ནམས་ །
 བྱིད་ཀྱི་ ལག་པ་ མཐར་བྱེད་ཀྱིས་ །
 བསྐྱེན་པའི་བྲག་ ཅི་ རབ་ཟག་པ་ །
 ཐུན་མཚམས་དག་གི་ སྤྱིན་ བཞིན་ མཛེས་ ॥ २७

परागतसुराजीव वातैर्ध्वस्ता भटेभ्यः ।
 परागतमिव कापि परागततमम्बरं ॥२७॥

རྒྱང་གིས་ རི་ཡི་ཤིང་སྤོང་ བཞིན་ །
 གཞན་གྱི་ སྤེ་ནི་ དཔའ་བོས་ བཅོམ་ །
 མཐར་ནི་ ག་ཤེད་ མོང་བ་ བཞིན་ །
 རུལ་གྱིས་ ཉམ་མཁའ་ བྱབ་པར་གྱུར་ ॥ २८

पातु वो भगवान्विष्णुः सदा नवघनद्युतिः ।
 स दानवकुलध्वंसी सदानवरदन्तिहा ॥२८॥

ལེགས་ལྷན་ རྒྱ་འཛིན་ གསར་པའི་འོད་ །
 ལྷ་མིན་དག་གི་རིགས་ཉམས་བྱེད་ །

ཆད་ལྷན་ གླང་པོ་ མཆོག་ བཅོས་པ།

ཁྱབ་འཇུག་དེས་ ཁྱེད་ ཉག་ཏུ་ སྤངས། ॥ ༣༥

कमलेस्समकेशान्ते कमलेर्ष्याकरं मुखं ।

कमलेभ्यं करोषि त्वं कमले[39a]वोन्मदिष्णुषु ॥२६॥

ཁྱེད་ཀྱི་མགོ་སྐྱ་བྱང་པ་འདྲ།

གཤོང་ནི་ བསྐྱར་ སྤག་དོག་བྱེད།

དཔལ་གྱིས་ བཞིན་ཏུ་ རབ་བྱོས་པ།

ཁྱེད་ཀྱིས་ སུ་ཞིག་ ཅི་མི་བྱེད། ॥ ༣༦

मुदा रमणमन्वीतमुदारमणिभूषणाः ।

मदभ्रमदृशः कर्तुमदभ्रजघनाः क्षमाः ॥३०॥

གྱ་ཆེ་ རིན་ཆེན་ གྱན་དང་ལྷན།

གྱགས་པས་ མིག་ འཁོར་ རོ་སྒྱ་ན།

ཆུང་བ་ མིན་པས་ མཇོང་པོ་ ཉི།

དགའ་བ་ལྷན་པ་ བྱ་བར་བཟོད། ॥ ༣༠

उदितैरन्यपुष्टानामारुतैर्मे हतं मनः ।

उदितैरपि ते दूति मारुतैरपि दक्षिणैः ॥३१॥

གཞན་གསོས་ལྷས་ཀྱིས་ བསྐྱབས་པ་ དང་ ।

ཁྱོད་ཀྱི་ བཟོད་པའི་སྒྲ་ དང་ ཅི་ ।

ལྷ་ཡི་ཕྱོགས་ཀྱི་ རྒྱང་གིས་ ཀྱང་ ।

བདག་ཡིད་ ཕྱོགས་སོ་ གོ་ཉ་སོ་ ॥ ३१

सुराजितहियो यूनां तनुमध्यासते स्त्रियः ।

तनुमध्या क्षरत्स्वेदसुराजितमुखेन्दवः ॥३२॥

སྒྱེད་པ་སྒྲ་ ཞིང་ རྩལ་ཟག་པས་ ।

གཏོང་གི་ཆེ་བ་ རབ་སངས་པའི་ ।

བྱད་མེད་ ཆང་གིས་ རོ་ཆ་ བཅོས་ ।

སྒྲིས་པའི་ལུས་ལ་ འཛོགས་པར་བྱེད་ ॥ ३२

इति व्यपेतयमकप्रभेदोप्येष दर्शितः ।

अव्यपेतव्यपेतात्मा विकल्पोप्यस्ति तद्यथा ॥३३॥

དེ་ལྟར་ བར་ཚེད་རྒྱང་ལྷན་གྱི།
 རབ་དུ་དབྱེ་བ་ འདི་ཡང་ བསྟན།
 བར་ཚེད་ མ་ཚེད་ བདག་ཉིད་གྱི།
 རྣམ་རྟོག་ ཀྱང་ ཡོད་ འདི་ལྟ་སྟེ ॥ ༣༣

सालं सालंबकलिकासालं सालं न वीक्षितुं ।
 नालीनालीनवकुलानालो नालीकिनीरपि ॥३४॥

ཀ་ལི་ཀྱ་ འཕྱང་ ཡལ་ག་ཅན་ །
 སྤ་ལ་ བལ་བར་ དེ་ མི་ནུས།
 བ་ཀྱ་ལར་ ཆགས་ བྱང་བ་ དང་ །
 བློགས་མོས་ བསྐྱེད་ ཡང་ མིན ॥ ༣༤

कालं कालमनालक्ष्यतारतारकमीक्षितुं ।
 तारतारम्यरसितं कालं कालमहाघनं ॥३५॥

མིན་ནག་ ཆེན་པོ་ལྷན་བའི་དུས།
 སྤང་དང་ རྒྱ་སྐར་ ཀྱན་ མི་མཆོད།

གསང་ འཕྲོར་ དགའ་བ་ རྒྱུགས་ཕྱེད་པ།

དུས་འདྲ་ སྤྲ་ཡིས་ བཟུང་བར་ནས ॥ ३०

याम यामत्रयाधीनायामया मरणं निशा ।

यामयाम धि[39b]याऽस्वत्याया मया मयितैव सा ॥३६॥

ཐུན་གསུམ་ དབང་གུར་ རེང་བ་ཡི།

སའྲན་མོ་ ཡིས་ནི་ བདག་གི་ཅིག།

གང་ལ་ བདག་ སང་ རྒྱུག་ གཟེར་ འགྲོ།

དེ་ནི་ རྒྱུ་མེད་ བདག་གིས་ བཅོམ་ ॥ ३७

इतिपादादियमकविकल्पस्येदृशी गतिः ।

एवमेव विकल्प्यानि यमकानीतराण्यपि ॥३७॥

ཅེས་ཀྱང་ དང་པོ་ ཟུང་ཐུན་གྱི།

ནས་དྲིག་ ལྷགས་ནི་ འདི་འདྲ་ ལྟེ།

འདི་ལྟ་ ཁོ་ན་ ཟུང་ཐུན་གྱི།

ནས་དྲིག་ གཞན་པ་ རྒྱུགས་ ཀྱང་ངོ་ ॥ ३८

न प्रपञ्चभयाद्भेदाः कात्स्न्येनाख्यातुमीप्सिताः ।
दुष्करामिमता एव वर्ण्यन्ते तत्र केचन ॥३८॥

སྒྲོམ་པས་ འཛིགས་ གྱིར་ དགྲེ་བ་ནི །
མཐའ་དག་ བཟོད་པར་ མི་འདོད་དེ །
དེ་ལ་ བྱ་དགར་ མངོན་འདོད་ གང་ །
འགའ་ཞིག་དག་ནི་ བསྐྱན་པར་བྱ ॥ ३८

स्थिरायते यतेन्द्रियो न ह्रीयते यतेर्भवान् ।
आमायतेयतेप्यभूत्सुखाय ते यते क्षयं ॥३९॥

བདན་ལྷན་ དབང་པོ་ རབ་བསྐྱམས་པ །
ཁྱིད་ནི་སྒྲོམ་བཙུན་ལས་མི་ཉམས །
སྒྲུ་མེད་ ཁྱིད་ཀྱི་ བདེ་ འཛིགས་པར །
མི་འགྱུར་ འདི་སྒྲིད་ ཆེད་དུ་འང་ འགྱུར ॥ ३९

समासु राज्ञसुराहतमुर्षीर्महीसुराणां वसुराजितः स्तुताः ।
न भासुरा यान्ति सुरास्य तगुणाः प्रजासु रागात्मसु राशिता गताः ॥४०॥

གྲུལ་པོ་འདུན་སར་ས་ཡི་ལྷ་རྣམས་ དག་གྱི་ཞལ །
 ཆང་གིས་ས་བཙོམ་ཙོར་གྱིས་ མཛེས་པས་རབ་བསྟོད་པའི །
 ཁྱོད་ཀྱི་ཡོན་ཏན་ རབ་གསལ་ཆགས་ བདག་སྤྱེ་དགུ་ལ །
 སང་པོ་ཉིད་གྲུར་ ལྷ་རྣམས་སྤུ་ བློ་མི་འགྲོ་མིན ། ུཾ

तव प्रियात्सञ्चरित प्रमत्तया विभूषणं धार्यमिहांशुमत्तया ।
 रतोत्सवामोदविशेषमत्तया न मे फलं किञ्चन कान्तिमत्तया ॥४१॥

དས་པའི་སྟོན་ལ་བག་མེད་ཁྱོད་ཀྱི་དགའ་ས་ གང་ །
 དགའ་བའི་དགའ་སྟོན་དགའ་བས་ ཁྱད་པར་དུ་སྟོས་མ །
 དེ་ཡིས་ འདིར་ནི་འོད་ལྡན་ གྲུར་རྣམས་ གཟུང་བར་འོས །
 བདག་ལ་ མཛེས་ལྡན་ཉིད་ཀྱི་འབྲས་བུ་འགའ་ཡང་མེད ། ུཾ

भवाद्दशा नाथ न जानते न ते रसं विरुद्धे खलु[40a]सन्नतेन ते ।
 य एव क्षीनाः शिरसा नतेन ते चरन्त्यलं दैन्यरसेन तेन ते ॥४२॥

མགོན་པོ་ཁྱོད་ལྷས་དུད་པའི་ར་ནི་མི་མཁྱེན་དེ །
 དསན་པ་ཉིད་ དང་ མཚོག་ཉིད་ དག་ནི་ དེས་པར་འགལ །

གང་ཞིག་ དམན་པ་རྣམས་ མི་ བྱིད་ལ་མགོས་ འདྲད་ཅིང་ །

དེ་དག་ ཁོ་ན་དམན་པའི་རོ་ དེས་ མཆོག་ཏུ་ བྱུ་ ॥ ༧༡

लीलास्मितेन शुचिना मृदुनोदितेन व्यालोकितेन लघुना गुरुणा गतेन ।
व्याजृम्भिते न जघने न च दर्शितेन सा हन्ति तेन गलितं मम जीवितेन ॥४३॥

རོལ་པའི་འཇུ་མ་ དཀར་ དང་ མི་ འཇམ་པོར་སྦྲེ་བ་ དང་ །

ཆུང་ཏུའི་ལྟ་བ་ དང་མི་ ལྷི་བའི་འགྲོ་བ་ དང་ །

ཀུན་ཏུ་སྒྲུལ་ དང་ རོ་ ལྟ་ན་དག་ ལྷོན་པ་ དེས་ །

བསྐྱུན་པ་ དེས་ ན་ བདག་མི་ འཛོལ་ས་ དམན་པར་གྱུར་ ॥ ༧༢

अमीमानमानमरवर्त्मसमानमानमात्मानमानतजगत्प्रथमानमानं ।
भूमानमानमत यः स्थितिमानमान नामानमानमतमप्रतिमानमानं ॥४४॥

དབལ་ལྷན་ མི་ཤོང་ བཅན་ལྷན་ གང་གིས་ བདག་ཉིད་མི་ །

འཆི་མེད་ལས་དང་ མཉམ་པའི་ཆད་ལྷན་ རབ་དྲུང་པའི་ །

འགྲོ་བ་རྒྱས་བྱེད་ མཆོད་ལྷན་ ཆད་མེད་ མིང་ཅན་མི་ །

འཇལ་བྱེད་ ཆད་མེད་ མང་པོ་ བཀོད་ལ་ ཕྱག་དག་མཛོད་ ། ༧༣

सारयन्तमुरसा रमयन्ती सारभूतमुहसारधरा तं ।
सारसानुकृतसारसकाञ्ची सा रसायनमसारमवैति ॥४५॥

བཅུད་ལ་ ཞུགས་ཏེ་ བློ་ལོ་ས་ དགའ་བྱེད་ཅིང་།
 མྱིང་པོར་གྱུར་པའི་ བཅུད་མང་ རབ་དུ་འཛིན།
 བཞན་གྱི་རྗེས་མཚུངས་ རྒྱ་ལྷན་ དྲིལ་ཚུང་ཅན།
 དེས་ ཉི་ བཅུད་ལོན་ མྱིང་པོ་མེད་པར་རིག། ༧༥

नयानयालोचनयानयानया नयानयान्धान्विनयानयायते ।
न यानयासीर्जनयानयानया नयानयांस्तान् जनयानयाभितान् ॥४६॥

བདྟན་གྱིས་ཚུལ་དང་ ཚུལ་མིན་ བདྟག་པ་ འདི་ཡིས་ནི །
 ཚུལ་མེད་ དག་བའི་ཐབས་ལ་ ཁོང་རྣམས་ རྣམ་པར་ཐུལ །
 གཞན་པས་མི་འགྲོ་ རྒྱལ་བའི་ཐེག་འགྲོ་དག་གིས་ གང་ །
 ཚུལ་མ་ཐོབ་རྣམས་ ཐོབ་པ་ དག་ལ་ བདྟན་པ་སྟེད ༥ ༧

[40b]खेण भौमो ध्वजवर्त्तिवोरखेखेजि संयत्यतुलास्त्रगौरखे ।
खेरिवोप्रस्य पुरे हरेखेखेत तुल्यं रिपुमस्य मेरखे ॥४७॥

མཚུངས་མེད་ ལྷི་བའི་ མཚོན་ལྷན་ གཡུལ་དུས་སྒྲེས་ནི །
 གྲུལ་མཚན་ལ་ གནས་ དབང་བོ་ བྱ་ཡི་ སྒྲ་ཡིས་ བྲོས །
 ཉི་མ་ བཞིན་དུ་ བཟིན་བའི་ འཕྲོག་བྱེད་ འདི་མདུན་དུ །
 འཛིགས་རུང་ གཡུལ་ ལ་ དག་ནི་ལྷག་དང་མཚུངས་པར་རིག ༥ ༧༧

मयामयालम्ब्यकलामयामयामयामयातव्यविरामयामया ।
 मयामयासिं निशयाऽमयामयामयामयामूं कलामयामया ॥४८॥

མཚན་མེད་ ཚད་མེད་ བྱན་ལྷན་ དབང་མེད་ ཚད་མེད་ཅིང་ །
 མཐར་ ཉི་ བསྒྲོད་བྱ་ མིན་པ་ ཟད་ནད་ལ་ བཏེན་པ །
 ཆ་ཡི་ རང་བཞིན་ ཉད་ཅན་ འབྲུལ་བའི་ ཉད་ཀྱིས་ གཟིར །
 སྒྲུལ་ལྷན་མ་ འདི་ སྒྲིང་ཟེའི་རང་བཞིན་ འབྲུལ་མེད་ མཐོང་ ॥ ༧༨

मतां धुनानां रमतामकामतामतापलब्धाग्रिमतानुलोमता ।
 मतावयत्युत्तमता विलोमतामताम्यतस्ते समता नवामता ॥४९॥

ལང་མེད་ བྱིད་ཀྱི་ སྒྲོ་ལ་ མཉམ་ ཉིད་ བསྒྲོག་པ་ ཉིད །
 མ་ཡིན་ སྒྲ་མེད་ ཟེས་སུ་ མི་མཐུན་ འགྲོ་མ་ ཡིན །

उपोढरागाप्यबला मदेन सा मदेनसा मन्युरसेन योजिता ।
न योजितात्मानमनङ्गतापिता गतापि तापाय ममास नेयते ॥५२॥

ཕྱོམ་པའི་ ཆགས་པ་ ཉི་བར་གནས་ཀྱང་ བྱད་མེད་དེས །
བདག་ཉིད་ མ་སྦྱར་ བདག་གི་ སྒྲིག་པས་ ཁྲོ་བ་ཡི །
རོ་དང་ སྦྱར་དེ་ ལུས་མེད་ དག་གིས་ གཏུང་ བྱར་ ཀྱང་ །
བདག་ ཅི་ འདི་སྟེན་ གཏུང་བཞི་སྦྱད་དུ་ མ་བསྐྱད་དོ ॥ ༥༢

अर्थाभ्यासः समुद्रः स्यादस्य मेदांल्लयो मताः ।
पादाभ्यासोप्यनेकात्मा व्यज्यते स निदर्शनैः ॥५३॥

ཕྱིད་རྒྱས་ ཡང་དག་སྦྱར་བ་ཡིན །
འདི་ལ་ དབྱེ་བ་ གསུམ་དུ་ འདོད །
ཀྱང་པ་ བརྒྱས་པ་ དང་ ཏུ་མ་ ཡི །
བདག་ ཉིད་ དེ་དག་ དཔེས་གསལ་བུ ॥ ༥༣

नास्थेयः सत्त्वया वर्ज्यः परमायतमानया ।
नास्थेयः स त्वया वर्ज्यः परमायतमानया ॥५४॥

སྒྲིམ་བྱ་ བདྲན་ གང་ སྒྲིང་སྒྲོབས་ཅན།
 ཁིངས་པ་ རབ་སྤངས་ སྤང་བྱ་ རེ།
 ཁྱིེ་གྲིས་ མཆོག་ཏུ་ འབད་པ་ ཡིས།
 ཡིད་བདྲན་བྱའོ་ མི་བདན་མ། ॥ ༡༥

नरा जिता माननया समेत्य न राजिता माननयासमेत्य ।
 विनाशिता वै भवतापनेन विनाशिता वैभवतापनेन ॥५५॥

ཁྱིེ་གྲི་ བཟོད་པ་ ཁུབ་བདག་ གཟི་བྱིན་གྲིས།
 ཡང་ཡང་ རབ་སྤྱར་ མཆོས་པ་ མེད་པ་ཡི།
 མི་རྣམས་ རྩལ་དང་ ང་ཀྱལ་ ཉམས་བྱས་ནས།
 གདུང་ ཞིང་ གྲི་མ་ བྱས་ཆོས་ རྣམ་པར་བཅོམ། ॥ ༡༦

कलापिनां चारुतयोपयान्ति वृन्दानि लापोढघनागमानां ।
 वृन्दानिलापोढघनागमानां कलापिनां चारुतयोऽप[4]b]यान्ति ॥५६॥

སྒྲིན་བཟོད་ དབྱར་སྒྲིམ་ མི་བྱའི་ཆོགས་རྣམས་ རེ།
 དགའ་བའི་སྒྲི་ཡིས་ མཆོས་པ་ ཐོབ་པར་བྱར།

རྒྱུང་གི་ཚོགས་ ལྷག་ བྲལ་བས་ རྒྱུང་སྒྲོགས་ཀྱི །
 ཚོགས་རྣམས་ སྒྲ་དང་བྲལ་བ་ ཉིད་དུ་ བྱུང་ ॥ ༡༩

न मन्दयाऽवर्जितमानसात्मया नमन्दयाऽवर्जितमानसात्मया ।
 उरस्युपास्तीण्णेपयोधरद्वयं मया समालिङ्ग्यत जीवितेश्वरः ॥५७॥

འཚོ་བའི་དབང་ཕྱུག་ འདུད་བའི་ཡོད་ཀྱིས་ ཁོ་མ་ནི །
 དམན་ཞིང་ ཁེངས་པ་ ཇེས་པར་བསྐྱབས་པའི་དབང་བྱུང་མ །
 བཙེ་བ་ སྒྲངས་པས་ བདག་ཉིད་ བྲང་གི་འོ་མ་འཛིན།
 གཉིས་པོ་ ཉི་བར་གདད་ནས་ ཀྱན་དུ་མ་འབྱུང་འོ ॥ ༢༠

सभा सुराणामबला विभूषिता गुणैस्तवारोहि मृणालनिर्मलैः ।
 स भासुराणामबला विभूषिता विहारयन्निर्विश सम्पदः पुराम् ॥५८॥

སྒྲ་རྣམས་ འདུན་ས་ ལྷོབས་མེད་ཁྱབ་བདག་གནས་པ་ནི །
 ཁྱོད་ཀྱི་ཡོན་ཏན་ བད་ཅ་ གི་མ་མེད་པས་ འཛོགས།
 དེ་ནི་ འོད་འབར་ བྱོང་བཟང་རྣམས་ཀྱི་ ཕན་སུམ་ཚོགས།
 བསྐྱན་པའི་ བྱད་མེད་རྣམས་ དང་ རྣམ་པར་ཅེ་ཞིང་སྒྲོད་ ॥ ༢༡

कलङ्कुमुक्तं तनुमध्यनामिका स्तनद्वयो च तदृते न हन्यतः ।
न याति भूतक्लणने भवन्मुखे कलङ्कुमुक्तं तनुमध्यनामिका ॥५६॥

। वरः सुन्दरः सुखः सुन्दरः सुन्दरः सुन्दरः सुन्दरः ।
सुन्दरः सुन्दरः सुन्दरः सुन्दरः सुन्दरः सुन्दरः सुन्दरः ।
सुन्दरः सुन्दरः सुन्दरः सुन्दरः सुन्दरः सुन्दरः सुन्दरः ।
सुन्दरः सुन्दरः सुन्दरः सुन्दरः सुन्दरः सुन्दरः सुन्दरः ॥ ५७

यशश्च ते दिशु रजश्च सैनिका वितन्वतेऽजोपम दंशिता युधा ।
वितन्वतेजोपमदं शितायुधा द्विषां च कुर्वन्ति कुलन्तरस्विनः ॥६०॥

सुन्दरः सुन्दरः सुन्दरः सुन्दरः सुन्दरः सुन्दरः सुन्दरः ।
सुन्दरः सुन्दरः सुन्दरः सुन्दरः सुन्दरः सुन्दरः सुन्दरः ।
सुन्दरः सुन्दरः सुन्दरः सुन्दरः सुन्दरः सुन्दरः सुन्दरः ।
सुन्दरः सुन्दरः सुन्दरः सुन्दरः सुन्दरः सुन्दरः सुन्दरः ॥ ६०

विभर्त्ति भूमेर्वलयं भुजेन [42a] ते भुजंगमोमा स्मरतो मदञ्जितं ।
शृणूक्तमेकं स्वयमेत्य भूधरं भुजंगमो मा स्म रतो मदञ्जितं ॥६१॥

བླ་མ་གྱི་བདག་ལ་ཕན་པའི་ཆོག་གཅིག་གསན་པར་མཛོད།
 བྱིད་ཀྱི་ལག་པ་དཔལ་དང་རྒྱན་ཅིག་ལག་འགྲོ་ཡིས།
 ས་ཡི་དཀྱིལ་འཁོར་ནས་འཛིན་དེ་སྤྱིར་ས་གཞི་འཛིན།
 རང་ལག་རིག་ནས་ཀླགས་པ་ཀླས་པར་ཡོངས་ས་བྱེད། ॥ ༤༡

स्मरानलोमानविवर्धितो यः स निर्वृतिं ते किमपाकरोति ।
 समन्ततस्तामरसेक्षणे न समन्ततस्तामरसे क्षणेन ॥६२॥

འདོད་པའི་མི་གང་ཁེངས་པས་རབ་བསྐྱབས་པ།
 སྐད་ཅིག་དང་མཉམ་ཀླས་དེས་བསྐྱེད་མིག།
 རོ་མེད་བྱིད་ཀྱི་བདེ་བ་དེ་དག་ནི།
 ཀླན་ནས་ཉམས་པ་ཉིད་དུ་ཅིས་མི་བྱེད། ॥ ༤༢

प्रभावतो नामन वासवस्य प्रभावतो नाम नवासवस्य ।
 प्रभावतो नाम न वा सवस्य बिच्छित्तिरासोत्त्वयि पिष्टपस्य ॥६३॥

མ་དུད་བྱིད་ནི་འཛིན་ཏེན་བདག་གྱུར་ཆོ།
 མཐུ་ཡིས་མཐུ་ལྷན་ནོར་ཅན་འདུད་བྱེད་པ།

དེ་སྤྱིར་གསར་བའི་བདུང་ལྷན་མཆོད་སྤྱོད་ནི།
 དེས་པ་ཉིད་དུ་ཆད་པར་མ་གྱུར་རོ། ॥ ༤༢

परम्पराया बलवा रणानां धूलीखिलीव्योन्नि विधाय रुन्धन् ।
 परम्पराया बलवारणानां परम्परायाबलवारणानां ॥६४॥

དབུང་གི་སྤང་པོ་རྣམས་ནི་གཞན་དང་གཞན།
 ལྷོབས་ལྷན་སྒྲོགས་རབ་དུ་བརྒྱད་པ་ཡིས།
 ཐང་ལ་དུལ་བསྐྱབས་ནས་མཁའ་འགོག་བྱེད་ཅིང་།
 གཡུལ་གྱི་ལྷོབས་བརྒྲོག་མཆོག་དང་གཞན་ལ་ཀླག། ॥ ༤༣

न श्रद्धये वाचमलज्ज मिथ्या भवद्विधानामसमाहितानां ।
 भवद्विधानामसमाहितानां भवद्विधानामसमाहितानां ॥६५॥

ཁྱེད་ལྷ་མཉམ་པར་མ་བཞག་སྤྱིད་པར་ནི།
 རྣམ་གཉིས་མི་མཉམ་པན་པ་མེད་རྣམས་ཆོག།
 ལོག་པར་གྱུར་པ་སྐྱབ་བྱེད་མི་མཉམ་པ།
 སྤལ་བགོད་མཆུངས་ལ་མི་དད་ངོ་ཚ་མེད། ॥ ༤༤

सन्नाहितोमानमराजसे[42b]न सन्नाहितोमानम राजसे न ।
सन्नाहितो मानम राजसेन सन्ना हितोमानमराजसेन ॥ ६६ ॥

དག་ཡི་ མཛེས་ འཛེམས་ རྒྱལ་པོ་འེ་སྡེ་ཡིས་བདུད །
ཡུ་མས་ ཡན་པ་ དབལ་བླ་ མེད་མིན་སྡེ །
མི་འདུད་ གོ་བགོས་ མཚོད་ཐོབ་ རུལ་མེད་པ །
སྦྱེས་མཚོག་ རྩེ་བོ་དམ་པ་ མི་མཛེས་མིན ॥ ५७

सहृद्विस्त्रिभ्य योऽभ्यासः पादस्यैवं प्रदर्शितः ।
श्लोकद्वयन्तु युक्तार्थं श्लोकाभ्यासः स्मृतो यथा ॥ ६७ ॥

དེ་ལྟར་ ཀང་པ་ ལན་གཅིག་དང་ །
གཉིས་དང་ གསུམ་ ཡང་ བརྒྱས་པ་ བཟུད །
ཆོགས་བཅད་ གཉིས་དང་ལྷན་པའི་དོན །
ཆོགས་བཅད་ བརྒྱས་པ་ ཡིན་ཏེ་ དཔེར ॥ ५८

विनायकेन भवता वृत्तोपचितबाहुना ।
स्वमित्रोद्धारिणाऽभीता पृथ्वीयमनुलाश्रिता ॥६८॥

རྒྱུ་ཞིང་ གྲུ་པའི་ ལག་པ་ཅན་ ।
 གྲོགས་མིན་ རབ་ད་འཛོམས་བྱེད་པ་ ।
 རྣམ་འདྲན་ ཁྱོད་ཀྱི་ བསྟེན་པ་ཡི་ ।
 མི་མཚུངས་ ས་ འདི་ འཛིགས་པ་མེད་ ॥ ༤༤

विनायकेन भवता वृत्तोपचितबाहुना ।
 स्वमित्रोद्धारिणाऽभीता पृथ्वी यमतुलाश्रिता ॥६६॥

འདྲན་པ་ དག་ དང་ བྲལ་གྱར་ཅིང་ ।
 ལག་པ་ གྲོག་ཁང་ ཉེ་གྱར་པ་ ।
 རབ་གྲོགས་ཀྱིས་ བདང་ དབྱ་ཡིས་ནི་ ।
 མི་མཉམ་ ས་ འདི་ མཛོན་པར་བསྟེན་ ॥ ༤༥

एकाकारचतुष्पादं यन्महायमकाङ्क्ष्यं ।
 तस्यापि दृश्यतेऽभ्यासः सा परा यमकक्रिया ॥७०॥

ཀྱང་བཞི་ རྣམ་པ་ གཅིག་པ་ གང་ ।
 རྒྱང་ལྷན་ ཆེན་པོར་ བཛོད་པ་ ཡིན་ ।

དེ་ལ་འང་ བརྒྱས་པ་ མཐོང་སྟེ་ དེ།
 ཟུང་ལྷན་ བྱ་བ་ གཞན་ ཡིན་ནོ། ༥༠

समानयास मानया समानयासमानया ।
 समानया समानया समान या समानया ॥७१॥

མཉམ་མེད་ དཔལ་ལྷན་ མཚུངས་མེད་མ།
 ཁེངས་ལྷན་ ངལ་བ་ དག་དང་ནི།
 ཁེངས་པ་མཉམ་ལྷན་ ཚུལ་མེན་དག།
 རྟོག་བའི་ཚད་འདིས་ འགྲོགས་སྤྱུ་རྒྱལ། ༥༡

घराघराकारघरा घराभुजां भुजा महीं पा[43a]तुमहीनिविक्रमाः ।
 क्रमात्सहन्ते सहसा हतारयो रयोद्धुरा मानघुरावलम्बिनः ॥७२॥

འཛིན་མ་ འཛིན་པའི་རྣམ་འཛིན་ འཛིན་མ་སྟོད་རྣམས་ཀྱི།
 ལག་པ་རྣམ་གཞོན་ མི་དམན་ འབྲལ་ལ་ དག་འཛོམས་པ།
 སྤྱུང་བ་དང་ལྷན་ མཚོད་པའི་ ཁྱུང་ནི་ བསྟེན་པ་ ཡིས།
 ས་གཞི་ དག་ནི་རིམ་བས་ བསྐྱང་བར་ བཟོད་ པ་ཡིན། ༥༢

आवृत्तिः प्रतिलोम्येन पादार्धश्लोकगोचरा ।
यमकं प्रतिलोमत्वात् प्रतिलोममिति स्मृतं ॥७३॥

ཀང་ཕྱེད་ རྩོགས་བཅད་ སྟོན་ལུལ་ཅན་ ।
ལུགས་ལས་ བརྒྱུག་བ་ བསྐྱར་བ་ ཉི་ ।
རྩེད་ལྷན་ ལུགས་ལས་ བརྒྱུག་བའི་ཕྱིར་ ।
ལུགས་ལས་ བརྒྱུག་བ་ ཞེས་བར་ བཤད་ ॥ ७३

या मताश कृतायासा सायाता कृशता मथा ।
रमणारकता तेऽस्तु स्तुतेताकरणामर ॥७४॥

གང་ལ་ འབད་ཀྱས་ ལ་མོ་ ཉིད་ ।
དེ་ནི་ བདག་གིས་ ཐོབ་ མཇའ་བ་ ।
རོ་འདོད་མེད་པས་ ཕྱེད་མེད་ལྷ་ ।
བསྟོན་བ་ ཐོབ་ ཁྱོད་ འགྲོ་བྱུར་ཅིག་ ॥ ७४

नादिनोऽमदनाधी स्वा न मे काचन कामिता ।
तामिका न च कामेन स्वाधीनादमनोदिना ॥७५॥

རྒྱ་ད་ལྷན་ བདག་ རང་གི་ སྒྲོ་ །
 སྒྲོས་མིན་ འདོད་པ་ འགའ་ ཡང་མེད་ །
 དུལ་བ་ འཛེམས་པའི་ འདོད་པ་ ཡིས་ །
 རང་དབང་ གཏུང་བ་ དག་ཀྱང་ མེད་ ॥ ༧༥

यानमानय माराविकशो नानजनासना ।
 यामुदारशताधीनामायामयमनादि सा ॥७६॥

ཡིད་འགོ་ བདུད་སྒྲོང་ ལྷག་མི་དྲམན་ །
 གང་ཞིག་ དབང་གུར་ སྒྲེ་བོ་ འཛེམས་ །
 གང་ལ་ བདག་སོང་ སྒྲེ་བོ་ བརྒྱའི་ །
 དབང་གུར་ དེ་ལ་ བྱོན་ ཞེས་ སྒྲུས་ ॥ ༧༦

सा दिनामयमायामा नाधीता शरदामुया ।
 नासनाजनना शोकविरामायनमानया ॥७७॥

སྒྲོན་ འདི་ ཡིས་ནི་ གཟེར་གུར་ཅང་
 སྒྲོན་མི་ ཤེས་མ་ དེ་ཡིས་ ཅི་ །

ཉིན་མོའི་ ལང་དག་ མ་ཐོབ་ མེན །

བྱ་ངན་ འབྲེལ་ སྤྲད་ ཁེངས་མ་བྱེད ༥ ༡༡

वर्णानामेकरूपत्वं यद्येकान्तरमर्थ[43b]योः ।

गोमूत्रिकेति तत्प्राहुर्दृष्करं तद्विदो यथा ॥७८॥

གལ་ཏེ་ བྱེད་ ཀྱེ་ཡི་གེ་ རྣམས་ །

གཅིག་གིས་ བར་ཚོད་ གཞུགས་གཅིག་ཉིད །

དེ་ནི་ བྱ་དྭགས་ དེ་ཉིད་ རིག་ །

བ་ལང་ གཅིན་ ཞེས་ སྤྲ་ སྟེ་ དཔེར ༥ ༡༢

मदनो मदिराक्षीणामपाङ्गाखोजये दयं ।

मदेनो यदि तत् क्षोणमनङ्गायाञ्जलिं दधे ॥७९॥

ཆང་འདྲའི་ མིག་ལྟན་ ཟུར་མིག་གི་ །

མཚོན་ གྱིས་ འདོད་བ་ འདི་ཀྱལ་ ཏེ་ །

གལ་ཏེ་ བདག་ཀྱང་ སྤྲིག་ཟད་ ན །

འདོད་བ་ ལ་ནི་ ཐལ་མོ་ སྦྱར ༥ ༡༣

आहुरर्धभ्रमं नाम श्लोकार्धभ्रमणं यदि ।
तदिष्टं सर्वतोभद्रं भ्रमणं यदि सर्वतः ॥८०॥

གཡ་དེ་ རྒྱལ་ས་བཅད་ སྤྱིད་ འཁོར་ན།
སྤྱིད་དུ་ འཁོར་བ་ ཞེས་པར་ བརྗེད།
གཡ་དེ་ ཀུན་དུ་ འཁོར་བ་ན།
ཀུན་དུ་བཟང་པོ་ ཞེས་པར་ འདོད། ॥ ८०

मनोभव तवानीकं नोदया य न मानिनी ।
भयादमेयामामावावयमेनोमया न ते ॥८१॥

ས་དུད་ ཡོད་བྱུང་ ཁྱེད་ དར་ སྤྱིར
སྤྱི་ནི་ ཁྱེད་ས་ལྡན་ མ་ཡིན་ མིན།
ཡང་ན་ ཚད་ དག་མེད་ ཉད་ཀྱི།
འཛིགས་ ལས་ བདག་ཅག་ སྤྱིག་པའི་དངོས། ॥ ८१

सामायामामायामासामारानायानारामा ।
यानावाराराधानायामायारामामारायामा ॥८२॥

ནད་རིང་མིན་པའི་དགའ་མ་གང་།
 བདུད་བརྒྱར་མ་ལྷུང་བཤོད་བརྒྱུག་མ།
 ལྷ་མེད་ལྷོབས་ལྷན་སྐྱུ་གནས་ཏི།
 ལྷ་དང་ལྷན་ཅིག་འཆི་སྤྱད་དུའོ། ༥༩

यः स्वरस्थानवर्णानां नियमो दुष्करेष्वसौ ।
 इष्टश्चतुःप्रभृत्येव दृश्यते सुकरः परः ॥८३॥

དབྱངས་དང་གནས་དང་ཡི་གེ་རྣམས་།
 ཇིས་པ་གང་འདི་བྱ་དགའ་ལ།
 བཞི་ལ་སོགས་པ་རབ་བསྟན་འདི།
 བཞན་ནི་བྱ་སྤྱད་དག་ཏུ་འདོད། ༥༩

आम्नायानामाहान्त्या वाग्गीतीरोतीर्भीतीः प्रीतीः ।
 भोगो रोगो मोदो मोहो ध्येये धेच्छे देशे क्षेमे ॥८४॥

རིག་བྱེད་རྣམས་མཐར་སྤྱས་པའི་ཆོག་།
 ལྷ་དང་ཡམས་ནད་འཛིགས་དགའ་ཡིས།

ལོངས་སྤྱོད་ ཉན་དང་ དགའ་དང་ མེངས་ །
 དག་བའི་ ཡུལ་དྲ་ སེམས་ འདོད་རྩེང་ - - -

क्षितिर्विजितिस्थितिर्विहिति [44a]व्रतरतयः परगतयः ।
 उरु रुधुर्गुरु दुधुवुः स्वमरिकुलं युधि कुरवः ॥८५॥

ས་ལས་ རྣམ་རྒྱལ་ བདམ་བ་ སྐབ་བྱེད་པའི་ །
 བདུལ་ཞུགས་ལ་དགའ་ མཆོག་ རྟོགས་ ཀྱ་རྩ་བས་ །
 གཡུལ་དུ་ རང་གི་ དག་ཡི་ རིགས་རྣམས་ནི་ །
 ཆེ་བར་ བཀག་ཅིང་ ལྷི་བར་ འདར་བར་བྱས་ ॥ ८५

श्रीदीप्ति ह्रीकीर्ती धीनीती गीःप्रीतीः ।
 पथेते द्वे द्वे ते ये नेमे देवेशे ॥८६॥

དཔལ་གཟེ་ རོ་ཚ་ གྲགས་ དང་ །
 སྒོ་ལྷགས་ ཆོག་ དང་ དགའ་དག །
 ཁྱོད་ལ་ འཕེལ་བ་ གཉིས་གང་ །
 འདི་གཉིས་ ལྷ་དབང་ལ་ མེད་ ॥ ८६

सामायामामाया मास्ता मारानाययानारामा ।

यानावारारावानाया माया रामा मारायामा ॥८७॥

ནད་ཅིང་ མིན་པའི་ དགའ་ མ་གང་ ।

བདུད་ཀྱང་ མ་ལྡང་ བཤོད་ བཟློག་མ། ।

སྒྲ་མེད་ རྩེབས་ལྡན་ སྒྲ་གནས་དེ། ।

ཟླ་དང་ ལྷན་ཅིག་ འཆི་སྤྲད་དུའོ ॥ ८७ ॥

नयनानन्दजनने नक्षत्रगणशालिनि ।

अघने गगने दृष्टिरङ्गने दीयतां सहृत् ॥८८॥

འདེན་ཕྱིད་ ཀྱུན་དགའ་ སྒྲེད་ཕྱིད་མ། ।

ཀྱུ་སྒྲར་ཆོགས་ནམས་དག་གི་གནས། ।

སྒྲིན་མེད་ མཁའ་ལ་ ལུས་ཅན་མ། ।

ལན་ཅིག་ མིག་ནི་ སྒྲིན་པར་མཛོད་ ॥ ८८ ॥

अलिनीलालकलतं कम्प हन्ति घनस्तनि ।

आननं नलिनच्छायनयनं शशिकान्ति ते ॥८९॥

ན་ལྷག་ ཁྱིད་ གདོང་ལན་བྱ་ཡི།
 འཁྱི་ཡིང་ བྱང་བ་ ལྷར་ སྤྱོད་ཞིང་།
 འཕྲོན་བྱེད་ བསྐྱེད་གཟུགས་ བརྟན་ཅན།
 རྒྱ་ལྷར་ མཛེས་བས་ སུ་ མ་བཅོམ་ ॥ ༤༦

अनङ्गलङ्घनालम्बनानातङ्गु सदङ्गना ।
 सदानघ सदानन्दनताङ्गासङ्गसङ्गतः ॥६०॥

དྲག་དྲ་ སྤྱིག་མེད་ ཀྱུན་དགའ་ མཛོག།
 ལུས་ དུད་དག་ དང་ འགྲོགས་ལ་ ཆགས།
 བཅུན་མོ་ ལུས་མེད་ཀྱིས་ འགྲོངས་དེ།
 འཛིགས་བ་ དུ་མས་ དེག་བར་གྱུར་ ॥ ༤༧

अगा गांगङ्गाकाकाकगाहकाऽधककाकहा ।
 अहा[44b]हांग खगाङ्गागकंकागखगकाक ॥६१॥

དུ་དུ་མི་ སྤྱོགས་ མཁའ་ འགྲོས་ མཛོན།
 རི་འགྲོ་ དབང་ འཁྱོག་ལྷན་ མ་ཆགས།

འཁྱིལ་ རྒྱུགས་ བདུའི་ རྩེ་འཁྱུག་ སྤྱིག །
བྱ་རྩག་ འཛེམས་པ་ མཐོང་ངེས་ འགྲོ ॥ ༡༧

रे रे रोरुरुरोरुरागोगोऽगांगोऽगगुः ।
किङ्केकाकाकुकः काको मामा मामम मामम ॥६२॥

൬་ྔ་ སྒྲོགས་ ཅ་ཅའི་ བང་ །
 འཛིནས་ སྒྲིགས་ རི་ རི་ ཅར་ འགོ་ །
 ང་ཅན་མ་ རོང་ བདག་གི་བ་ །
 བྱ་རྒྱུ་ མ་བུའི་ སྒྲ་ སྒྲུང་ཅི་ ॥ ༢

देवानां नन्दनो देवो नोदनो वेदनिन्दिनः ।
दिवं दुदाव नादेन दाने दानवनन्दिनः ॥६३॥

ལྷ་ལྷ་ས་ དགའ་བར་བྱེད་པའི་ ལྷ་ ། .
 རིག་བྱེད་ལ་ སྒྲོད་ འགྲག་པ་པོས །
 ལྷ་མིན་ དགའ་བྱེད་ བཅོས་པ་ན །
 ལྷ་ཡིས་ མཐོ་རིས་ འབྲུགས་པར་གྱུར ། ལེ

सूरिः सुरासुरासारिसारः सारससारसाः ।
ससार सरसीः सीरी ससूरुः स सुरारसी ॥६४॥

མཁས་པ་ ལྷ་ དང་ ལྷ་མིན་ལ།
འགྲོ་ སྟོབས་ལྡན་པའི་ སྤྱིན་ལེགས་ཅན།
ཆང་གི་རོ་ལྡན་ གཤེལ་འཛིན་ དེ།
བཞད་ཀྱི་སྒྲ་ལྡན་ བཙོ་བུ་ རོང་ ॥ ༦༥

नूनं नुन्नानि नानेन नाननेनाननानि नः ।
नानेना ननु नानूनेनैनैनानानिनो निनीः ॥६५॥

འདི་ཡིས་ བདག་ཅག་རྣམས་ཀྱི་ བཞིན།
བཞིན་གྱིས་ དེས་པར་ མ་ བཅོམ་ མིན།
བདག་སྟོག་ མི་དཔན་ འདི་དང་ སྟོར།
ཇི་པོ་ སྟེས་མིན་ ཇིག་ཅན་ དེས། ॥ ༦༦

इति दुष्करमार्गेऽपि किञ्चिदादर्शितः क्रमः ।
प्रहेलिकाप्रकाराणां पुनरुद्दिश्यते गतिः ॥६६॥

རི་ལྷ་ར་ བྱ་ རྣའི་ལས་ལ་ ཡང་ །
 རིས་པ་ རྩང་ཟད་ ཀྱན་དུ་ བསྟན་ །
 བཟ་ཆོག་དག་གི་ རྣས་པ་ ཡི་ །
 ལྷགས་ ཀྱང་ རབ་དུ་བསྟན་པར་བྱ་ ॥ ༢༩

क्रीडागोष्ठीविनोदेषु तज्ज्ञैराकीर्णमन्त्रणे ।
 परव्यामोहने चापि सोपयोगाः ग्रहेलिकाः ॥६७॥

རྩད་མེདི་ འདུན་ སར་ བཞད་གང་དང་ །
 དེ་ཤེས་ ཆོགས་སུ་ བསང་ སྤྱ་ དང་ །
 པ་རེལ་ ཀྱན་དུ་ མེངས་བྱེད་ལ་ །
 བཟ་ཆོག་དག་ རི་ ཉེར་མཁོ་ལྟན་ ॥ ༣༠

आहुः समागतां नाम गूढार्थां पदसन्धिना ।
 वञ्चि[45a]ताऽन्यत्र रुढेन यत्र शब्देन वञ्चना ॥६८॥

ཆོག་མཚསས་ སྤྱར་བས་ དོན་སྤྱས་པ་ །
 ཀྱན་དུ་ ཆོགས་པ་ ཞེས་པར་ བཟྱེད་ །

གཞན་ལ་ བྲགས་པའི་སྒྲ་དག་གིས།

གང་དུ་ བསྐྱ་བ་ སྒྲ་བྱེད་ཉིད། ॥ ༩༤

व्युत्क्रान्तातिव्यवहितप्रयोगान्मोहकारिणी ।

सा स्यात्प्रमुषिता यस्यां दुर्बोधार्था पदावली ॥६६॥

སྒྲ་བ་ གིན་དུ་ འབྲུགས་པ་ ཡིས།

སྒྲ་བྱེད་ རིས་པ་ བྲལ་བ་ ལྟེ།

གང་ལ་ རོན་ རྟོགས་ དཀའ་བ་ ཡི།

ཆོག་ཐེང་ རེ་ནི་ རབ་བཅོས་ཡིན། ॥ ༩༥

समानरूपा गौणार्थारोपितैर्ग्रथिता पदैः ।

पठया लक्षणास्तित्वमात्रव्युत्पादितश्रुतिः ॥१००॥

བདགས་པའི་རོན་ བཞེད་ ཆོག་དག་གིས།

བསྐྱེབས་པ་དག་ནི་ མཐུན་པའི་གཞུགས་།

མཚན་ཉིད་ ཡོད་ཅས་ རེས་ཆོག་ དང་།

ཐུན་པའི་ཆོག་ རི་ རྒྱ་མོ་འོ། ॥ ༡༠༠

संख्याता नाम संख्यानं यत्र व्यामोहकारणं ।

अन्यथा भासते यत्र वाक्यार्थः सा प्रकल्पिता ॥१०१॥

གང་དུ་ བྱངས་ཀྱིས་ ཀུན་སྤངས་པར །

བྱེད་པ་ གྲངས་ཉིད་ ཅེས་བྱ་ལྟེ།

གང་དུ་ ངག་དོན་ རྣམ་པ་ གཞན་ །

སྒྲུང་བ་ རེ་ནི་ རབ་བཏགས་ཉིད ॥ ༡༡

सा नामान्तरिता यस्यां नास्ति नानार्थकल्पना ।

निवृत्ता निवृत्तान्यार्था तुल्यधर्मस्पृशा गिरा । १०२॥

གང་དུ་ མིང་ལ་ ལྷ་ཚོགས་ དོན།

བདག་པོ་ དེ་ མིང་དུ་ འདུས་པ་ཉིད།

རྟོག་ནི་ རྟོས་ བརྒྱུངས་ལ་ རིག་པས །

དེཅ་ གཞན་ བསྐྱེདས་པ་ བསྐྱེདས་པ་ལེ ༥ ༡༣

समानशब्दोपन्यस्तशब्दपर्यायसाधिता ।

संमूढा नाम या साक्षान्निर्दिष्टार्थापि मूढये ॥१०३॥

རྣམ་གྲངས་ སྒྲ་ནི་ བཀོད་པ་ ཡིས །
 བསྐྱབས་པ་དག་ནི་ མཐུན་པའི་སྒྲ་ །
 བཤ་ཞིག་ མངོན་སྲུང་ རོན་བཟུན་ ཡང་ །
 མྱོངས་ ལྷིང་ དེ་ནི་ མྱོངས་ ཞེས་བྱ ༥ ༡༠༢

योगमालात्मकज्ञानं यस्याः सा परिहारिकी ।
 एकच्छन्नाश्रित व्यज्य यस्यामाश्रयगोपनं ॥१०४॥

བཤ་ལ་ སྒྲོ་མེང་ བདག་ཉིད་ཅན་ །
 དེ་ནི་ ཡོངས་སྲུང་འབྲོག་ ཅས་ བྱ །
 བཤ་དུ་ ཉིན་ནི་ སྒྲས་བྱས་དེ །
 བདེན་པ་ བསལ་པ་ བཞིག་ བསྐྱབས་པའོ ॥ ༡༠༤

[45b]सा भवेदुभयच्छन्ना यस्यामुभयगोपनं ।
 र्सकीर्णा नाम सा यस्यां नानालक्षणसंकरः ॥१०५॥

བཤ་དུ་ བཞི་ག་ སྒྲས་བྱུང་པ་ །
 དེ་ནི་ བཞི་ག་ བསྐྱབས་པ་འོ །

གང་ལ་ མཚན་ཉིད་ ལྷ་ཚོགས་, འདྲེས །

དེ་ནི་ ཡོངས་སུ་འདྲེས་ ཞེས་བྱ ། ༡༠༣

एताः षोडश निर्विघ्नाः पूर्वाचार्यैः प्रहेलिकाः ।

दुष्टप्रहेलिकाश्चान्यास्तैरधीताश्चतुर्दश ॥१०६॥

འདི་དག་ གཤམ་ཚོགས་ བཅུ་དྲུག་སྟེ །

སྟོན་གྱི་སྟོབ་དཔོན་རྣམས་ཀྱིས་ བསྟན །

གཤམ་ཚོགས་ ངན་པ་ གཞན་དག་ ཀྱང་ །

བར་བཞི་ དེ་དག་རྣམས་ཀྱིས་ བརྗོད ། ༡༠༥

दोषानपरिसंख्येयान् मन्यमाना वयं पुनः ।

साध्वीरेवामिधास्यामस्ता दुष्टा यास्त्वलक्षणाः ॥१०७॥

ངན་པ་ མཚན་ཉིད་མེད་ གང་དེ །

སྟོན་གྱིས་ ཡོངས་བབྱང་བྱ་མིན་པར །

དེག་ནས་ ལྷ་ར་ ཡང་ བདག་ཅག་གིས །

ལེགས་པ་ ཁོ་ན་ བརྗོད་པར་བྱ ། ༡༠༧

न मयागोरस्तामिहं चेतः कस्मात्प्रकुप्यसि ।
अस्थानतुं दितैरेभिरलमालोहितेक्षणे ॥१०८॥

བདག་གིས་ བ་ལང་ རོ་སེས་ས་ ཀྱིས་ །
ཤེས་བ་ མེད་ལ་ ཅི་སྒྲན་ ཁྱོེ་ །
གནས་མིན་དུ་བ་ འདི་ཡིས་ བློ་ །
ཅི་བྱེད་ ཀྱན་དུ་ མིག་དཔར་ས་ ॥ १०८

कुब्जामासेवमानस्य यथा ते वर्धते रतिः ।
नैवं निर्विशतो नारीममरत्नीविडम्बिनीः ॥१०९॥

ཀྱལ་བཞུན་བ་ ཁྱོད་ཀྱི་ བློ་ །
དགའ་བ་ ཇི་ལྟར་ འཕེལ་གྱུར་བ་ །
འཆི་མེད་བྱ་མེད་ ཅི་འདྲི་ས་ །
མི་མོ་ སྒྲོད་བས་ དེ་ལྟ་མིན་ ॥ १०९

दण्डे चुम्बति पद्मिन्या हंसः कर्कशकण्टके ।
मुखं घल्गुरवं कुर्वन्मुण्डेनाङ्गानि घट्टयन् ॥११०॥

ཡུ་བར་ འོ་བྱེད་ བད་ཅན་ གྱི །
 ངང་བ་ མོར་མ་ རྒྱ་བོ་ཅན །
 བཞིན་ལ་ སྒྲ་སྒྲན་ སྒྲོགས་བྱེད་ཅིང་ །
 ལུས་ནི་ འདར་བ་བྱེད་ཅིང་ བརྒྱས ། ॥ १०

व्यातयः कनि काले ते स्फातयः स्फीतवल्गवः ।
 चन्द्रे साक्षाद्भवन्त्य[46a]त्र तायवो मम धारिणः ॥१११॥

བྱ་མོ་ མཛོས་མ་ ཁྱོད་ ཀང་བར །
 ཀང་བདུབ་ བྱས་བ་ སྒྲ་སྒྲན་ སྒྲོགས །
 མངོན་སུམ་ཉིད་དུ་གྱར་བ་ འདིར །
 བདག་གི་སྒྲོག་ནི་ བདྲན་ མ་ཡིན ། ॥ ११

अत्रोद्याने मया दृष्टा वल्लरी पञ्चपल्लवा । .
 पल्लवे पल्लवे चार्द्रा यस्याः कुसुममञ्जरी ॥११२॥ .

གང་གི་ ཡལ་འདབ་ ཡལ་འདབ་ལ །
 མེ་དོག་ སྒྲམ་བའི་ དོག་བ་ཅན །

འབྲི་ཤིང་ ཡལ་འདབ་ ལྔ་བ་ རྟི །

སྒྲིབ་མེས་ཚལ་ འདིར་ བདག་གིས་ མཐོང་ ॥ ༡༡༩

सुराः सुरालये स्वैरं भ्रमन्ति दशनाच्चिषा ।

मज्जन्त इव मत्तास्ते सौरे सरसि संप्रति ॥११३॥

ཆང་མ་རྣམས་ རྟི་ ཆང་ཁང་དུ །

ས་ཡི་འོད་ཀྱིས་ ཅེ་ དགར་ འབྲས་ས །

ད་ནི་ སྒྲིས་བར་བྱས་ དེ་རྣམས །

རང་གི་རྫོང་བྱར་ བྱིང་བ་ བཞིན ། ༡༡༣

नासिक्वमध्या परितश्चतुर्वर्णविभूषिता ।

अस्ति काचित्तुरी यस्यामष्टवर्णाह्वया नृपाः ॥११४॥

སྒྲ་ལྔ་ན་དབྲས་གནས་ གསལ་བྱེད་ བཞིས །

ཡོངས་སུ་རྣམ་བར་བརྒྱན་བ་ཡི །

གྲོང་ཁྱིམ་ འགའ་ ཡོད་ འགའ་ཞིག་ན །

མི་བདག་ ཡིག་ བརྒྱད་མིང་ཅན་ ཡོད ॥ ༡༡༤

गिरा स्वलन्त्या नम्रेण शिरसा दीनया दृशा ।
तिष्ठन्तमपि सोत्कम्प्य वृद्धे मां नानुकम्पसे ॥११५॥

ठग'क्षस' रव'रु'रु'रु'रु'रु' ५८ ।
म'रु'रु' ५८'उ'रु' री'रु' ५८'रु'रु' ।
रु'रु' ५८' ५८'रु'रु' ५८'रु'रु' ।
रु'रु' ५८' ५८'रु'रु' ५८'रु'रु' ॥ ११५ ॥

आदौ राजेत्यधीरास्त्रि पार्थिवः कोपि गीयते ।
सनातनश्च नैवासौ राजा नैव सनातनः ॥११६॥

री'रु'रु' ५८'रु'रु' ५८'रु'रु' ५८'रु'रु' ।
५८'रु'रु' ५८'रु'रु' ५८'रु'रु' ५८'रु'रु' ।
५८'रु'रु' ५८'रु'रु' ५८'रु'रु' ५८'रु'रु' ।
५८'रु'रु' ५८'रु'रु' ५८'रु'रु' ५८'रु'रु' ॥ ११६ ॥

हनद्रव्यं जनं त्यक्त्वा धनवन्तं प्रजन्ति काः ।

[46b]नानाभङ्गिशताकृष्टलोका वैश्या न दुर्धराः ॥११७॥

རྩ་སྒྲུལ་ མི་ནི་ བཏང་བྱས་ནས །
 རོར་ལྷན་ནམས་ཀྱི་ བགོད་པ་ གང་ །
 སྒྲ་ཚོགས་ཀྱོག་བཀྱས་འཛིག་དྲིན་འགྲུགས །
 གཟུང་དགའ་ སྒྲ་འཚོང་ས་ ཡིན་ནོ ॥ ༡༡༡

जितप्रकृष्टकेशाख्यो यस्तवामूमिसाह्वयः ।
 स मामद्य प्रभूतोत्कं करोति कलभाषिणि ॥११८॥

ཁྱད་ཀྱི་ ས་མིན་ མིང་ འཕྱན་གང་ །
 རབ་གྱུར་ སྒྲ་ མིང་ཅན་ལས་ཀྱལ་ །
 དེ་ཡིས་ དེང་ བདག་ མཚོག་དྲུ་ནི །
 སྒྲེད་ལྷན་བྱེད་དོ་ སྒྲ་སྒྲོགས་ས ། ༡༡༢

शयनीये परावृत्त्य शयितौ कामिनौ रुषा ।
 तथैव शयितौ रागात् स्वैरं मुखमचुम्बताम् ॥११९॥

འདོད་ལྷན་དག་ནི་ མལ་སྒྲན་ལ །
 མྱོ་བས་ སྒྲིར་ བཞོག་ ཉལ་བར་གྱུར །

ཆགས་པས་ རེ་བཞིན་ཉིད་ ཉལ་དེ །
 དལ་བྱ་ཡིས་ནི་ ཁ་དག་ སྟོར ༥ ॥ ११०

विजितान्नभवद्वेषिगुरुपादहतो जनः ।
 हिमापहामित्रधरैर्व्याप्तं व्योमाभिनन्दति ॥१२०॥

བྱ་ཀྱལ་ ཟས་སྟེས་ དབྱ་ཡི་ནི །
 སྤྲ་མའི་འདྲ་ཀྱིས་ བཅོམ་ སྟེ་བོ །
 ཁ་འཛོམས་ གྲོགས་མིན་ འཛོན་པ་ཡིས །
 ཁྱབ་པའི་མཁའ་ལ་ མའོན་པར་དགའ ༥ ॥ ११०

न स्पृशत्यायुधं जातु न स्त्रीणां स्तनमण्डलं ।
 अमनुष्यस्य कस्यापि हस्तोयं न किलाफलः ॥१२१॥

ནམ་ཡང་ མཚོན་ དང་ བྱད་མེད་ཀྱི །
 རྒྱ་མའི་ དཀྱིལ་འཁོར་ལ་ མ་རེག །
 མི་མ་ཡིན་པ་ འགའ་ཞིག་གི །
 ལག་ནི་ འབྲས་མེད་ མིན་ནོ་ ལོ། ॥ १११

རེ་ནི་ མིང་དུ་ འདུས་པ་ བསྐྱེས།
 བསྐྱེས་པ་ཡི་ནི་ གཞུགས་དང་ལྷན།
 རེ་བཞིན་ཉིད་དུ་ གཞན་ གྱི་ ཡང་།
 འདྲིས་པའི་ རིས་པ་ ཤེས་པར་བྱ། ॥ ༡༤༮

अपार्थं व्यर्थमेकार्थं ससंशयमपक्रमं ।
 शब्दहीनं यतिभ्रष्टं भिन्नवृत्तं वितन्धिकं ॥१२७॥

རན་ཉམས་ རན་འགལ་ རོན་གཅིག་པ།
 བེ་ཚོས་ཅན་ དང་ རིས་པ་ཉམས།
 སྒྲ་དམན་ ངལ་བསོ་ ཉམས་པ་ དང་།
 སྒྲེབ་སྒྲོར་ཉམས་ དང་ བཚམས་སྒྲོར་བྲལ། ॥ ༡༤༩

देशकालकलालोकन्यायागमविरोधि च ।
 इति दोषा दशैवैते वर्ज्याः काव्येषु सूरिभिः ॥१२८॥

ཡུལ་དུས་སྒྲུ་ཅལ་ འཛིག་དེན་ དང་།
 ལུང་རིགས་དག་ དང་ འགལ་བ་སྡེ།

སྒྲོན་ བཅུ་ དེ་བག་ སྒྲོན་ངག་ལ །

སྒྲོན་ངག་མཁན་གྱིས་ སྤང་བར་བྱ ། ११७

प्रतिष्ठाहेतुदृष्टान्तहानिर्दोषो न *चेत्यसौ ।

विचारः कर्कशः प्रायस्तेन लीढेन कि फलं ॥१२७॥

དམ་བཅའ་ གཏན་ཚིག་ དཔེ་ ཉམས་བ །

ཞེས་བ་ འདི་ ཡང་ སྒྲོན་མིན་ནམ །

ཕལ་ཆེར་ དབྱད་བ་ དཀའ་བ་ཉིད །

སྤང་བ་ དེ་ཡིས་ འབྲས་བྱ་ ཅི ། ११८

समुदायार्थशून्यं यत्तदपार्थमितीष्यते ।

तन्मत्तोन्मत्तबालानामुक्तेरन्यत्र दुष्यति ॥१२८॥

ཚིགས་བའི་ཐོན་ གྱིས་ སྤང་བ་ གང་ །

དེ་ནི་ ཐོན་ ཉམས་ ཞེས་བར་ འདོད །

སྒྲོན་བ་ སྒྲོན་བ་ གྱིས་བ་ཡིས །

བརྗོད་ ལས་ གཞན་ལ་ དེ་ སྒྲོན་ནི ། ११९

समुद्रः पीयते सोयमहमद्य जरातुरः ।

अमी गर्जन्ति जी[47b]मृता हरैरावतः प्रियः ॥१२६॥

འདི་ནི་ རྒྱ་མཚོ་ འཕྱང་བྱེད་དེ།

བདག་ རི་ དེ་རིང་ རྒྱ་བས་ བཞེར།

སྤྱི་ན་ འདི་ རབ་དུ་སྤྲིགས་བྱེད་ དེ།

འཕྲིག་བྱེད་ ས་སྤྲངས་ དག་ལ་ དགའ། ॥ १२७

इदमस्वस्थचित्तानामभिधानमनानन्दतं ।

इतरत्र कविः को वा प्रयुञ्जीतैवमादिकं ॥१३०॥

འདི་ སྤངས་ རྣལ་དུ་ ས་བཀམས་བའ

མངོན་བར་བརྗོད་པ་ སྤྲད་ མིན་དེ།

བཀམས་དུ་ དེ་ལྟ་བུ་ ལ་སྤྲིགས།

སྤྲད་ངག་མཁན་པོ་ སུ་ཞིག་ སྤྲོར། ॥ १२८

एकवाक्ये प्रबन्धे वा पूर्वापरपराहतं ।

विरुद्धार्थतया व्यर्थमिति दोषेषु पठ्यते ॥१३१॥

རག་གཅིག་ གས་ནི་ རྒྱན་ལ་ ཡང་ །
 སྤྲ་མ་ སྤྲི་མ་ གཞན་ འཛོམས་པ་ །
 འགལ་བའི་ རོན་ཅན་ ཉིད་ཀྱི་སྒྲོན་ །
 རོན་ འགལ་ ཞེས་པར་ རབ་དུ་བཞེད་ ॥ १३१

जहि शत्रुकुलं कृत्स्नं जय विश्वंभरामिमां ।
 न च ते कोपि विद्वेष्टा सर्वभूतानुकम्पिनः ॥१३२॥

དག་ རིགས་ མཐའ་དག་ འཛོམས་པ་ དང་ །
 རྒྱ་ཚོགས་ ཁར་ འདི་ རྒྱལ་གྱུར་ཅིག་ །
 འགྲུང་བོ་ རྒྱན་ལ་ བརྟེ་བ་ཅན་ །
 ཁྱོད་ལ་ དག་ནི་ སྤྲ་ ཡང་ མེད་ ॥ १३२

अस्ति काचिदवस्था सा सामिषंगस्य चेतसः ।
 यस्यां भवेदभिमता विरुद्धार्थापि भारती ॥१३३॥

མངོན་པར་ཆགས་ལྡན་ མེས་པ་ལ་ནི་ །
 སྤྲ་མ་ དེ་ འགལ་ཞིག་ ཡོད་པས་ན་ །

གང་ལ འགལ་བའི་ རོན་ཅན་ གྱི །

ཆོག་ ཀྱང་ མངོན་པར་འདོད་པར་འགྱུར ༥ ༡༣༢

परदारामिलाषो मे कथमार्यस्य युज्यते ।

पिबामि तरलन्तस्याः कदा नु दशनच्छदं ॥१३४॥

གཞན་གྱི་ བྱད་མེད་ལ་ མེད་པ །

འབགས་པ་དག་གི་ ག་ལ་ རིགས །

དེ་ཡི་ མོ་སྒྲིབ་ གཡོ་བ་ དག །

བདག་ནི་ ཉམ་ཞེག་ འགྱུར་འགྱུར་རམ ༥ ༡༣༣

अविशेषेण पूर्वोक्तं यदि भूयोपि कीर्त्यते ।

अर्थतः शब्दतो वापि तदेकार्थं मतं यथा ॥१३५॥

རོན་ཅིད་ དམ་ནི་ སྒྲ་ལ་ ཡང་ །

ཁྱད་པར་ མེད་པ་ སྒར་ བརྗོད་པ །

གཡ་ནི་ སྒར་ཡང་ རབ་བསྒྲགས་པ །

དེ་ ཉི་ རོན་ གཅིག་པར་ འདོད་ དཔོར ༥ ༡༣༤

उत्का[48a]मुन्मनयन्त्येते बालां तद्वलकत्विषः ।
अम्भोधरास्तडित्वन्तो गम्भीराः स्तनयिजवः ॥१३६॥

शेद'प' शेद'शेद' सु'खे'क'स' ।
दे'यी' ल'क'सु'दे' दे'दे'दे'क' ।
कु'द'दे'न' सु'दे'न'द'द'क'प'के' ।
दे'प'के' सु'सु'दे'न' दे'दे'न'गो' ॥ १३७

अनुकम्पाद्यतिशयो यदि कश्चिद्विषयते ।
न दोषः पुनरुक्तोपि प्रत्युतेयमलंकृतिः ॥१३७॥

दे'स'सु'प'के' दे'स'स' सु'दे'न' ल'स' ।
ग'ल'दे' दे'ग'ल'दे'ग' दे'दे' दे'दे' क' ।
ल' दे' दे' दे' ल'दे'स'स' सु'दे'न'दे' ।
दे'दे'के' सु'दे'न' दे'स'स'प'यी' ॥ १३८

हन्यते सा वरारोहा स्मरेणाकाण्डवैरिणा ।
हन्यत चारुसर्वाङ्गी हन्यते मञ्जुभाषिणी ॥१३८॥

འདོད་པ་ སྐབས་ མིན་ ཁན་པ་ཡིས།
 བྱད་མེད་ མཆོག་ རེ་ བཅོམ་པར་གྱུར།
 ཡན་ལག་ཀྱན་མཛེས་ བཅོམ་པར་གྱུར།
 འཇམ་པར་སྒྲོགས་མ་ བཅོམ་པར་གྱུར ॥ 232

निष्कर्णार्थम्युक्तानि संशयं जनयन्ति चेत् ।
 वचांसि दोष एवास्मै ससंशय इति स्मृतः ॥१३६॥

ཇེས་པའི་དོན་དུ་ རབ་སྐྱར་བའི།
 ཚོག་རྣམས་ཉིད་ཀྱིས་ གཤམ་ཏེ་ན།
 བྲེ་ཆོམ་ སྒྲིད་པར་བྱེད་ ཅ་ འདི།
 བྲེ་ཆོམ་ཅན་ ཞེས་ རབ་དུ་བཤད ॥ 233

मनोरथप्रियालोकरसलोलेश्वरे सखि ।
 आराद्धृत्तिरसौ माता न क्षमा द्रष्टुमीदृशं ॥१४०॥

རེ་འདོད་ དགའ་བ་ ལཱ་བ་ ཡི།
 རོ་ལ་ མིག་གཡོ་ སྒྲོགས་མོ་དང་།

གྲུང་ན་ འདུག་མ་ནི་ ས་མ་ འདིས་ ।
 འདི་འདྲ་ བཟ་བར་ བཟོད་ས་ཡིན ॥ ༡༠༠

ईदृशं संशयायैव यदि जातु प्रयुज्यते ।
 स्यादलंकार एवामो न दोषस्तत्र तद्यथा ॥१४१

འདི་འདྲ་ བྱེ་ཆོས་ སྤྲད་ ཉིད་དུ་ ।
 གཤམ་དེ་ འགའ་ཞིག་ རབ་སྤྲར་ན་ ।
 འདི་ནི་ གྲུན་ ཉིད་དུ་ འགྱུར་གྱི་ ।
 རེ་ལ་ སྤྱོད་མེད་ འདི་ལྟ་སྟེ ॥ ༡༠༡

पश्याम्यनङ्गजातङ्कलङ्घितां तामनिन्दिताम् ।
 कालेनव क[48b]ठोरेण ग्रस्तां कि नस्त्वदाशया ॥१४२॥

ལྷས་སྤྱེས་ མིན་པའི་ གདུང་བ་ཡི་ ।
 རིལ་གྱིས་ མཉན་ཅིང་ ཏུས་ ཅུབ་མོས་ ।
 རོས་པའི་ མ་སྤྲད་ས་ རེ་མཐོང་ ।
 ལ་ བདག་གི་ རེ་བས་ ཅི ॥ ༡༠༢

འགྲོ་བ་ནྐམས་ཀྱི་ གནས་པ་ དང་ །
 སྤྱལ་དང་ འཇིག་རྒྱུ་ མ་སྦྱིས་པ་ །
 བདེ་འབྱུང་ སྤེང་མེད་ རྩ་སྦྱིས་ཀྱི་ །
 སྦྱི་གནས་ཅན་ གྱིས་ ཁྱོད་ནྐམས་ སྤངས་ ॥ ༡༮༥

यत्नः सम्बन्धविज्ञानहेतुः कोपि कृतो यदि ।
 क्रमलङ्घनमप्याहुर्न दोषं सूरयो यथा ॥१४६॥

འབྲེལ་པ་ ཇིས་པར་ཤེས་པའི་ རྒྱུར་ །
 གང་ཡང་ གལ་དེ་ འབད་ བྱས་ན་ །
 རིས་པ་ འདས་ ཀྱང་ སྦྱོན་མེན་པར་ །
 མཁས་པ་ནྐམས་ རི་ སྦྱ་སྦྱེ་ དཔེར་ ॥ ༡༮༦

बन्धुत्यागस्तनुत्यागो देशत्याग इति त्रिषु ।
 आद्यान्तावायतक्लेशौ मध्यमः क्षणिकज्वरः ॥१४७॥

བཞེན་གཏོང་པ་ དང་ ལུས་གཏོང་དང་ །
 ཡུལ་གཏོང་ ཞེས་པ་ བསྐྱུམ་པོ་ ལ་ །

དང་པོ་ མཐའ་མ་ ཉན་མོངས་ རིང་ །

བར་མ་ སྐད་ཅིག་ གཏུང་བ་ལོ ༥ ༡༧

शब्दहीनमनालक्ष्यलक्ष्यलक्ष्यणपद्धतिः ।

पदप्रयोगो शिष्टेष्टो न शिष्टेष्टस्तु दुष्यति ॥१४८॥

མཆོད་བྱ་ མཚན་ཉིད་ ལས་ ས་མཆོད་ །

ཆོག་སྒྲོར་ སེམས་གིས་ མི་འདོད་པ་ །

སྒྲ་ཉམས་ ཡིན་ཏེ་ སེམས་རྣམས་ དག །

འདོད་པ་ ཉིད་ནི་ སྒྲོན་ མ་ཡིན ༥ ༡༨

[49a]अवते भवते बाहुर्महीमणवशकरीं ।

महाराजन्नजिज्ञासौ नास्तीत्यासां गिरां रसः ॥१४९॥

ས་གཞི་ གྱ་མཆོའི་ སྒྲེ་རགས་ཅན །

གྲལ་ཆེན་ ཁྱོད་ལ་ དབྱང་བ་ སྒྲུང་ །

ཞེས་པ་ ཤེས་འདོད་ མེད་བས་ན །

ཆོག་ འདི་ལ་ བྱི་ ཉམས་ ཡིན་མིན ༥ ༡༩

दक्षिणाद्वैरुपसरन् मारुतश्चूतपादपान् ।
कुरुते ललिताधूतप्रबालाङ्कुरशोभिनः ॥१५०॥

ह्ये'यं' री'लस' उर'वद'ग' ।
ह्र'वी'स' ह्र'न'दी'क'द'सु'द'ने' ।
रौ'ल'व'र' ह्ये'न' व' उ' य' ।
सु'गु' म'ह'स'द'द'व'र'व'र' ॥ १५०

इत्यादिशास्त्रमाहात्म्यदर्शनालम्बेनसां ।
अपभाषणवद्भाति न च सौभाग्यमुज्झति ॥१५१॥

ते'स'स'वी'स' व'ह'न'व'ते'स' व'द'ग'उ'द'के' ।
ह्र'ल' व'य'ल'व'दी' से'स'स'ह'न'व' ।
ह्र'उ'स'स' व'ने'न'दु' ह्र'न'म'ने' ग' ।
ह्र'ल'व'व'द' उ'द'ने' व'ने'न'स'य'ने' ॥ १५१

श्लोकेषु नियतस्थानं पदच्छेदं यतिं विदुः ।
तदपेतं यतिभ्रष्टं श्रवणोद्वेजनं यथा ॥१५२॥

རྩོམ་སྒྲིལ་བཅད་རྣམས་ལ་ ཇེས་བཤི་གནས།
 རྩོམ་གྱི་གཞུང་སྒྲིལ་སྒྲིལ་ ཇེས་བཤི་ རྩོམ།
 རྩོམ་སྒྲིལ་ གཞུང་སྒྲིལ་སྒྲིལ་ རྩོམ་སྒྲིལ་ རྩོམ།
 རྩོམ་སྒྲིལ་ རྩོམ་སྒྲིལ་ རྩོམ་སྒྲིལ་ རྩོམ་སྒྲིལ་ ॥ ༡༥

स्त्रीणां संगीतविधिमयमादित्यवंशो नरेन्द्रः
 पश्यत्यङ्घ्रिष्टरसमिह शिष्टैरमेत्यादि द्रष्टुं ।
 कार्याकार्याण्ययमविकलान्यागमेनैव पश्यन्
 वश्यामुर्वीं वहति नृप इत्यस्ति चोष प्रयोगः ॥१५३॥

རྩོམ་སྒྲིལ་ རྩོམ་སྒྲིལ་ རྩོམ་སྒྲིལ་ རྩོམ་སྒྲིལ་ རྩོམ་སྒྲིལ་
 རྩོམ་སྒྲིལ་ རྩོམ་སྒྲིལ་ རྩོམ་སྒྲིལ་ རྩོམ་སྒྲིལ་ རྩོམ་སྒྲིལ་
 རྩོམ་སྒྲིལ་ རྩོམ་སྒྲིལ་ རྩོམ་སྒྲིལ་ རྩོམ་སྒྲིལ་ རྩོམ་སྒྲིལ་
 རྩོམ་སྒྲིལ་ རྩོམ་སྒྲིལ་ རྩོམ་སྒྲིལ་ རྩོམ་སྒྲིལ་ རྩོམ་སྒྲིལ་
 རྩོམ་སྒྲིལ་ རྩོམ་སྒྲིལ་ རྩོམ་སྒྲིལ་ རྩོམ་སྒྲིལ་ རྩོམ་སྒྲིལ་

རྩོམ་སྒྲིལ་ རྩོམ་སྒྲིལ་ རྩོམ་སྒྲིལ་ རྩོམ་སྒྲིལ་
 རྩོམ་སྒྲིལ་ རྩོམ་སྒྲིལ་ རྩོམ་སྒྲིལ་ རྩོམ་སྒྲིལ་ ॥ ༡༥

लुप्ते पदान्ते [49b]शिष्टस्य पदत्वं निश्चितं यथा ।
तथा सन्धिविकारान्तं पदमेवेति वर्ण्यते ॥१५४॥

है'ङ्'र' कौ'म'स'र' श्रु'स'च'य ।
श्रु'म'स' कौ'ङ्'र'रु' र'स'च ।
र'च'र'र' स'क'स'स'र'र' क'स'र'र' स'स'र' ।
कौ'ङ्'र' र'स'र' स'र'र' ॥ १५५ ॥

तथापि कटु कर्णानां कवयो न प्रयुञ्जते ।
ध्वजिनी तस्य राक्षः केतूदस्तजलदेत्यदः ॥१५६॥

र'ङ्'र' य'र' क'स'र' रु'य ।
श्रु'र'र'र'र' क'स'र' स'र'र'र' ।
श्रु'र'र' र'य' श्रु'र'र'र'र' ।
र'र'र'र'र' क'र'र'र'र' र'स'र' र'र'र' ॥ १५७ ॥

वर्णानां न्यूनताधिक्ये गुरुलघ्वयथास्थितिः ।
यत्र तद्भिन्नवृत्तं स्यादेष दोषः सुनिन्दितः ॥१५८॥

གང་དུ་ ཡི་གེ་ཆད་ལྷག་དང་ །

ལྷ་ཡང་ ཇི་ལྷ་བཞིན་ མི་གནས་ །

དེ་ནི་ སྒྲེབ་སྒྲོར་ ཉམས་པ་ ལྟེ་ །

སྒྲོན་ འདི་ ལྷན་དུ་ སྒྲད་བའོ་ ॥ ११७

इन्दुपादाः शिशिराः स्पृशन्तीत्यूनवर्णता ।

सहकारस्य किसलयान्यार्द्राणीत्यधिकाक्षरम् ॥१५७॥

ལྷ་བའི་འོད་ཟེར་ བསིལ་བས་ །

རེག་ཅས་ ཡི་གེ་ ཉུང་བ་ཉིད་ །

ས་ཏྲ་ཀྲ་རའི་ལོ་འདབ་ གསར་བ་རྣམས་ །

སྒྲམ་ཞེས་ ཡི་གེ་ ལྷག་བའོ་ ॥ ११८

कामेन बाणा निशिता वियुक्ता मृगेश्वणास्त्रित्ययथागुह्यं ।

मदनबाणा निशिताः पतन्ति मृगेश्वणास्त्रित्ययथालघुत्वं ॥१५८॥

འདོད་བས་ མདའ་རྣམ་ རི་དགས་མིག་ཅན་ལ་ །

རྣམ་པར་འཕངས་ཞེས་ ལྷི་བ་ ཇི་བཞིན་མིན་ །

མཛེས་པའི་མིག་ཅན་ རག་ལ་ ཟློས་བྱེད་གྱི །
 མདའ་སྟུན་ ལྷུང་ ཞེས་ ཡང་བ་ཇི་བཞིན་མིན ། ༡༣༤

न संहितां विवक्षामीत्यसन्धानं पदेषु यत् ।
 तद्विसन्धीति निर्दिष्टं न प्रगृह्यादिहेतुकं ॥१५६॥

བསྟུས་པ་ བཛྲོད་པར་ མི་འདོད་ཅེས །
 ཚོག་ལ་ མཚམས་སྟོར་མེད་པ་ གང་ །
 ཡ་ཤུས་ ལ་སོགས་ རྒྱ་མེད་པ །
 དེ་ནི་ མཚམས་སྟོར་བྲལ་ ཞེས་ བསྟུན ། ༡༣༥

मन्दानिलेन चरता अङ्गनागण्डमण्डले ।
 लुप्तमुग्धेदि [50a]धर्माभ्यो नभस्यस्मन्मनस्यपि ॥१६०॥

མཁའ་ རང་ བདག་གི་ཡིད་ལ་ ཡང་ །
 ལྷུང་ནི་ དལ་བྱ་ རྒྱ་བ་ ཡིས །
 བྱད་མེད་ འགྲམ་པའི་ དགྱིལ་འཁོར་ལ །
 རལ་གྱི་ཚུ་རྒྱས་ མེལ་བར་བྱེད ། ༡༥༠

[मानेर्ष्ये इह शीर्यते स्त्रीणां हिममृतौ प्रिये ।]

आसु रात्रिष्विति प्राञ्चैरज्ञातं न्यङ्गमीदृशं ॥१६१॥

|

सकञ्चो नदिन् उषः नदिन् ॥

सामन्वयः कसन्वयः विमन्वये ॥ ७७

देशोऽद्रिवनराष्ट्रादिः कालो रात्रिन्दिवर्त्तवः ।

नृत्यगीतप्रभृतयः कला कामार्थसंश्रयाः ॥१६२॥

विमन्वयः पुनः नदिन् उषः नदिन् ॥

विमन्वयः पुनः नदिन् उषः नदिन् ॥

नदिन् उषः नदिन् ॥

नदिन् उषः नदिन् ॥ ७८

चराचराणां भूतानां प्रवृत्तिर्लोकसंज्ञिता ।

हेतुविद्यात्मको न्यायः सस्मृतिः श्रुतिरागमः ॥१६३॥

འབྲུང་པོ་ གྲུ་ ནང་ མི་གྲུ་བའི་ ।
 འཇུག་པ་ འཇིག་རྟེན་ མིང་ཅན་ནི།
 རིགས་པ་ གཏན་ཚིགས་ རིག་ བདག་ཉིད་ ।
 བློས་ བཅས་ གསུངས་པ་ ལུང་ ཉིད་དེ ॥ ༡༩༢

तेषु तेषु यथारूढं यदि किञ्चित्प्रवर्त्तते ।
 कवेः प्रमादाद्देशादिविरोधीत्येतदुच्यते ॥१६४॥

དེ་དེར་ ཇི་ལྟར་ གསུགས་པ་ བཞིན་ ।
 མིན་པར་ གལ་དེ་ རབ་བྱགས་ནི།
 ལྷན་ངག་མཁན་པོ་ བག་མེད་ ལས།
 འདི་ནི་ ཡུལ་ མོགས་ འགལ་ཞེས་ བཛོད་ ॥ ༡

कर्पूरपाद्मपास्पशीं सुरभिर्मलयानिलः ।
 कलिङ्गवनसंभूता मृगप्रायमतंगजा ॥१६५॥

ག་ཤུར་ ཀླང་འབྲུང་ལ་ རིག་པའི་ ।
 མ་ལ་ལ་ ལྷང་ རི་བཟང་ཅན།

ཀ་ལྷོ་ ཡི་ ཉགས་སྒྲིས་པའི།

སྒྲང་པོ་ དག་ནི་ རི་དགས་ མང་ ॥ ༡༤༡

चोलाः कालागुरुश्यामः कावेरीतीरभूमयः ।

इति देशविरोधिण्या वाचः प्रस्थानमीदृशम् ॥१६६॥

ཙོ་ལ་ཀུ་བོ་རི་ རོགས་སའི།

ཨ་ཀ་ཅུ་ ཉི་དག་པོ་ལྟོ།

ཞེས་པ་ ཡུལ་ དང་ འགལ་བ་ཡི།

ཆོག་གི་ འཇུག་པ་ འདི་འདྲ་ ལྟོ། ॥ ༡༤༢

पद्मिनी नक्तमुज्जिद्रा स्फुटत्यह्नि कुमुद्वती ।

मधुरत्फुल्लनिचुलो निदाघो[50b]मेघदुर्विनः ॥१६७॥

པདྨ་ཙན་ནི་ མཚན་མོ་ ལྷས།

ཉིན་པར་ ཀུ་སྒྲང་ལྷན་པ་ གསལ།

དབྱིད་ནི་ ཉི་ཙུ་ལ་ རབ་ལྷས།

སོས་ཀ་ དག་ནི་ སྒྲིན་ གྲིས་ གཏིབས་ ॥ ༡༤༣

ध्रुव्यहंसगिरो वर्षाः शरदामत्तवर्हिणी ।

हेमन्तो निर्मलादित्यः शिशिरः श्लाघ्यचन्दनः ॥१६८॥

ངང་པའི་ སྒྲ་ནི་ དབྱར་ མཉན་འོས། ।

སྟོན་ ནི་ མ་བྱ་སྟེན་པ་ སྟེ།

དབྱན་སྟོན་ ཉི་མ་ གི་མ་མེད། ।

དབྱན་ནི་ འཇུན་ བསྐྱུགས་པར་འོས། ॥ १६८

इति कालविरोधस्य दर्शिता गतिरीदृशी ।

मार्गः कलाविरोधस्य मनागुद्दिश्यते यथा ॥१६९॥

ཀྱིས་པ་ འདི་འདྲ་ ཏུས་ དང་ནི།

འགལ་བའི་ལྷགས་དག་ བསྟན་པ་ཡིན། ।

སྒྲ་ཙམ་ དག་ དང་ འགལ་བའི་ལམ། ।

ཅུང་ཟད་ བསྟན་པར་བྱ་སྟེ་ དཔེར། ॥ १६९

वीरशृङ्गारयोर्भावौ स्थायिनौ क्रोधविस्मयौ ।

पूर्णसप्तस्वरः सोयं भिन्नमार्गः प्रवर्तते ॥१७०॥

དཔལ་ རང་ སྒྲིག་པའི་ཡིད་བྱེད་ཀྱི།
 གནས་ཅན་ ཁྱོད་ ཡ་མཚན་ནོ།
 དབྱངས་ བདུན་ རྒྱུགས་པ་ འདི་དག་ནི།
 བ་དད་ ལམ་དུ་ རབ་དུ་འཇུག། ॥ १७०

इत्थं कलाचतुःषष्टौ विरोधः साधु नीयतां ।
 तस्याः कलापरिच्छेदे रूपमाविर्भविष्यति ॥१७१॥

འདི་ལྟར་ སྐྱུ་རྩལ་དུག་ཅུ་བཞིར།
 འགལ་བ་ ལྷགས་པར་ རྟགས་པར་བྱ།
 སྐྱུ་རྩལ་ ཡོངས་སུ་བཅད་པ་ལས།
 དེ་ཡི་རང་བཞིན་ གསལ་བར་འགྱུར། ॥ १११

आधृतकेशरो हस्ती तीक्ष्णशृंगस्तुरंगमः ।
 गुरुसारोयमेरण्डो निःसारः खदिरद्रुमः ॥१७२॥

སྤང་པོ་དག་ནི་ རལ་བ་ གཡོ།
 རྟ་ཡི་རྩ་ནི་ རྩོ་བ་ ཡིན།

ཨེ་རཏ་འདི་ ལྷིང་པོ་ ལྷི །

སང་མེང་ ལྷོན་པ་ ལྷིང་པོ་མེད ༥ ॥ २०१

इति लौकिक एवायं विरोधः सर्वगर्हितः ।

विरोधो हेतुविद्यासु न्यायाख्यासु निदर्श्यते ॥१७३॥

ཅས་པ་ འདི་ནི་ འཇིག་རྟེན་པ་ །

ཉིད་ དང་ འགལ་བ་ ཀུན་གྱིས་སྤྲད །

རིགས་པ་ ཞེས་བྱ་ གཏན་ཚིགས་ཀྱི །

རིག་པ་དང་འགལ་ བཤད་པར་བྱ ༥ ॥ २०२

सुगतैः संस्कृताभङ्गः सत्यमेवोदितोऽपिचेत् ।

तथापि सा चकोराक्षी स्थितैवाद्यापि मे हृदि ॥१७४॥

བདེ་གཤེགས་ འདུས་བྱས་ འཇིག་པར་ནི །

གསུངས་པ་ བདེན་མེད་ དེ་ལྟ་ནའང་ །

ཙ་ཀོ་ར་ཡི་མིག་ཅན་ དེ །

བདག་གི་ ལྷིང་ལ་ ད་དུང་ གནས ༥ ॥ २०ॢ

कापिलैरसदुद्धूतिः [5।a]स्थान एवोपवर्ण्यते
असतामेव दृश्यन्ते यस्मादस्माभिर्दुद्धूताः ॥१७५॥

सिद'सु'व' क्खस'सिद' क्खस'गु ।
सु'व' ग'खस'व' छिद'दु' वहेद ।
ते'सु'र' वद'ग'उग' क्खस'गु'स' के ।
सिद' क्खस' र'व'दु' सु'व' स'वेद' ॥ १७५ ॥

गतिन्यायविरोधस्य सैषा सर्वत्र दृश्यते ।
अथागमविरोधस्य प्रवेश उपदिश्यते ॥ ॥१७६॥

सि'ग'स'व'द'ग' द'द' र'ग'व'व'यि ।
सु'ग'स' र'दे' गु'द'दु'व'व'व'व' ।
दे'द'स' सु'द' द'द' र'ग'व'व'यि ।
र'द'ग'व'द'ग' के' व'व'व'व'व' ॥ १७६ ॥

अनाहिताग्नयोप्येते जातपुत्रा वितन्वते ।
विप्रा वैश्वानरीमिष्टिमह्निष्टाचारमूषणाः ॥१७७॥

མེན་གྱི་བཞག་པ་མ་ཡིན་ཡང་།
 བྱ་སྦྱིས་བྱ་མ་ཟེ་མ་ཉམས་པའི་
 སྦྱོང་པས་བརྒྱན་པ་འདི་དག་ནི།
 བོ་ཤུན་རྩི་མཚོད་སྦྱིན་བྱེད་॥ ༡༧༧

असावनुपनीतोपि वेदानधिजगे गुरोः ॥
 स्वभावशुद्धः स्फटिको न संस्कारमपेक्षते ॥१७८॥

འདི་ནི་ཚོག་མ་བྱས་ཀྱང་།
 ལྷ་མ་དག་ལས་རིག་བྱེད་བཟུགས།
 རང་བཞིན་དག་པའི་ཤེལ་དག་ནི།
 འདྲ་བྱེད་གཞན་ལ་ལྷོས་པ་མེད་॥ ༡༧༨

विरोधः सकलोप्येष कदाचित्कविकौशलात् ।
 उत्क्रम्य दोषगणानां गुणवैरिथिं विगाहते ॥१७९॥

ནི་མཐའ་དག་འདི་ལ་ཡང་།
 དེས་འགའ་སྟུན་ངག་མཁན་མཁས་པས་

སྒྲིན་གྱི་ བྲངས་ ལས་ རབ་འདས་ནས
ཡོན་དན་ ལས་ནི་ རྣམ་པར་འཛིན་ ॥ ༡༡༠

तस्य राज्ञः प्रभावेन तदुद्यानानि जज्ञिरे ।
आर्द्रांशुकप्रबालानामास्पदं सुरशाखिनां ॥१८०॥

ཀླུ་པོ་ དེ་ཡི་ མཐུ་ཡིས་ རི་ ।
དེ་ཡི་ སྒྲིན་ཚལ་ ལྷ་རྣམས་གྱི་ ।
སྒྲིན་པ་ ཡལ་འདབ་ གོས་སྐྱུམ་ དང་ ।
ལན་པ་དག་གི་ གནས་སུ་གྱར་ ॥ ༡༢༠

राज्ञां विनाशपिशुनश्चचार खरमारुतः ।
धुन्वन्कदम्बरजसा सह सप्तच्छदोद्गमान् ॥१८१॥

ཀླུ་པོ་ འཛིག་པ་ གསལ་བྱེད་པ་ ।
དག་པོ་ཡི་ རི་ རྒྱང་དག་གྱི་ ।
འདབ་ བདུན་ལས་ འཁྲུངས་ སྒྲིན་བྱེད་ཅིང་ ।
ཀ་དམུ་ཡི་ རྒྱལ་དང་ འབྲོགས་ ॥ ༡༤༠

दोलातिप्रेरणत्रस्त[51b]बधूजनमुखोद्गतं ।
कामिनां लयवैषम्याद्वेयं रागमवर्धयत् ॥१८२॥

- त्रिंशत् श्रिंशत् रचंश्रुत् श्रृणं च यी ।
श्रुंषं सुदंशेदं त्रसं वद्वेदं श्रु ।
श्रुवसं शिंश्रुसं चसं रद्वेदं श्रुंश्रु ।
श्रुणं च दंशं श्रिं रद्वेदं च रंश्रु ॥ १८३

ऐन्दवादच्चिषः कामी शिशिरं हव्यवाहनं ।
अबलाविरहद्वेशविह्वलो गणयत्ययं ॥१८३॥

- श्रुं वदं रद्वेदं चसं वसं च ।
वसंश्रुं रद्वेदं चसं रद्वेदं श्रुंश्रुं श्रिं ।
सुदंशेदं दंशं चसं श्रुंश्रुं चसं श्रिंश्रु ।
रद्वेदं चसं रद्वेदं चसं श्रुंश्रुं चसं श्रिंश्रु ॥ १८४

प्रमेथोप्यप्रमेथोसि सकलोप्यसि निष्कलः ।
एकस्त्वमप्यनेकोसि नमस्ते विश्वमूत्तये ॥१८४॥

གནལ་བྱ་ ཡན་ ཡང་ གནལ་བྱ་མིན།

ཆ་ལྷན་ཡིན་ ཡང་ ཆ་ལྷན་ མིན།

གཅིག་ཉིད་ཡིན་ ཡང་ གཅིག་ཉིད་མིན།

སྒྲ་ཆོགས་ གཞུགས་ བྱིད་ལ་ ཕྱག་འཆེལ། ॥ ༡༨=

पञ्चानां पाण्डुपुत्रानां पत्नी पाञ्चालकन्यका ।

सतीनामग्रणीश्चासीद्वैवो हि विधिरीदृशः ॥१८५॥

སྐྱ་བསེང་བྱ་ལྔ་ དག་ གི་ནི།

རྒྱང་མ་ ལྔ་ལེན་ བྱ་སྟེ་སྟེ།

དག་པ་ནས་སྒྱི་ མཆོག་ཏུ་ བྱུང་།

འདི་འདྲ་ ལྔ་ཡེ་ སྐྱ་བ་བྱེད་དོ། ॥ ༡༨=

शब्दार्थालंक्रियाश्चित्रा मार्गाः सुकरदुष्कराः ।

गुणा दोषाश्च काव्यानामिति संक्षिप्य दर्शिताः ॥१८६॥

སྒྲ་དོན་ རྒྱན་ རི་ བཀྲ་བ་ དང་།

བྱ་སྒྲ་ བྱ་དཀར་ དག་གི་ལས།

སྒྲིན་ངག་ནམས་ཀྱི་ ཡོན་ཏན་ སྒྲིན་ ।

དེ་ལྟར་ མདོར་བརྒྱས་ རབ་དུ་བསྒྲན་ ॥ ༡༥

व्युत्पन्नबुद्धिरमुना विधिदर्शितेन

मार्गेण दोषगुणयोर्वशवर्त्तिनीभिः ।

वाग्भिः कृताभिसरणो मद्दिरेक्षणाभि

र्थन्यो युवेव रमते लभते च कीर्त्तिम् ॥ १८७

སྒྲིབ་ཤེད་ བསྒྲན་བའི་ལམ་འདིས་ སྒྲིན་ དང་ ཡོན་ཏན་དག།

རབ་དུ་རྟོགས་བའི་རྫོ་ཅན་ སྐལ་བཟང་དབང་གྱུར་བའི་ ।

མོག་ དང་ མདོར་བར་འགྲོགས་བྱས་ རང་མིག་མ་ དག་དང་ ।

ལང་མོ་ཅན་ བཞིན་ དགའ་དང་ གྲགས་པ་ ཐོབ་བར་འགྱུར་ ॥ ༡༨

इत्याचार्यदण्डिनः कृतौ काव्यालंकारे दुष्करदोषविभागो नाम

तृतीयः परिच्छेदः समाप्तः ॥

ཞེས་པ་སྒྲིབ་དཔེར་དབྱག་པ་ཅན་གྱིས་ མཛད་པ་ སྒྲིན་ངག་གི་རྒྱན་ལས་

བྱ་དགའི་ནམ་པར་བཅད་པ་ ཟླེ་ ཡེའུ་ གསུམ་པ་ རྟོགས་སོ་ ॥

CORRIGENDA

Chap. I. 17^b *वर्णनैः for व*र्णनैः ; 27^o ཡ་ཤུ་སའི for ཡ་ཤུ་སའ་ ;
 39^a साम्या (?) for शाम्या in Tib. transliteration ; 85^d विद्यते for *सुम् ;
 86^b भवाद्दश for भवादृश ; 98^b स्तनुन्त्यो for स्तनत्यो.

Chap. II. 14^c དབེ for དབྱེ ; 37^b གཏོང for གཏང ; 40^o स्पर्श for
 स्पर्श ; 45^d मौस्य for मौस्य ; 66^b नखाचिषः for नखाचिषः ; 77^a इदमार्द्र for इद-
 माद्र ; 9^o नतिते for नतिते ; 86^a राजहंसो for राजहंसा ; 86^o बह्ना for बह्ना ;
 86^b སྒྲོད for སྒྲུད ; 91^b निर्दहति for निदहति and निर्दयं for निदयं ;
 125^a འིན་ཏུ for འིན་ཏ་ ; 142^b གཡ་ཏེ for གཡ་ཏ་ ; 182^b མན་སྒྲུ
 for མན་སྒྲུ ; 206^d सोयं for सायं ; 207^d རྩེད for རྩེད ; 233^b ཅུ་ཅུ་ for
 ཅུ་ཅུ་ ; 234^o *द्विष्टं for द्वष्टं ; 237^a विकार्ये for विकार्य ; 279^b སྒྲེལ for
 སྒྲེལ ; 282^o रमस्त्व for रसस्त्व ; 287^a གུར་བ for གུར་བ ; 306^b दशिता
 for दशिता ; 312^a དབེར་བཟོད for དབེར་བཟོད ; 313^b གསལ་བར་སྒྲོན for
 གསལ་བ་སྒྲོན.

Chap. III. 17^a བྱོད for བྱོད ; 19^o वर्यन्ते for वरयन्ते ; 13^d स्पृशेदशां
 for स्पृशेदशां ; 31^o རྩེད for རྩེད ; 39^o སྒྲུ for སྒྲུ ; 54^a वज्यः for वज्यः ;
 68^b རབ་ཏུ for རབ་ཏ་ ; 69^a གུར་བ for གུར་བ ; 80^o གུན་ཏུ for
 གུན་ཏ་ ; 83^d དབེ་ཏུ for དབེ་ཏ་ ; 158^o बाणा for बाण ; 184^a विश्वमूर्तये
 for विश्वमूर्तये ; 185^a पाण्डुपुत्राणां for पाण्डुपुत्राणां.

